अरेड़ः गामक लोक इतिहास

गाम हमरा सभकेँ अपन लोक इतिहास, परिवार, प्रकृति, संस्कृति सँ जोड़ैत अछि। गाम आजुक समयमे जखन मनुख डायस्पोरा बनल जा रहल अछि तखन बहुत जरुरी चीज अछि। सभ गामक अपन इतिहास, अपन विशेषता छैक। सभ विशेषता लोक कंठ सँ एक पीढ़ी सँ दोसर पीढ़ीमे हस्तांतरित होइत रहैत अछि। दुर्भाग्य सँ पलायन आ आधुनिकता केर कारण गाम सभक लोक इतिहास आब खत्म भेल जा रहल अछि। आब ई सभक कर्तव्य होइत अछि जे लोक अपन-अपन गामक इतिहास लिखथि। हम जखन अपन गाम 'अरेड़' पर काज करय लगलहुँ तँ भेल कतेक रोचक लोक इतिहास रहल छैक एहि गामक! एहि पोथीमे हमर गामक अनेक पक्ष पर बात लिखल छैक – किछु गामक आ किछु अपन। हम सेहो गामक छी ताहिं हमर बात गामक बात भेल। ई शुरुआत छैक एहि पर हमरा बहुत लिखक अछि – हमरे कियैक, गामक जतेक लोक जतेक प्रकरण, विवरण सभ लिखथि से एकटा उत्कृष्ट धरोहर बनत।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
ग्रामः अरेड़, जिलाः मधुबनी (बिहार)
संपर्कः बी–2/333, तारा नगर, ओल्ड पालम रोड, ककरोला,
सेक्टर 15, द्वारका, नई दिल्ली 110078
मोबाइल नंबरः 8076208498
ईमेलः kailashkmishra@gmail-com

एमएससी (मानव विज्ञान), एमए (मानवाधिकार), डिप्लोमा (पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन), सर्टिफिकेट (आर्ट एप्रिसिएशन), एम फिल (I-मानव विज्ञान), पी एच डी (सामाजिक मानव विज्ञान)

- रिसर्च एसोसिएटः साउथ साउथ सोलिडरिटी (कनाडा)
- रिसर्च इन्वेस्टिगेटरः पापुलेशन जेनेटिक्नेस एंड ह्यूमन डेवलपमेंट विभाग – नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर (स्वास्थ्य आ परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
- रिसर्च एसोसिएटः सोसाइटी फॉर हेल्थ एजुकेशन एंड लर्निंग पैकेज (HELP)
- रिसर्च ऑफिसरः इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दी आर्ट्स (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
- कंसलटेंटः READ INDIA (READ GLOBAL केर भारतीय संकल्प)

एकर अतिरिक्त यूनेस्को, यूएनडीपी, रीड ग्लोबल, रीड इंडिया, ललित कला अकादमी (भारत सरकार), मैथिली भोजपुरी अकादमी (दिल्ली सरकार) आदिक संग अनेक परियोजनामे शोध आ नीतिगत कार्य करनाक अनुभव, वर्ल्ड बैंक (IPP 8), गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी मे अध्यापन, आई पी एल एम, रीड कनेक्ट काउंसिल (सेक्शन 8 कंपनी) केर फाउंडर डायरेक्टर।

भारतीय आदिवासी, लोक, लोक जीवन, कला, मानवाधिकार, आदि पर कार्य, पूर्वोत्तर भारत केर कला संस्कृति आ जन जीवन पर गहन अध्ययन आ ओकर कोऑर्डिनेटर।

जन्मः 8 फरवरी 1967

PEN TO PRINT PUBLISHING LLP
Ground Floor, WZ-911/2, Shankarlal Street
Ring Road, Naraina, New Delhi 110 028
E-mail: pen2print.publishing@gmail.com
Mob.: +91-98680-29307 / +91-70119-49570

JOIN US ON OUR SOCIAL MEDIA PLATFORMS

MRP ₹199 (incl. of all taxes)
ISBN: 978-93-92877-52-0
9 789392 877520

अरेड़ गामक लोक इतिहास प्रथम भाग डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

अरेड़

गामक लोक इतिहास

प्रथम भाग

PEN TO PRINT PUBLISHING

अरेड़

गामक

लोक

इतिहास

अरेड़

गामक
लोक
इतिहास

प्रथम भाग

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

PEN TO PRINT PUBLISHING
New Delhi

Copyright © Kailash Kumar Mishra, 2025

First published, 2025

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publishers.

No responsibility for loss caused to any individual or organisation acting on or refraining from action as a result of the material in this publication can be accepted by Pen to Print Publishing or the Editors.

The publisher believes that the content of this book does not violate any existing copyright/intellectual property of others in any manner whatsoever. However, in case any source has not been duly attributed, the publisher may be notified in writing for necessary action.

ISBN: 978-93-92877-52-0
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1

Pen to Print Publishing LLP
WZ-911/2, Shankarlal Street, Ring Road
Naraina, New Delhi – 110028
E-mail: pen2print.publishing@gmail.com
Mob.: +91-98680-29307 / +91-70119-49570

Typeset & design by
Pen to Print Publishing, New Delhi

Printed and bound in New Delhi, India

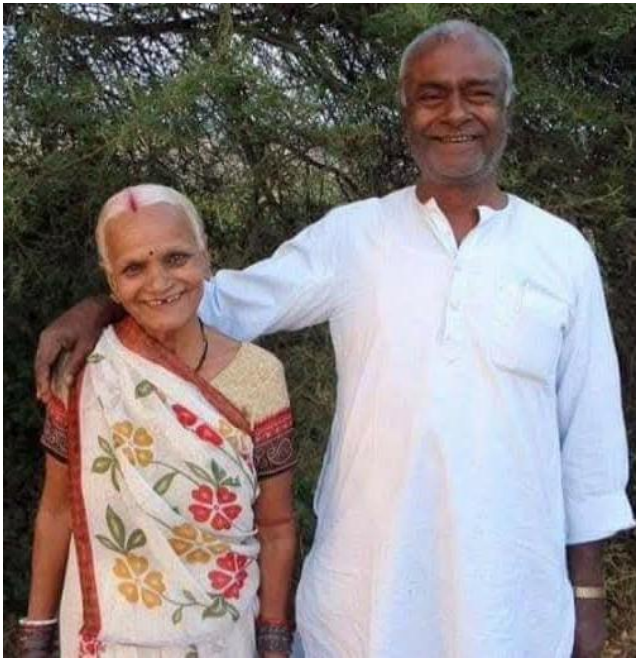

माता श्रीमती शिबदुलारी देवी आ
पिता श्री रामनन्दन मिश्रकेँ समर्पित

विषय-सूची

लेखकीय ix

प्रकाशकक संदेश xvii

1. अरेड़ गामक सामान्य परिचय 1

2. स्थान आ गामक नामक इतिहास, भूगोल आ भाव-भूगोल 14

3. मिथिलाक गाम अनेक समस्या आ इतिहास 27

4. बच्चा झा प्रथम: लोककंठमे व्याप्त इतिहास गाथा 33

5. बच्चा झा दोसर: अरेड़क मानवीय धरोहर 39

6. अरेड़क लोक इतिहास आ महादेव स्थान 48

7. कीर्तिपुरुष बुद्धिनाथ झा आ कीर्तिस्थल पुरवारी टोलक दुर्गास्थान 58

8. दुर्गामंदिर आ पंडित रत्तेलाल झा वैदिक 72

9. बाबा लक्ष्मण दास 79

10. सुदर्शन मिश्र बनाम सीताराम दास बनाम रामचन्द्र दास 86

11. रामानन्द साहू: एक विलक्षण स्वतंत्रता सेनानी 93

12. अरेड़रत्न युगपुरुष विश्वम्भर झा 97

13. यत्र जीव तत्र जाह: रघु बाबूक प्रसंग 103

14. एहन छलीह माय 107

15. लेटर बम 114

16. मायक अदम्य साहस 118

17. गाम समाज: गामक अस्मिता आ स्वरूपक निर्धारण – सभक योगदानक प्रजातन्त्र 123

धन्यवाद ज्ञापन 129

लेखकीय

हमर जीवन गतिशील रहल अछि। हमर माता पिता हम कोना पढ़ी ताहि लेल बहुत चिंतित रहैत छलनि आ हमरा अनेक गाम, शहरमे स्कूली शिक्षा लेल भेजलनि। अरेड़ गामक खोभिया मंदिर स्कूल, भटबाना (मिडिल स्कूल), बेसिक स्कूलमे सेहो बीच-बीचमे अबैत जाइत रहल रही। नानी गाम – मिश्रौलीक नजदीक सिमरी हाई स्कूल जतय हमर मामा स्वर्गीय परमानंद मिश्र प्रधानाध्यापक छलाह; भुसकौल केर प्राइमरी स्कूल, जीबछ घाट केर हाई स्कूल आ ताहि समय केर छोटानागपुर आ आजुक झारखंड केर अनेक स्थान – घाघरा, सेनहा, सिमडेगा, गिरिडीह धरि भेजलनि। हमर पिताकेँ हमरा पर बहुत विश्वास छलनि। खैर, हम गाम आ बाहर केर यात्रा करैत रहलहुँ पढबाक मादे। यद्यपि दिल्ली विश्वविद्यालयमे नामांकन भेलाक बाद हमर यात्रा जेना पूर्ण भऽ गेल। जखन-जखन हम गाम सँ बाहर रहलहुँ तखन-तखन हमरा गाम, गामक लोक, गामक परिवेश, मित्र, सम्बन्धी, माय, भाई, बहिन बहुत याद अबैत छल। गामक कचोट आ गामक महत्त्व गाम सँ बाहर अनुभव करैत रहलहुँ।

बादमे भारत सरकार – UNESCO-UNDP केर एक परियोजना "ग्राम्य भारत"मे काज करबाक अवसर भेटल। आरो अनेक परियोजना आ काजक मादे हम भारत केर अनेक राज्य केर गाम सभ पर काज करैत रहलहुँ। जखन कोनो गाम पर काज करी तँ पहिने अपन गाम याद अबैत छल। मिथिलामे बहुत स्थापित नीक गाम छैक मुदा ओकर नीक होबामे नीक होबाक दंतकथा अथवा फोकलोर केर भूमिका अधिक छैक। गामक एक व्यक्तित्व होइत छैक। व्यक्तित्व गामक लोक, परिवेश, लोकक इतिहास आ इतिहास केर दंतकथा सँ बनैत छैक। बाहर केर मुखर लोक अथवा ई कही जे मुँहगर लोक सभ अथवा मुँहगर लोकक गामक लोक सभ कोनो गाम केर नकारत्मक रूप सँ से स्थापित कऽ दैत छथि। इतिहास केर काल खंड केर एक-आध घटना कोनो गामकेँ गलत ढंग सँ प्रचार करैत छैक। अरेड़ सँग सेहो एहने सन बात भेल छैक। अनेक नीक गुण, ऐतिहासिक उपलब्धि, खेल,

शिक्षा, संस्कृति, बारहवर्ण केर समाजक उपस्थिति, आपसी सामंजस्य हेबाक बादो अरेड़ गामक चर्चा नहि भेल अछि।

हमर पिता, माता आ हमर पित्ती बहुत रास बात कहैत छलनि गामक आ गमक पूर्वज आ गामक डीही लोकनि केर सँबंधमे। हुनके लोकनि सँ ई ज्ञात भेल जे अंडी केर गाछी सँ भरल रहैत छल हमर गाम अरेड़। अंडी केर ढेर सँ बनल "अरेड़"। संस्कृत केर विद्वान एकरा "अरेरू" बना देलनि। जखन स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया केर ब्रांच बनलैक तँ एकर नाम "अनरेर" (ANRER) बना देलकैक। इहो नीके भेलैक। कहियो दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आयब तँ देखबैक जे हिंदी, उर्दू आ अंग्रेजीमे दिल्लीक अलग-अलग नाम छैक: दिल्ली (Dilli), "देहली" (Dehli) आ "देल्ही" (Delhi)। तहिना अरेड़क नाम मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे अलग-अलग छैक – "अरेड़" (ARER), "अरेरू" (ARERU) आ "अनरेर" (ANRER)।

बीचमे श्री हितनाथ झा अपन पैतृक गाम कोइलख केर लोकक इतिहास लघु-लघु प्रसँगक रुपमे फेसबुक पर लिखय लगलाह। हमरा हुनक ई प्रयास बहुत प्रभावित कएलक। हमरा भेल जे गामक बात, लोक इतिहास आ सँस्मरण लोकक भाषा मैथिलीमे लिखल जाय। हम किछु-किछु प्रसँग पर लिखनाइ शुरू कएल। लोक सभकेँ आ विशेष रूप सँ अरेड़ गामक लोक सभकेँ हमर प्रयास बहुत नीक लगलनि। हुनका लोकनि केर प्रोत्साहन सँ हम आरो उतेढ़ ताकय लगलहुँ। शोधक लोक आ एथनोग्राफी केर विद्यार्थी रहबाक अवश्य लाभ भेटल। अनेक परत खुजैत गेल। पता चलल जे अरेड़ गामक पहिल घर बनल डीह टोल पर। फेरो जेना-जेना जनसँख्या केर विस्तार होइत गेल लोक सभ अगल-बगलमे घर-द्वार बना रहय लगलाह। देखैत-देखैत अरेड़ चौदह टोलमे पसरि गेल। टोल सभक उपटोल सेहो बनैत रहलैक। परिसिमिन केर कारण अरेड़क पुरवारी टोलक एक अंग बेलौंजा गामक सीमामे चल गेल अछि आ ओकरा आब उत्तर बेलौंजा कहल जाइत छैक। मुदा संस्कृति, संस्कार आ इतिहासक नाते ई सभ एखनो अपनाकेँ अरेड़क अभिन्न अंग बुझैत छथि। ओहिमे अनेक घर तँ डीहीकेँ छनि। हम भाव-भूगोल केर सम्मान करैत सांस्कृतिक स्तर पर उत्तर बेलौंजाकेँ बृहतर अरेड़क (ग्रेटर अरेड़) अभिन्न अंग मनैत छी। अरेड़ केर इतिहास उत्तर बेलौंजाकेँ बिना असँभव अछि।

अरेड़ गाम दू पंचायत: अरेड़ दक्षिणी आ अरेड़ उत्तरी सँ संचालित होइत अछि। दुनू पंचायत मिलाकऽ जे चौदह टोल छैक से निम्लिखित छैक:

अरेड़ दक्षिण पंचायत –

1. अरेड़ डीह टोल
2. अरेड़ पुरवारी टोल
3. अरेड़ कोनहा टोल
4. अरेड़ हाट टोल
5. अरेड़ लक्ष्मीपुर टोल
6. अरेड़ सिनबारा टोल
7. अरेड़ बरही टोल
8. अरेड़ ब्रह्मोत्तरा टोल

अरेड़ उत्तरी पंचायत –

9. अरेड़ जमुआरी पछवारी टोल
10. अरेड़ जमुआरी पुरवारी टोल
11. अरेड़ बिचखाना टोल
12. अरेड़ बलहा टोल
13. अरेड़ बढ़ूलिया टोल
14. अरेड़ विष्णुपुर टोल

कहिये चुकल छी जे अरेड़क भाव-भूगोलमे उत्तरी बेलौंजा सदैव दृश्यमान रहैत अछि। ताहिं व्यक्ति आ संस्थागत वर्णनमे ओकर चर्च होइत रहत। जेना-जेना एहि पोथीक पन्ना उलटने जायब तहिना-तहिना अर्थ स्पष्ट भेल जाएत।

अरेड़मे बाढ़ि नहि अबैत छैक। धरती उपजाऊ छैक। लोक उद्यमी छलाह। सभ जाति आ वर्णमे सामजस्य छलैक। जखन रैयाम चीनी मिल चलैत छलैक ताहि समय ओकर ऑफिस अरेड़मे रहैक। आइयो ऑफिस केर भवन छैके मुदा ओहिमे आब ओतय थाना छैक। अरेड़ गाममे ब्राह्मण, क्षत्रिय, डोम, चमार, मुस्लमान

(कुजरा, धुनिया, चम्मा) तेली, मल्लाह, धानुख, यादव, लहेडी, मुसहर, कोइरी, कुरमी, कलवार, केवट, सुरी, नुनियार बनिया, हलबाई, धीमर, तुरहा, पटवा, धोबी, कायस्थ, लोहार, दुसाध, भूमिहार, अमात, मंडल, पासी आदि सभ प्रमुख जातिक लोक रहैत छथि।

अरेड़ गाममे भारतीय स्टेट बैंक केर शाखा, दू टा एटीएम, थाना, दू टा मिडिल स्कूल, एक हाई स्कूल, दू टा सँस्कृत महाविद्यालय, एक बेसिक स्कूल इत्यादि सुविधा उपलब्ध छैक। अरेड़ हाट बहुत व्यापक छैक आ सोना चांदी सँ लऽ कऽ, गैस स्टोर, बैंक्वेट हाल, आ सभ किछु उपलब्ध छैक।

गामक व्यक्तित्व गामक लोक केर कृतित्व आ व्यक्तित्व सँ बनैत छैक। व्यक्ति सँग प्रसँग बनैत छैक। प्रसँग सँग व्यक्ति विशेष केर व्यक्तित्व निखरैत छैक। अरेड़ सँग सेहो ई बात देखल जा सकैत अछि।

हम अपन अनुभव आ संकलन केर किछु भागक प्रथम खेपमे एहि पोथीमे लिखबाक यत्न केने छी। ई अरेड़क ज्ञान संपदा, लोक परंपरा केर बहुत लघु भाग अछि। एकर विस्तार होबाक चाही। आरो लोक सभ आगा आबथि आ लिखनाई शुरू करथि। हमर लेखनी एक शुरुआत थिक। अरेड़क अनेक व्यक्ति जेना:

1. बंगट मिश्र: ओहि इलाका केर नामी पहलमान, न्याय प्रिय लोक छलाह। अपन परिवार आ गच्छक लोकक मदति सँ एक पवित्र पोखरि, पोखरि केर भीड़ पर एक पैघ फुलवारी जाहिमे नाना तरहक फुल, आ अन्य गाछ वृक्ष सभ लागल छैक, पंचमुखी महादेव आ भगवती केर सुन्दर, भव्य आ कलात्मक मंदिर, एक दिशामे कुश्ती हेतु अखारा, चंपा, अरहुल, भालसरी, कदंब आ नाना तरहक गाछ सँ भरल दृश्य, पक्का घाट, व्यवस्थापन ई जे पोखरिमे कोनो माल-जाल केर प्रवेश वर्जित, जिनका स्नान करक क्रममे देह अथवा वस्त्रमे साबुनक प्रयोग करक छनि से बालटी सँ पानि बाहर आनि ओतय करथु। जाबेत धरि अपन नित्य कर्म करबाक स्थितिमे छलाह, प्रतिदिन खडरा सँ मंदिर केर प्रांगन आ समस्त फुलवारी केर साफ़ करैत छलाह।

2. राजभद्र झा: महान शिक्षक आ अंग्रेजी केर प्रकांड विद्वान, मैट्रिक पास नहि छलाह मुदा अंग्रेजी केर धुरंधर विद्वान छलाह।
3. नाथ: आशु कवि आ हास्य व्यंग्यमे अरेड़क तेनालीराम छलाह, अल्प वयसमे स्वर्गक डेग धऽ लेलनि। नाथक छोट-छोट हास्य कविता एखनो अरेड़क बुढ-पुरान लोक केर जिह्वा पर बैसल छनि। नाथक बालक सँ संपर्क कएल जा सकैत अछि, किछु बुजुर्ग सभ हुनक कवित्त याद रखने छथि, सभ एकत्रित क' एक पोथी हुनका पर बनि सकैत अछि।
4. पंडित सुरेश मिश्र: बहुत पैघ संस्कृत केर विद्वान आ तंत्र साधक छलाह, दुर्गा पोथी आ दुर्गा पूजा केर विधि स्वयं निर्धारित केलनि आ अपना दरबज्जा पर दुर्गाक प्रतिमा स्थापित कऽ दुर्गा पूजा प्रारम्भ केलनि। आइयो हुनकर दरबज्जा पर ओही पद्धति सँ दुर्गापूजा होइत अछि। पंडित सुरेश मिश्र विष्णुपुर टोल केर छलाह। हुनक बहुत बात सभ लोक कंठमे पसरल छनि। सभक संकलन आ ओकर प्रमाणिकता केर जांचक बाद हुनका पर गंभीरता सँ विस्तारपूर्वक लिखल जेबाक चाही। सौभाग्य सँ पंडित सुरेश मिश्रक पौत्र सभ एखन जीबैत छथि। हिनका सभ सँ विस्तृत जानकारी भेट सकैत अछि।
5. मार्कण्डेय भंडारी: सामाजिक सँदर्भक लोक छलाह। अरेड़ आ अगल-बगल केर गाममे सभ समाज, जाति आ वर्गक लोकमे हुनकर सम्मान छलनि, ओ पंचैती करैत छलाह, अनेको बेर मुखिया पदकेँ सुशोभित केलनि। हिनका संबंधमे जानकारी सहजता सँ उपलब्ध भऽ सकैत अछि।
6. रामचंद्र झा उर्फ़ राम बाबू: डीही छलाह। दिव्य पुरुष रहथि। मृत्यु सँ 20 वर्ष पहिने अन्न त्याग कऽ देने छलाह। केवल नाममात्र फल आ एक गिलास दूध पिब जीवन जीबैत छलाह। राम बाबू केर एक बालक एखन छथिन्ह। हुनका सं राम बाबू केर संबंधमे विस्तृत जानकारी, महत्वपूर्ण दस्तावेज, फोटो इत्यादि उपलब्ध भऽ सकैत अछि।
7. डॉ. कुमार चन्द्र झा: डॉ कुमार चन्द्र झा ओना तँ कोनो डिग्रीधारी डॉक्टर नहि छलाह मुदा अनुभव बहुत छलनि। RMP छलाह। अपन दबाई केर

दोकान आ प्रैक्टिस छलनि। परोपट्टामे नाम आ यश छलनि। हिनका पर विस्तार सँ लिखल जा सकैत अछि।

8. श्री अनिरुद्ध झा: अनिरुद्ध झा सामाजिक संदर्भक लोक छलाह। मुखिया सेहो छलाह. अपन भैयारीमे सामंजस्य रखैत छलाह। सामाजिक मर्यादा केर रक्षक छलाह। बाल बच्चा सभकेँ खूब पढ़ेला लिखेलाह।
9. श्री बबेलाल झा: बबेलाल झा जेठरैयत छलाह। हिनका पर विस्तार सँ लिखल जा सकैत अछि।

आरो अनेक नाम अनेक उदहारण लेल जा सकैत अछि। अरेड़ फूटबाल आ फुटबॉलमे अरेड़क उपलब्धि केर इतिहास पर एक बहुत मनोरम आ अनुपम पोथी लिखल जा सकैत अछि। यद्यपि हम स्वर्गीय विशम्भर झा पर अति सँक्षिप्तमे लिखने छी। हुनका पर प्रमाणित जानकरी सँग एक लघु पोथी लिखल जा सकैत अछि।

कहबाक तात्पर्य जे हम तँ अपन लघु ज्ञान, अर्थ सँ अरेड़ पर किछु लिखि एक परम्परा केर प्रारंभ कएल अछि। आरो लोक सभ आगू आबथु आ एहि परंपराकेँ आगू बढाबथु।

एहि पोथी केर साकार रूप देबामे बहुत लोकक भूमिका रहल अछि। हमर मित्र सभ तगेदा करैत रहैत छथि जे पोथी कहिया छापब? ई तकर उत्तर अछि। श्री ललित झा जे स्वयं अरेड़क (बृहतर अरेड़) छथि, महापंडित रत्नेलाल झाक सँतति छथि, एहि पोथी केर प्रकाशक छथि, एकर आवरण केर निर्माण केने छथि, हमरा दू वर्ष सँ तगेदा कऽ रहल छलाह जे अरेड़क पोथी छपक चाही। तकरे ई परिणाम अछि जे ई पोथी आई तैयार अछि। ललित हमरा सँ आयुमे छोट छथि ताहिं हिनका हम करेजक पोर-पोर सँ आशीर्वाद दैत छियनि।

श्री जीवकांत मिश्रक बारेमे जतेक लिखब से न्यून होयत। ओ एक एक डेग केर सहचर छथि, अभिभावक छथि, गाइड छथि, ई पोथी साकार रूपमे आबय तकर उत्प्रेरक छथि। हुनका प्रति आभार शब्द उचित नहि रहत, चरण स्पर्श मात्र लिख सकैत छी।

पंडित राघवेन्द्र झा, श्री राजेश कुमार झा, डॉ. राजेश कुमार झा, संजय कुमार झा आ आनो अनेक लोक अनेक तरहक जानकारी समय-समय पर दैत रहल छथि।

अंतमे हम अपन परिवारक सदस्य: पत्नी- पूनम, पुत्र- शशांक, ज्येष्ठ भ्राता- नारायण मिश्र, हमर दुनू जेठ बहिन- विद्या आ सरोज केर प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे सभ कियो अपना अपना ढंग सँ एही पोथीकेँ लिखबामे मदति केने छथि। मदति तँ अनेक मित्र सँ भेटल अछि। कतेक मित्र एहनो छथि जे एहि शर्त पर मदति केने छथि जे हम हुनक नाम केवल अपन हृदयमे राखी, कहियो कतहुँ हुनका बारेमे ने लिखी आ ने बाजी। सभक प्रति विनम्र कृतज्ञता व्यक्त करैत छी।

आशा अछि गामक प्रसंग पर जिनका जिज्ञासा छनि तिनका आ अरेड़ आ बृहतर अरेड़क लोककेँ हमर पोथी नीक लगतनि।

कैलाश कुमार मिश्र
नई दिल्ली

प्रकाशकक संदेश

सभ गामक अपन इतिहास आ अपन विशेषता होइत छैक। तहिना अरेड़ गामक विशेषता अनुपम छैक। ई बात अलग छैक जे अरेड़ गाम पर आई धरि कियो गंभीरता सँ काज नहि केने छथि। कोनो गामक लोक इतिहास आ अन्य विशेषता लोकक कंठसँ एक पीढ़ी सँ दोसर पीढ़ीमे हस्तांतरित होइत रहैत अछि। मुदा समय-समय पर बहुत रास बात छूटि जाइत छैक।

हमर समाजमे एक सँ बढ़िक एक महापुरुष भेलाह। बहुत नीक घटना घटित भेल। गाम अपन लोक गौरव सँ गौरवान्वित रहल अछि। जतेक महापुरुष अरेड़मे भेलाह, ओ सभ परिचयक मोहताज नहि छथि। तथापि आबय वाला पीढ़ीक जानकारी लेल ई बहुत आवश्यक छल। लेखक महोदय द्वारा एहि समस्त महापुरुषसभक संक्षिप्त जीवनी आ अनेक घटना एक जगह संकलित कऽ पुस्तकक रूपमे प्रस्तुत करब, आबय वाला पीढ़ीक लेल एक पैघ उपहार थीक।

ई एक विशेष संग्रह छी, जे जागरूक पाठक आ भविष्यक पीढ़ीक लेल प्रेरणास्रोत बनत।

हम लेखक श्री कैलाश भाई साहब बहुत-बहुत धन्यवाद करैत छी जे अरेड़ गामक इतिहासक पहिल श्रृंखला लिखलाह।

हम अपनाकेँ बहुत भाग्यशाली मानैत छी जे हमर जन्म एहि महापुरुषसभक गाममे भेल एवं एहि महापुरुष लोकनिमे सँ एक पंडित रत्तेलाल झा वैदिक के वंशज (परपौत्र) हेबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। ताहू सँ बेसी हम अपनाकेँ एतबे भाग्यशाली मानैत छी जे ई पोथी प्रकाशित करबाक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल।

– ललित झा

(*प्रकाशक एवं परपौत्र स्वर्गीय श्री पंडित रत्तेलाल झा 'वैदिक'*)

1

अरेड़ गामक सामान्य परिचय

अरेड़ गाम पर किछु लिखने छी हम। जे लिखने छी से उटक मुँहमे जीरक फोरन अछि। तथापि हर्ष एहि गप्पक अछि जे किछु शुरू तँ भेल। चलू अरेड़क संक्षिप्त जानकारी एक इसकुलिया नेना जकाँ प्राप्त करी।

अरेड़ शब्द अंडेर सँ बनल छैक। अंडेरक अर्थ भेल अंडी। लोक इतिहास केर मान्यता छैक जे अरेड़ गाम दने नेपाल धरि लोक रसद, इत्यादि संग कटही गाड़ी, आ जानवर केर पीठ पर बैसा कऽ लऽ जाइत छलैक। बहुत प्राचीन समयमे बुद्धिस्ट बज्रयानी भिक्षु सभ अथवा बौद्ध तांत्रिक सभक यात्रा केर मार्ग रहल छल। इहो सँभव छैक जे समस्त मगध क्षेत्र – गया, राजगीर, नालंदा – आ सारनाथ तक केर भिक्षु अरेड़ या अरेड़क अगल-बगल केर गामक दने नेपाल अबैत जाइत छलाह। यात्री, गाड़ीवान, आ भिक्षुक रातुक रस्ता चलब हेतु अंडी केर तेल लैत छल हेताह जाहि सँ डिबिया अथवा मसाल सँ इजोत उत्पन्न करैत छल हेताह। अरेड़ सही अर्थमे आदि काल सँ रामायण सर्किट, महाभारत सर्किट, शिव-शक्ति सर्किट, सूफी सर्किट आ बुद्धिस्ट सर्किट सँ सोझे जुड़ल छैक। एहि तरहें अरेड़ गामक लोकेशन प्रमाणित करैत अछि जे महाकवि कालिदास अरेड़क रस्ता दने उचैठ स्थान अथवा अन्य स्थान सँ उज्जैन जाइत-अबैत छल हेताह। टेक्स्ट एनालिसिस सँ ई बात आरो ठोस रूपमे प्रमाणित भऽ सकैत अछि। अंडी पर्याप्त मात्रामे होबाक कारण कदाचित एहि लेल होइत छलैक जे अरेड़ केर मुख्य भूमि उचगर रहैक। कहियो बाढ़ि केर खतरा नहि रहैक। अगल-बगल केर खेत पथारमे सभ तरहक अन्न, होइत रहैक। तरकारी केर खेती, पान केर खेती, कुसियार, तम्बाकू केर खेती सम्मिलित छलैक। एकरे परिणाम छलैक जे रैयाम चीनी मिल केर ऑफिस अरेड़ आ सकलन केंद्र अरेड़मे स्थापित कएल गेलैक। अरेड़ सँ कुसियार ट्राम पर लदा कऽ रैयाम मिल तक भेजल जाइत छलैक। अरेड़ आ अरेड़ केर अगल-बगल केर

गाममे कुजरा, कोइरी जाति केर उद्यमी परिवार सभ रहय लागल आ रंग-विरंगक तरकारी, तमाकू इत्यादि व्यापारिक स्तर पर उपजेनाइ शुरू केलनि। एकरे प्रभाव छल जे अरेड़ हाटक नाम एकटा स्थापित हाटक रूपमे भेल। स्वतंत्रताक पहिने सँ प्रारम्भ भेल पक्की सड़क, कमला नदी केर नहरि, बिजली, बेसिक स्कूल, दू टा संस्कृत विद्यालय (आजुक समय केर महाविद्यालय), पोस्ट ऑफिस इत्यादिक काज स्वतंत्रता प्राप्तिक किछुए वर्षमे पूर्ण भ गेल रहैक। साधू सँत केर समायोजन कुटी आ धर्मस्थानक मादे अरेड़मे रंग विरंगक आमक गाछी सेहो विशालकाय स्वरुपमे लगाएल गेल रहैक। सभ जाति, वर्गक, समूहक लोकके अरेड़मे रहबाक निमंत्रण भेटल। आपसी सौहार्द अतेक उत्तम जे एक अमात जिनका बेटा नहि छलनि आ ओ स्वयं कोतवाल केर काज करैत छलाह ओ अपन एकटा बेटी-जमायकेँ अपने लग बसा लेलाह। हुनकर जमायके पूरा गामक लोक, आर तँ आर समस्त ब्राह्मण समुदाय पाहून कहि संबोधित करैत छलनि। अरेड़ केर किछु मुसलमान कुजरा समुदाय केर लोक मधुर स्वरमे नचारी, महेशवानी, भजन इत्यादि गबैत छलाह। हमर नानी गामक एक कुजरनी केर विवाह रहैक नागदह। ओ मासमे दू-तीन दिन तरकारी बेचय लेल हमर घर आबि जाइत छलि। नाम रहैक रेशमा। दरबज्जा पर अबिते देरी हमर मायकेँ बजबैत छलनि: “कहाँ छही हे हमर गामक बहिनिया?” रेशमा केर स्वरमे गजब आभा, अपनत्व, सिनेह रहैक। हमर माय सेहो ओकर उपस्थिति सँ ओतबे प्रसन्न होइत छलीह जेना रेशमा हमर मायकेर अपन जेठ बहिने होनि। हमरा सभ भाई-बहिन लेल स्पष्ट निर्देश छल जे रेशमाकेँ केवल रेशमा कहि नहि सँबोधित करक छैक, ओकरा रेशमा मौसी कहक छैक। हम सभ माय केर निर्देश केर पालन ओहिना करैत रही जेना सेना केर पैघ अधिकारी केर कमांड ओकर अधीनस्थ कर्मचारी। अरेड़ गाममे अमात, यादव, धानुख जाति केर लोक भगता आ धामि केर भूमिका निभा रहल छल, हिन्दू सँत आ मुसलमान एक धुनी केर आगिसँ अपन-अपन चिलम पिबैत छल।

लोक इतिहास कहैत अछि जे ब्रम्हपुर गाम सँ दू नैमित्तिक ब्राह्मण जे काश्यप गोत्र आ सकलबार ब्रम्हपुर मूल केर छलाह, अरेड़ आबि, अतय केर अंडी केर जंगल साफ़ केलनि आ अपन डीह बनेलाह। ताहि हिसाबे अरेड़ डीह टोलक स्थापना

सर्वप्रथम भेल होयत। फेर जाहि स्थान पर ओ सभ निवास केलनि से डीह भेल। अपन निवास केर किछुए दुरी पर एक पोखरि खुना अपन ब्रम्ह केर स्थापना केलनि। ओ भेल ब्रह्मस्थान। ब्रम्हस्थान केर अर्थ भेल बीज पुरुष आ हुनक देवता केर मूल स्थान जतय सँ ओ सभ समस्त गामक लोकक रक्षा करैत छथि। वर्तमानमे ब्रह्मस्थान लग काली जी, हनुमान जी एवं अन्य देवताक भव्य मूर्ति मंदिरमे स्थापित अछि। बिगत तीस वर्ष सँ ब्रम्हस्थान पर भव्य कालीपूजा केर आयोजन होइत अछि।

अरेड़ गामक डीही अर्थात सकलबार ब्रम्हपुर मूल केर पितर सभ सही अर्थमे कीर्तिपुरुष छलाह। ओ सभ अनेक गामक उन्नत (तथाकथित) मूल, गोत्रक ब्राह्मण सँ अपन कन्या केर विवाह केलनि आ हुनका सभके गाममे भगिनमान बना बसेलनि। आब समय सँग जखन डीह केर जनसँख्या बढ़ल गेलैक तखन डीह केर चारु दिशामे गामक फैलाव अथवा विस्तार होमय लागल। अरेड़ हाट बनल। सकलबार ब्रम्हपुर मूल केर एक भैयारी पूब दिशामे घर बना ओतय रहनाई शुरू केलनि। पूर्व दिशा केर कारण ओहि बसाबटकेँ पुरवारी टोल कहल गेलैक। बादमे ओहो सभ अनेक जाति आ समुदाय केर लोक सभकेँ ओतय बसेलनि। हालमे परिसीमन केर चक्करमे पुरवारी टोलक एक क्षेत्र बेलौंजामे चल गेलैक। आब ओकरा उत्तर बेलौजा कहल जाइत छैक। मुदा आत्मिक रूप सँ आ भाव भूगोल सँ एखनो धरि ओ सभ ग्रेटर अरेड़क हिस्सा छथि। अरेड़क कोनो टोल केर लोक भोज-भातमे पुरवारी टोल केर निमंत्रण दैत छथि ताहिमे उत्तर बेलौजा स्वतः समाहित रहैत छैक।

अरेड़ केर एकता केर अपूर्व निशानी अछि पुरवारी टोल केर दुर्गामंदिर। एकर स्थापना केर श्रेय छनि कीर्ति पुरुष बुद्धिनाथ झाजीकेँ। बुद्धिनाथ झा सकिलबार ब्रह्मपुर मूलक भौरा झाक पुत्र छलाह। सकिलबार मूल होबाक कारण लोक हिनका लोकनिके सकराढी कहैत छनि। कहैत चली जे बाबा बुद्धिनाथ बाबू सदैव पूजा पाठ आ अनुष्ठान क्रियामे लागल रहैत छलाह ताहि कारण गामक स्त्री, पुरुष बाल-बच्चा सभ कियोक हुनका 'पूजा-बाबा' कहि सँबोधित करैत छलनि आ साक्षात बाबा बैद्यनाथक अवतार मनैत छलनि। बुद्धिनाथ झा लग 'लक्ष्मीनिया-बखारी' छलनि

जे अपना-आपमे एक चमत्कार रहैक आ एक हिसाबे कुबेर केर 'भंडार-घर' जकाँ रहैक जकर धान कखनो खाली नहि होइक। बुद्धिनाथ बाबू द्वारा स्थापना कएल अछि दुर्गा मंदिरक सम्पूर्ण कैम्पस आ एक गोट भव्य पोखरि । पोखरि आ दुर्गा मंदिर केर प्रांगणक निर्माण केर तुरंत बाद बाबा बुद्धिनाथ झा ग्रामीण लोकनिकेँ सुपुर्द कऽ देने छथिन जतय अखन तक पूजा पाठ चलि रहल अछि ।

अरेड़ गामक चर्चा बिना पहलमानीक वर्णन केर अपूर्ण अछि। एक भेलाह बच्चा झा। हुनका समयमे हुनकासँ पैघ पहलमान पूरा परोपट्टामे नहि छल। बुढ पुरान लोक हमरा कहैत छलाह जे बच्चा झा सात फीट केर छलाह। सोंटल देह रहनि। जखन ओ अखारा केर माटि देह पर लगबैत छलाह तँ हुनकर शरीर पांच गुणा विस्तार लऽ लैत छलनि। ओ अपना समय केर अजेय पहलमान छलाह। मिथिला, नेपाल, पंजाब आ आरो अनेक ठामक नामी पहलमान सभकेँ पराजित केलनि। एक बेर बच्चा झा सौराठ सभा गाछी गेल छलाह। एक अंग्रेज घोड़ा पर बैसल चुरुट पीब रहल छल आ घोड़े पर चढ़ल सभा गाछी घुमि रहल छल। बच्चा झाकेँ अंग्रेजक ई व्यवहार उचित नहि लगलनि। निवेदन कएलथिन: "हुजुर, ई पवित्र भूमि छैक। अतए चुरुट नहि पिबू। मानि जाऊ। निहोरा करैत छी।" मुदा अहंमे मातल अंग्रेज हिनकर निवेदन नहि मानैत चुरुट पिबैत रहल। तामस सँ उग्र होइत बच्चा झा एक ढेप उठा अंग्रेज केर देह पर फेक देलथिन। ढेप लगिते देरी अंग्रेज ओतहि मरि गेलैक। खैर! इ बात बहुत पैघ छैक। जाहि पर एहि पोथीमे विस्तार सँ लिखल गेल छैक। बच्चा झा केर एक विशाल गाछी छलनि जकर नाम अखारा-गाछी रहैक। बच्चा झाकेँ दरभंगा महाराज कहलथिन जे दरभंगा आबि ओतय रहथि आ पहलमान सभकेँ प्रशिक्षित करथि। मुदा बच्चा झाकेँ अपन गाम अरेड़ आ अपन अखारा गाछी बहुत प्रिय छलनि। ओ जखन कखनो दरभंगा महाराजकेँ जरुरत भेलनि तखन-तखन दरभंगा अवश्य गेलाह मुदा पूर्णकालिक रूप सँ अरेड़मे रहैत अपन अखारा गाछीमे अरेड़, जरैल, नागदह एवं अनेक अन्य गामक पहलमान सभकेँ प्रशिक्षित करैत रहला। अरेड़ डीह टोलक बंगट मिश्र पहलमान सेहो बहुत प्रसिद्द छलाह। हिनक मृत्यु 1984 केर आस-पास भेल छलनि। बंगट मिश्र जरैल केर लक्षमण झा पहलमान केर समकक्ष छलाह। बादमे

कटुल झा, ब्रम्हदेव झा (ब्रम्हू नामसँ ख्यात), वंशीधर मिश्र (वंशी पहलमान नामसँ ख्यात), मलाह जाति केर बौएलाल मुखिया, बौएलाल मुखिया केर पुत्र कारी मुखिया, लेटर मुखिया, अवध जी आदि पहलमानी विद्यामे प्रखर भेलाह।

अरेड़ हाट केर मुख्य चौक पर एक छलाह रामधनी साह। रामधनी साह केर बहुत पैघ आ प्रसिद्ध मिठाई केर दोकान छलनि। ओ दोकान अरेड़ आ चौपट्टामे प्रसिद्ध रहैक। आई सं 70 वर्ष पूर्व रामधनी साह केर पक्का मकान आब भव्य दोकान छलनि. दोकान केर चुरा दही चीनी आ जिलेबी अथवा पूरी जिलेबी केर नाम बहुत रहैक। रसगुल्ला, गुलाबजामुन, पेड़ा, बतासा, सेहो बहुत प्रसिद्द रहैक। रामधनी जी केर दोकान केर चाहक स्वाद एखनो गामक लोक सभ याद करैत छथि। एक चीज से सभ सँ अधिक बिकाई से रहैक सेव आ बुनिया। रामधनी विनम्र, गुणी आ कुशल व्यापारी छलाह। विक्री बहुत भेला सँ आर्थिक संपन्नता स्पष्ट देखा रहल छलनि। हुनका लग कतेक अर्थ छल हेतनि तकर अनुमान एक लोकोक्ति सँ लगा सकैत छी:

"रामधनी के कोन कमी
पैसा फाटे चीरा-चीरी।"

रामधनी साह केर दू बालक छलथिन: सुखदेब साह आ जगदेब साह। आब सुखदेव साह आ जगदेब साह केर पुत्र-पौत्र सभ अपन व्यवसाय सभमे लागल छथिन।

रामधनी साह केर सामने एक मुरही, कच, कचरी, घुघनी, झिल्ली इत्यादि केर दोकान छलनि बनारसी साह केर। ओहो दोकान बहुत प्रसिद्ध रहैक।

अरेड़क लोक मस्त, उद्यमी आ कृषि पेशामे दक्ष छलाह। पहिने लगभग सभक दरबज्जा पर एक जोड़ी बरद आ एक जोड़ी महिस अवश्य रहैत छलनि। दूध, दही, छाली आ घी केर कोनो कमी नहि। भोरे भोर गामक युवा सभ अखारा पर आबैत छलाह आ वर्जिस करैत छलाह। पचीस तीस वर्ष पूर्व धरि जुड़ी शीतल दिन सभ युवा पहलमानी आ आखेट करैत छलाह।

फुटबॉल केर खेलमे डेढ़ सए वर्ष सँ अरेड़ केर मोनोपॉली छल। अरेड़क टीम पटनाक टीमकेँ हरा चुकल अछि। कोलकाता केर मोहन बगान तक खेलने अछि।

गामक फुटबॉल खेलाड़ी सभक प्रतिभा सँ प्रभावित होइत अरेड़क 15 युवककेँ एक सँग एक दिन रैयाम चीनी मिलमे विभिन्न पद पर नौकरी भेटल छलनि।

नहुँ-नहुँ आधुनिक शिक्षा केर क्षेत्रमे सेहो अरेड़ आगा बढ़य लागल। अरेड़ डीह टोलक श्री राज किशोर मिश्र मेट्रिक केर परीक्षामे पूरा बिहारमे दसम स्थान पर आयल छलाह। सेहो अरेड़ हाई स्कूल सँ। किछुए वर्ष केर बाद ओमकारनाथ मिश्र जे अरेड़ पुरवारी टोलक राजकुमार मिश्रक दोसर सुपुत्र छलाह 1979 इसवी केर बिहार स्कूल एग्जामिनेशन बोर्ड केर मेट्रिक केर परीक्षामे पूरा बिहारमे सातम स्थान आनने छलाह। बादमे ओमकारनाथ मिश्र आई आई टी बी एच यू सँ इंजीनियरिंग केलनि, फेरो IES अर्थात इंडियन इंजीनियरिंग सर्विसेज केर प्रतिस्पर्धा परीक्षा उतीर्ण भेलाह। नौकरी करैत छलाह। यद्यपि दुर्भाग्यसँ बहुत अल्पायु अवस्थामे अकस्मात खत्म भऽ गेलाह। राजकुमार मिश्रक प्रथम बालक गणपति मिश्र सेहो बहुत प्रतिभाशाली विद्यार्थी छलथिन। ओ भूगोल विषय केर प्रसिद्ध विद्वान छलाह। विषय पर गहन शोध कऽ रहल छलाह। शिक्षा केर समाप्ति पर समस्तीपुर कॉलेजमे भूगोल बिभाग केर विभागाध्यक्ष पद पर काज करैत छलाह आ विद्यार्थी सभक बीच एक सुविज्ञ प्रोफ़ेसर केर रूपमे ख्यात छलाह। विवाह केर किछु वर्ष बाद हुनका एक लड़की जन्म लेलकनि तकर किछुए वर्षक बाद गणपति मिश्र एकाएक स्वर्गवासी भऽ गेलाह। अरेड़ विष्णुपुर टोल केर स्वर्गीय पंडित सुरेश मिश्र सरस्वतीक वरदपुत्र छलाह। हुनकर सरस्वती जाग्रत सरस्वती छलथिन। ओ अपना दरबज्जा पर दुर्गापूजा केर प्रारम्भ केलनि। बादमे ओहने परम्पराक प्रारंभ अरेड़ पुरवारी टोलमे भेल। जखन कालिदास महाविद्यालय उचैठ केर स्थापना भेलैक तँ अरेड़ केर प्रोफ़ेसर विष्णुकांत मिश्र रसायनशास्त्र केर, प्रोफ़ेसर लेखनाथ झा अंग्रेजी केर आ डॉ भैरव झा, अर्थशास्त्र केर प्रोफ़ेसर नियुक्त भेलाह। उत्तर बेलौजा केर डॉ चिरंजीव झा रहिका कॉलेजमे अर्थशास्त्र केर प्रोफ़ेसर छलाह।

लक्ष्मीकांत मिश्र नैमितिक ब्राह्मण छलाह। दुर्गामंदिर केर पुजारी केर भार अपन माताक आज्ञा पर स्वीकार केलनि। एक बेर जे स्वीकार केलाह तँ जीवनपर्यंत करैत रहलाह। चौसठ वर्ष पुजारीक भूमिका बिना कोनो रोक-टोकके

कएलनि। तकर बाद हुनक बालक श्री जीवकांत मिश्र सरकारी नौकरीमे रहैत एग्यारह वर्ष धरि पुजेगरी केर काज करैत रहलाह। जीवकांत जी बादमे एग्यारह वर्षक बाद पुजारी केर कार्य ग्रामीण सभक सहमतिसँ अपन पितयौत पंडित प्रेमकांत मिश्रकेँ दऽ देलथिन। पंडित प्रेमकांत मिश्र पचीस वर्षसँ एहि दायित्वक निर्वाह कऽ रहल छथि। पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र आ हुनक परिवारक सदस्य सभक दुर्गाजीक प्रति आस्था आ समर्पण हिनका परिवार लेल सरस्वती आ लक्ष्मी दुनूकेँ जेना घर घुसा देने होनि। जीवकांत मिश्र झारखंड राज्य केर सिंदरीमे PDIL सँ सीनियर इंजिनियरक पद पर कार्य करैत सेवानिवृत भेल छथि। ओतय जे जानकी मंदिर बनल अछि ताहिमे सेहो जीवकांत जीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल छनि। जीवकांत मिश्रक प्रथम बालक मनोज कुमार मिश्र आजाद सिपाही, रांची (झारखंड) केर संपादक छथि। दोसर बालक कुमार अभिलाष होटल मैनेजमेंट केलाक बाद DECCo, धनबाद (झारखंड) केर साईट इन्चार्जे छथि। तेसर बालक सुमन कुमार MCA केलाक बाद एखन अमेरिका केर नार्थ कैरोलिनामे स्थित कॉर्पोरेट Gilbarco मे कॉर्पोरेट जनरल मेनेजर केर पद पर छथि। जीवकांत जीक पुत्री अर्पणा झा पटना उच्च न्यायालयमे वकालत कऽ रहलि छथि। अतबे नहि, जीवकांत मिश्र केर प्रथम पौत्री डॉ. अनिशा छत्तीसगढ़ केर राजधानी रायपुरमे कार्यरत छथि, दोसर पौत्री आकांक्षा इंजीनियरिंग केलाक बाद गुरुग्राम केर FRACTAL कंपनीमे डेवलपमेंट इंजिनियर केर पद पर काज कऽ रहलि छथि। हिनक आर पौत्र सभ इंजीनियरिंग कऽ रहल छथिन तँ कियोक मेडिकल केर तैयारी कऽ रहल छथिन। किछु पौत्र आ पौत्री सभ छोट छथिन। कहबाक तात्पर्य जे भगवती आराधना, भगवतीमे निष्ठा हिनक परिवार लेल बहुत मंगलकारी रहल छनि।

प्रसंग दुर्गाघर आ नियमित पूजा, पुजारी, पुरोहित आ व्यवस्थापन केर भ' रहल अछि त इहो कहब उचित रहत जे जहि दिन सँ दुर्गास्थान पर नियमित पुजारीक व्यवस्था भेल, तहिया सँ स्वर्गीय श्रीलाल झा आ पुजारी स्वर्गीय श्री लक्ष्मीकांत मिश्रक सहयोग सँ दुर्गा पूजाक सम्पूर्ण व्यवस्था नियमित रूप सँ भऽ रहल अछि। एहि काजमे स्वर्गीय श्री गीताकांत झा सेहो सक्रिय सहयोग दैत

छलाह। स्वर्गीय श्रीलाल झा केर स्वर्गवासक उपरांत, हुनकर सुपुत्र स्वर्गीय श्री बिलट झा ई परंपराकेँ आगाँ बढ़ेलनि। हुनक देहावसानक पश्चात् हुनकर छोट पुत्र श्री देव नारायण झा (नारायण जी) गामक युवा वर्गक सहयोग सँ सम्पूर्ण दुर्गा पूजाक व्यवस्थाक देख-रेख कऽ रहल छथि। एहि तरहें गामक युवाक सहयोग सँ दुर्गा पूजाक परंपरा अखंड रूप सँ चलैत आबि रहल अछि। बर्तमानमे अरेड़ गामक माननीय मुखिया श्री जितेंद्र भंडारी, श्री मिथिलेश झा "बबलू" (समाज सेवी) तथा प्रसिद्ध मैथिली चलचित्र अभिनेता श्री विजय मिश्र आदि द्वारा सेहो एहि आयोजनमे सराहनीय सहयोग देल जा रहल अछि।

अरेड़मे गैस केर एजेंसी आबि गेल अछि। 2004-05 इसवीमे हमर ज्येष्ठ भ्राता श्री नारायण मिश्र एस्सार कंपनी केर पेट्रोल पंप केर एजेंसी लेने रहथि। जमीन केर भराई शुरू भऽ गेल रहैक। मुदा एकाएक सरकार केर प्राइवेट सेक्टर लेल कोनो निति केर कारण ओ पंप शुरू नहि भऽ सकलैक।

श्री मनीष आनंद (झा) जी मूलरूप सँ जरैल गामक निवासी छथि। हिनकर पिता भारतीय रिज़र्व बैंक केर उच्च अधिकारी छलथिन। मनीष जीक प्रारंभिक शिक्षा पटना सँ आ उच्च आ व्यवसायिक शिक्षा दिल्ली सँ भेल छनि। प्रारंभ सँ प्रबंधन केर विभिन्न क्षेत्रमे काज केने छथि। अनेक देशमे अनेक कॉर्पोरेट लेल काज केलाक बाद मनीष जी "बेक तो रूट" लेल चिंतित भेलाह। मखान केर काज वैश्विक स्तर सँ प्रारम्भ केलनि मिथिला मखान केर ब्रांड सँ। आब मिथिला नेचुरल नाम सँ बहुत तरहक स्थानीय भोज्य सम्बन्धी वस्तु पर काज कऽ रहल छथि। हिनकर सोच कंपनी आ स्थानीय युवा, किसान, स्किल्ड आ अन्य तरहक श्रमिक वर्ग लेल रोजगार केर जोगार ओतहिं करक छनि जतय ई सभ रहि रहल छथि। आई मनीष आनंद जीक विश्व केर मखान केर सभसँ पैघ प्रोसेसिंग यूनिट अरेड़मे लागल अछि। अतबे नहि हालहिंमे भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर भाई मोदी अपना संगे मनीष जीक प्रोसेसिंग यूनिट केर मखान मॉरीशस लऽ गेल छलाह। कहबामे हमरा कोनो सँकोच नहि अछि जे मनीष आनंद जीक मिथिला मखान आ मिथिला नेचुरल केर प्रोसेसिंग यूनिट होबाक कारण सेहो आई अरेड़क नाम चहुँ दिस पसरि रहल अछि।

अरेड़ गामक बम तँ आब वैश्विक नाम अछि। रुकू, बम केर अर्थ आलू, लहसुन, मिरचाई, चना इत्यादि केर गोल आकार दैत ओकरा फेरो शुद्ध सरिसबक तेलमे तरल भोज्य पदार्थ भेल। प्रतिदिन चारि घंटामे एक क्विंटल आलू केर बम बिका जाइत छैक अरेड़ चौक पर।

अरेड़ डीह टोलक नवका पोखरिक निवासी श्री शशिबोध मिश्र विज्ञान आ गणित केर एक कर्मठ शिक्षक रहल छथि। शशिबोध बाबू रहिका हाई स्कूलसँ प्रिंसिपलक पदसँ सेवानिवृत भेल छथि। ई एक शिक्षक केर रूपमे गाम, स्कूल आ परोपट्टामे प्रसिद्द छथि। शशिबोध बाबू गाममे हर्ख मास्टर साहेब नामे प्रसिद्ध छथि। हिनक शिष्य सभ बहुत उच्च पद पर स्थापित छथि।

अरेड़ डीह टोलक नवका पोखरि केर छलाह स्वर्गीय रामनंदन मिश्र। रामनंदन जी स्वर्गीय केशव मिश्रक छोट बालक छलाह। ई निर्धन किंतु मेधावी विद्यार्थी रहथि। हिनक मेधासँ प्रभावित होइत ताहि समय केर लोहा हाई स्कूल केर प्रधानाध्यापक रामकृष्ण झा बहुत प्रभावित भेलथिन आ अपन वेतन सँ किछु राशि हिनका अध्यन सामग्री एवं अन्य चीज लेल दैत रहथिन्ह। यद्यपि आर्थिक विपन्नता केर कारण रामनंदन मिश्र मैट्रिक सँ आगा नहि पढ़ि सकलाह आ खादी भंडारक नौकरी एक सर्वोदयी कार्यकर्त्ता केर रूपमे पकड़ि लेलनि। रामनंदन जी एक समान्य कार्यकर्त्ता सँ पूरा छोटानागपुर खादी ग्रामोद्योग संघ केर महालेखापाल भेलाह आ अंततः धनबाद जिला खादी ग्रामोद्योग संघ केर मंत्री (सेक्रेटरी) सेहो बनलाह। रामनंदन मिश्रक प्रथम बालक श्री नारायण मिश्र केर छोट बालक डॉ. प्रशांत कुमार मिश्र 'अरेड़ गामक सामान्य परिचय', मुंबईमे वैज्ञानिक छथि।

अरेड़ डीह टोलक डीही, मुख्य रूप सँ स्वर्गीय रामचन्द्र झा जिनका लोक रामबाबू केर नाम सँ जनैत छल, बहुत यसस्वी लोक छलाह। मृत्यु सँ 20 वर्ष पहिने ओ अन्न त्याग कs देने रहथि। केवल नाममात्र फल आ एक गिलास गायक दूध पीबिकs रहैत छलाह। ओ जाबत धरि जिलाह ताबत धरि गामक शीर्ष पुरुष बनल रहलनि। पूरा अरेड़ हुनका सम्मान करैत छल। 1962 इसवीमे अरेड़ पुरवारी टोल आ डीह टोल दुनू टोलक मध्य एक यज्ञ करबाक निर्णय लेलक। महंकार स्थान अर्थात दिवेश्वर नाथ मंदिरक प्रांगनकेँ मध्य मानि ओतहिं यज्ञ हेतैक तकर

निर्णय लेल गेलैक। ओहि यज्ञ समिति केर मुखिया छलाह पुरवारी टोल (अजुका उत्तर बेलौजा) केर अनिरुद्ध झा। जखन चंदा केर बात उठलैक तखन सभ कियोक निर्णय लेलनि जे प्रथम चंदा राशि रामबाबू सँ लेल जाय कारण वएह छथि श्रेष्ठ आ गामक डीही। लोक रामबाबू लग हुनक दरबज्जा पर पहुँचल। अपन उदेश्य बतबैत चंदा लेल निवेदन केलकनि। मुदा आशाक विपरीत रामबाबू चंदा देमयसँ मना कऽ देलथिन। सभ कियो निराश भऽ वापस आबि गेलाह। रामबाबू छोड़ि पूरा अरेड़ डीह टोल आ पुरवारी टोल केर लोक खूब चंदा देलथिन। आब भेलैक जे यज्ञ पर यजमान के बनताह? एहि बात पर अनिरुद्ध झा कहलथिन: “रामबाबू चंदा नहि देलनि ताहि सँ की, छथि तँ शीर्ष पुरुष आ डीही। वएह बनताह एहि यज्ञक यजमान।” आब एक प्रतिनिधि जकर मुखिया भेलाह अनिरुद्ध झा पुनः रामबाबू केर दरबज्जा पर पहुँच हुनका सँ यज्ञक यजमान बनबाक निवेदन केलखिन। शुरूमे मना केलाक बाद रामबाबू यजमान बनक लेल तैयार भऽ गेलाह। बादमे यज्ञक व्यवस्था सँ प्रभावित होइत रामबाबू यथेस्ट चंदा सेहो देलथिन। ई लघु घटना बतबैत अछि जे अरेड़ गाम कतेक मर्यादित आ अपन श्रेष्ठ जनक कतेक सम्मान करैत आबि रहल अछि।

बात फेरो कने विष्णुपुर टोलक कऽ लैत छी। विष्णुपुर केर लोक डॉक्टर, इंजिनियर, प्रोफ़ेसर इत्यादि रहल छथि। विष्णुपुर केर आदित्यनाथ झा इंदिरा गाँधी मुक्त विश्विद्यालय केर प्रो-वाईस चांसलर छलाह। जगधर झा शिक्षाविद छलाह। वो स्वयं डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर केर पद सँ बिहार सरकार केर शिक्षा विभाग सँ सेवानिवृत भेल छलाह।

कलानंद झा सेहो डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर सँ बिहार सरकार केर शिक्षा विभाग सँ सेवानिवृत भेल छलाह। कलानंद झा केर चारि बालक छथिन। सभ बालक नीक आ प्रतिष्ठित पद सँ सेवानिवृत भेल छथि। कन्हैया झा डॉक्टर छलाह आ अनेक मेडिकल कॉलेजमे प्रोफ़ेसर छलाह।

जगधर झा केर प्रथम बालक गोबिंद जी झा शिक्षा सँ इंजिनियर छथि आ आई काल्हि अमेरिकामे रहि रहल छथि। दोसर बालक केर नाम डॉ कलाधर नारायण झा छनि जे पहिने बिहार केर नेतरहाट स्कूल सँ मट्रिक परीक्षा पास केलाक बाद आर एम सी एच रांची सँ एम बी बी एस केलनि डॉक्टर भेलाह। आई काल्हि

लंदनमे रहैत छथि। तेसर बालक केर नाम डॉ मदन जी झा छनि। डॉ मदन जी झा मिथिला यूनिवर्सिटीमे वनस्पति विज्ञान केर प्रोफ़ेसर पद सँ सेवानिवृत्त भेल छथि। डॉ कन्हैया जी झा, डॉक्टर आ प्रोफ़ेसर (चिकित्सक) सँ सेवानिवृत भेल छथि।

विष्णुपुर टोल केर प्रोफ़ेसर राजेश झा एखन दिल्ली विश्वविद्यालय केर राजधानी कॉलेजमे राजनीति विज्ञान केर प्रोफ़ेसर छथि, दिल्ली विश्वविद्यालय केर टीचर एसोसिएशन केर सचिव रहि चुकल छथि। पूर्वमे नेतरहाट सँ स्कूली शिक्षा आ दिल्ली विश्वविद्यालय सँ उच्च शिक्षा प्राप्त केने छथि। डॉ. राजेश झा केर पुत्री एम् बी बी एस कऽ रहलि छथिन।

विष्णुपुर टोल केर दयाशंकर झांक बालक श्री नित्यानंद झा भारतीय पुलिस सेवाक परीक्षा पास केलाक बाद एखन आई पी एस ऑफिसर छथि।

चन्द्रकान्त मिश्र "खलीफा" सामाजिक संदर्भमे अत्यंत आदरक पात्र रहथि। हुनकर सम्मान आसपासक गाम धरि फैलल छल। हुनका भगवतीक विशेष कृपा प्राप्त छलनि। जखन ककरो साँप काटि लैत छलैक, तँ लोक हड़बड़ाइत हुनका लग आबैत छल। ओ अपन छाती पर हाथ राखि 'बिषहरा'कें गोहरबैत छलाह आ तुरत कहि दैत छलथिन जे बिष लागल अछि कि नहि। जँ बिष रहैत छलैक तँ ओ कहैत छलाह – "जाउ, दुर्गा स्थान पर लऽ आबू।" तकरबाद ओ मंत्रसहित अन्य क्रिया जेना कि चाटी आदि सँ इलाज करैत छलथिन। समय या परिस्थिति हुनकर सेवा भावना पर कखनहुँ प्रभाव नहि देलक – रातुक दू बजे हो वा जाड़ केर कँपैत राति या सावनक झमाझम बरसात हुनक सेवा नि:स्वार्थ छलनि। अतबे नहि, ओ पचास वर्ष सँ बेसी समय सँ बाबा बैद्यनाथ धाम कामर लऽ कऽ जामेदार (व्यवस्थापक) रूपें अपन जिम्मेदारी निष्ठा सँ निभाबैत गाम सँ पैदल बाबा बैद्यनाथ धाम तक जाइत छलाह ।

सम्पूर्ण डीहटोल एवं पुरवारी टोल मूल वंशज सकिलबार ब्रह्मपुर छथि। शेष जतेक छथि से ओही मूलक बसाओल गेल भगिनमान सभ छथि जे योग, स्रोत्रिय सभ छलाह। बिकौआ अर्थात भलमानुष कहबैत छथि। अपन प्रतिष्ठा बढवय हेतु नीक मूल/गोत्रक भगिनमान बसौने छथि।

रामचरण मोची, गरवा मोची, वतहू मोची, सोने लाल मोची इत्यादि अरेड़ गामक प्रसिद्ध रसनचौकी वादक भेल छथि। एखनो हिनका लोकनि केर परिवार केर किछु सदस्य एहि वाद्ययंत्र केर सम्मानित आ क्षेत्रक प्रतिष्ठित कलाकार केर रूपमे प्रसिद्ध छथि।

हरि लाल माझी/सदा (पहिने मुसहरक टाइटिल माझी छल बादमे सदा भय गेल) शास्त्रीय सँगीत केर निपुण ज्ञाता छथि।

अरेड़ गामक कलाकार राजा सलहेशक नाच आ अभिनय लेल सेहो विख्यात छथि। सभसँ नीक बात ई जे हिनका लोकनिकेँ ब्राह्मण वर्गसँ सेहो उत्तम सहयोग भेटैत आबि रहल छनि। श्री नथुनी मिश्रक देख रेखमे पूर्ण राजा सलहेश टीम छल अरेड़मे। युगेश्वर पासवान, सीताराम पासवान, कारी मोची, रामजी मोची, जुलूस मोची, राम विलास पासवान इत्यादि ओकर कलाकार छलाह।

अरेड़क एक व्यक्ति नर्तक, गवैया आ मिथिलांचलक रागक प्रबुद्ध छलाह । नाम छलैन्ह सरूप मोची। सरूप मोची जलेश्वर मोचीक जेठ बालक छलाह जिनकर वंशज एखनो परजूआरिमे रहैत छथि आ गान वजानमे निपुणताक परिचय दय रहलाह छथि। (कर्नाटक वंशिय मिथिला नरेश नान्यदेवक देन छल ओ 129 राग जनैत छलाह) जकर अनुकरणे भिखारी ठाकूर छलाह। सरूप मोची गवैयाक सँग नचैत सेहो छलाह जे अपना समयमे अनेक वेर पुरस्कृत भेल छलाह।

आल्हा-उद्ल (रुदल) गाथाक गान: आल्हा-रूदलक जीवनीक गाथा बहूत लोकप्रिय छल जे नट जातिक लोक अपनौने छलाह एवं गाम-गाम घुमि अपन मजदूरी/ईनाम लय गबैत छलाह। ढोलक पर थपकी दैत छलाह। वाल, बृद्ध सभ एक सँग बैसि आल्हा रूदल केर जीवनक वीर गाथा सुनैत छलाह। ओहि वीर गाथामे 52टा लडाई अछि जे अल्हा'-रूदलक वीर गाथामे अबैत अछि। सभ लडाई अर्थात प्रसँगक भौजी सभ नट नहि होइत छल परंच अरेड़ पुरवारी टोलक स्व नथुनी मिश्र, नीक किर्तनिया छलाह ओ आल्हा-रूदलक 52नो लडाईक गाथा नीक जकाँ ढोलक पर थपकी दैत कोनो नट लोकनि सँ नीक गबैत छलाह। ढोलक एवं हारमोनियाक नीक वादक छलाह, नीक किर्तन भजन सेहो करैत छलाह । गान वजानमे ततवा अभिरूचि छलैन्ह जे राजा सलहेश, योगी वृजभान नामक नाटक/नौटंकी'क निपुण टीम अपन टोलक रूचिवान चमार/दुसाध सभसँ करबाबैत रहैत छलाह।

अपना गामक बादो दोसर स्थान पर हुनक टीम साई पर एक कुशल नाटककारक रूपे जाइत छल परंतु अपने आन गाम नहि जाइत छलाह।

जखन काज करब तखन लागत जे अरेड़ गामक अनंत चीज छैक, खुबी छैक, गामक लोकक व्यक्तित्व छैक, कृतित्व छैक जे एकरा एक आदर्श गाम स्थापित करैत छैक। हम अनेक गामक बारेमे पढने छी आ सुनने छी जे कोना गामक लोक अपन-अपन गामक नाम, नाम सँ अधिक प्रचार आ लेखन केर माध्यम सँ लोककथा बना आ प्रमादक मादे जगजियार केने छथि। हमरा तिनका लोकनि सँ कोनो दोष आ राग नहि अछि। हमर प्रयास अतबे अछि जे हम सभ अरेड़क लोक आब उठी, जागी अपन गाम, समाज, पितृ लोकनि केर नीक काज आ यश केर बेर-बेर स्मरण करी। हुनका पर गर्वित अनुभव करी।

अरेड़ सामाजिक समरसता केर कतेक प्रबल गाम अछि तकर अंतिम उदहारण दऽ रहल छी। अरेड़ पुरवारी टोलक दुर्गामंदिरमे सभ दिन आरती होइत छैक। एक व्यवहार अतए स्थापना काल सँ आबि रहल छैक। जाहि दिन गामक कोनो समुदाय, जाति, लिंग अथवा वर्णक लोकक मृत्यु भऽ जाइत छैक ताहि दिन सांझक आरतीमे ढोल अथवा कोनो तरहक वाद्ययंत्र केर प्रयोग नहि होइत छैक। कोनो तरहक गीत-नादक गान नहि होइत छैक, कोनो प्रकार केर स्त्रोत इत्यादिक प्रयोग नहि होइत छैक। चुपचाप मौन भेल पुजारी आरती करैत छथि। एकरा मौन-आरती कहैत छैक। गामक लोक द्वारा भगवती केर साक्षी मनैत ई शोक सँवेदना छैक। एहन उदहारण हरसट्ठे सभ ठाम नहि भेटैत अछि!

अरेड़ केर सभ बात कहब अतेक सहज नहि छैक। मुदा कहब प्रारंभ करब जरुरी छैक। ई पोथी जे हम लिखने छी से प्रारंभक प्रक्रिया अछि। एक प्रसँग याद आबि रहल अछि महाभारत केर सम्बन्धमे। जखन पहिल बेर महाभारत केर निर्माण भेलैक तखन एहिमे 40 हजार श्लोक रहैक आ एकर नाम रहैक “जय”। बादमे ओहिमे बढ़ोतरी भेलैक आ श्लोक केर सँख्या 75 हजार भऽ गेलैक। आब एकर नाम जय सँ “भारत” भऽ गेलैक। एखनो श्लोक बढैत रहलैक आ जखन श्लोक केर सँख्या एक लाख भऽ गेलैक तँ भारतसँ एकर नाम भऽ गेलैक “महाभारत”। हमरा लगैत अछि तहिना लोक सभ अरेड़ पर विभिन्न प्रसँग प्रमाणिकता सँग लिखैत रहता आ अरेड़ गामक लिखित धरोहर पुष्ट भेल जायत।

2

स्थान आ गामक नामक इतिहास, भूगोल आ भाव-भूगोल

पुरातत्ववेत्ता लोकनि समस्त संसारमे इतिहासक पुनर्लेखन लोक इतिहास अथवा एथनो हिस्ट्री केर आधार पर कऽ रहल छथि। एथनो हिस्ट्री केर अनेक तहकेँ नीक सँ बुझबाक हेतु लोककेँ मूल तँ मानल जा रहल अछिये शोधक नजरि बहुविषयक सेहो भेल जा रहल अछि। बहु विषयक कहबाक तात्पर्य भेल जे अनेक विषयमे जे विद्वान आ शोधकर्मी लागल छथि से अपन-अपन मेथड, तकनीक, आ विशेषता सँ इतिहास लेखन आ ओकर एनालिसिस केर प्रक्रियाकेँ प्रामाणिक आ व्यापक बना रहल छथि। नहुँ -नहुँ एकर नीक परिणाम आबि रहल अछि। यद्यपि अपना आपकेँ सुच्चा अथवा खाँटी साहित्यक श्रेणीमे राखय बला लोक आ शौकिया भाषानुरागी कनि एहि बात सँ सहज नहि छथि। मुदा हुनका सँ एकर दिशा गतिहीन कखनो नहि भऽ सकैत अछि। उनटे वएह सब कात करोट भेल जा रहल छथि। अजंता गेल रही आ ओकर ग़ुफ़ा, मूर्तिकला, आ आर्किटेक्चर (स्थापत्य कला अथवा वास्तु-कला) पर काज करय बला एक शोधकर्ता समूह आ हुनक गाइड सँ बात भेल। अनेक तरहक बात। ई सभ सेहो अजंतामे आब नव रूप सँ एथनो हिस्ट्रीक शोध प्रविधिक उपयोग कऽ रहल छथि। ओतय केर चित्रकला आ किछु मूर्तिकला पर जे नाना तरहक रंगक प्रयोग कलाकार सभ केने छलाह ताहि पर ई सब एथनो पुरातत्त्व विधाक सहयोग सँ एखन धरि ई प्रमाणित करय मे लगभग सफल भऽ गेल छथि जे रंग बनेबाक आ ओकर मूल वस्तु लोक बाहर सँ नहि लबैत छलाह बल्कि अगल-बगल सँ जुगाड़ करैत छलाह। एखनो अजिंठ गाम (जाहि गामक नाम पर एहि स्थानक नाम अजंता राखल गेल) मे लोक कलाकार सभ दक्क्न केर पठारमे सहजता सँ उपलब्ध रंग-विरंगक पाथरकेँ पानिक संग घसि ओहिमे जड़ी-बूटी आ घास-पातक रस मिला रंग बनबैत छथि जे बहुत दिन धरि अपन स्वभाव

नहि छोड़ैत अछि। हमरा लगैत अछि जे मिथिलाक गामक नामकरण पर एथनो हिस्ट्री केर माध्यम सँ बृहत् काज हएबाक चाही। ई लघु आलेख लोककेँ अपन लोक इतिहास दिस उत्प्रेरित करबाक़ उदेश्य सँ लिखल गेल अछि। भऽ सकैत अछि जे आलेख आद्योपान्त पढ़लाक बाद अहाँ अपन गामक एथनो हिस्ट्री जनबाक लेल तत्पर भऽ उठी। अगर से भेल तँ हम ई बुझब जे हमर प्रयास सार्थक रहल।

आलेखक प्रारम्भ एक विदुषिक लघु जिज्ञासा जे दीर्घ बहस केर जन्म दैत अछि, सँ भेल। जिज्ञासा छल: "अंधरा-ठाढ़ी गामक नाममे अंधरा शब्द आंध्र सँ सम्बंधित अछि की?"

एहि सबालकेँ बहुत हल्लुक आ गंभीर प्रतिक्रिया एनाई शुरू भऽ गेल। किछु लोक बहकल जबाब देलनि तँ गंभीर लोक ओकरा सम्हारैत ठीक केलनि। इतिहासकार सँ साहित्यकार सब जुटि गेलनि।

अंतिम निष्कर्ष ई भेल जे चूँकि राजानृग (आन्हर) केर राजधानी छलै ठाढी तैं नामकरण एहन भेल (डॉ. उषाकिरण खान)। एहि बातकेँ स्पष्टीकरण दैत इशनाथ झा लिखैत छथि: "पंडित वाचस्पति मिश्र नृग नामक राजाकेँ अपन आश्रयदाता कहैत छथि जे दशम शताब्दीमे आंध्रप्रदेश सँ सेना सहित आबि एतय राज्य स्थापित केने छलाह आ नाम छल: आंध्रस्थली। सातवाहन राजाकेँ पुराणमे आन्ध्र भृत्य कहल गेल छनि। तहिना आन्ध्रस्थली। वाचस्पति राजपंडित छलाह। कालक्रमे अपभ्रंश भेल अन्हराठाढ़ी। जखन दू टोलमे विभक्त भेल अन्हरा आ ठाढ़ी!"

हालांकि अन्हरा-ठाढ़ी केर नामक अनेक तर्क आ अनेक मत अछि। निष्कर्ष पर पहुँचब अतेक आसान नहि। एक मतक इहो मानब छैक जे जतय ई गाम अछि ओतय मुग़लक शासन केर समयमे ओकर सिपाही सब एकटा गामकेँ घेरि लेलक आ बलपूर्वक गामक लोककेँ विधर्मी बनबै चाहैत छल आ सभक सम्पति लुटय चाहैत छल। ओहि गामक सभ लोक गायत्री उपासक नैमित्तिक ब्राह्मण छलथि। ओ गायत्री स्तंभन कय सब सिपाही सभकेँ दैविक शक्ति सँ आन्हर कय सब गोटे ओतय सँ पलायन कऽ गेलनि। तैं अन्हरा ठाढ़ी।

एहि तर्क आ नाना तर्क सँ हम बहुत प्रसन्न छी। अगर एक गामक नामक पाछा अतेक घमर्थन भऽ सकैत अछि तँ मिथिलाक अनेक गामक नामक जखन छिलका छोड़ायेब तँ कल्पना करु कतेक पैघ विषय अपना सभ लग शोध हेतु आ ओहि पर शास्त्रार्थ लेल प्रामाणिक आंकड़ा आ दस्तावेजक रूपमे रहत? एहि वार्तालापकेँ पण्डित भवेश झा थोड़ेक आगु बढ़बैत कहैत छथि, “अन्धराठाढीक निकट एकटा गाम अछि – पस्टन नवटोली। 2016 मे अंधराठाढी सँ ताराक एक मूर्ति भेटल जेकर तीन पाँतीक शिलालेखक अन्तिम अस्पष्ट पंक्तिमे प्रवर्त[नपु]रराज्ये सुधाविहा[रे] भगवते दत्तः ई हमर पढल अछि। सम्भव थिक जे पस्टनमे जे सम्प्रति बौद्धविहारक अवशेष मुसहरनियाँ डीह अछि, जेकरा पुरात्त्व विभागक रिपोर्टमे 9-10 शतीक मानल गेल अछि, ओ सुधाविहार छल होएत। आ राज्यक नाम प्रवर्तनपुर छल होएत।”

हमरा भेल, अहि पर बहुत किछु करबाक जरुरत अछि। कनि-मनि अपन जिज्ञासा आ विषयक ज्ञानक कारण हमरो भेल जे किछु लिखी। गाम अथवा शहर केर जतेक नीक इतिहास ततेक नीक ओकर नामक इतिहास। नामक इतिहास बहुत अर्थमे स्थानक इतिहास सँ पैघ आ गूढ चीज़ होइत छैक। अंग्रेज सब जखन भारत केर जनगणनाक प्रारंभ केलक तँ ओकरा संगे विभिन्न तरहक जाति, कला, आदिक संग गामक एवं स्थानक नाम आ नामकरण केर इतिहास, किम्बदन्ति, फोकलोर, आ ओकर तथ्य पर सेहो काज शुरू केलक। एहि परंपराकेँ बादमे बहुत प्रश्रय नहि देल गेल। यद्यपि किछु मानवशास्त्र, भूगोलक विद्वान व्यक्तिगत रूपेँ लागल रहलनि। राँची विश्विद्यालयक मानवशास्त्र केर विद्वान प्रोफेसर ललिता प्रसाद विद्यार्थी भारत केर किछु शहरक नामकरण पर एक पोथी लिखलाह। गया शहर केर नामकरण, एकर महत्व आ पवित्र पर एक पोथी लिखलनि “Sacred Complex of Hindu Gaya”। Anthropological Survey of India केर पूर्व निदेशक आ शान्तिनिकेतन केर कुलाचार्य प्रोफेसर सुरजीत सिन्हा अपन एक टीम बना ओहिमे प्रोफेसर बैद्यनाथ सरस्वती, प्रोफेसर महापात्रा, प्रोफेसर G. S. Negi आदिकेँ सहायता सँ बनारस केर नामकरण, बनारस केर घाट, पंडित, सन्यासी आ विधबा पर बहुत नीक काज केलनि। बनारस हिंदू विश्विद्यालय केर भूगोल शास्त्रक

विद्वान प्रोफेसर राणा पी बी सिंह आ राँची विश्वविद्यालय केर प्रोफ़ेसर माखन झा सेहो एहि तरहक काज केलनि। माखन झा केर काज जनकपुर पर ठीक ठाक छनि।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक मानवशास्त्रक विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विजय शंकर सहाय (आब सेवानिवृत्त) सेहो एहि विषय पर नीक काज कऽ रहल छथि। गँगानाथ झा संस्कृत शोध संस्थान इलाहाबाद केर निदेशक प्रोफेसर गया चरण त्रिपाठी जगन्नाथ पुरीक मंदिरक प्रांगण, पूजा पद्धति, आदिवासी आ ब्राह्मण (सबरा आदिवासी आ ओड़िया ब्राह्मण) केर बीच शेयर्ड फोकलोर, पूजा पद्धति, कला, आदि पर बहुत सूक्ष्म काज केने छथि। हुनकर पोथी, “Communication with Gods” एक आश्चर्यजनक काज अछि।

प्रोफ़ेसर नागस्वामी, “बृहदेश्वर केर मंदिर प्रांगण” पर, किछु विद्वान वृन्दावन केर प्रसिद्ध मंदिर “गोविन्ददेव” जकर निर्माण मानसिंह द्वारा करायल गेल छल पर काज केने छथि।

श्रीवत्स गोस्वामी (बृन्दावन शोध संस्थान) ब्रजप्रकल्प, 56 भोग आ समस्त ब्रज महिमा पर अभूतपूर्व काज कऽ रहल छथि। अहि तरहक अनेक काज अछि जे भूगोल सँ आगा बढ़ि भाव-भूगोल दिस चर्च करैत अछि।

भारतीय गाम आ शहरक नामकरणमे महाभारत आ रामायणक बहुत नीक भूमिका भेटत। कुरुक्षेत्र, करनाल, इंद्रप्रस्थ, गुरुग्राम (गुरगांव), अंग, गंधार (कंधार), आदि महाभारत सँ संबंधित नाम अछि। उज्जैन लग एक जगह छैक नागदा। कहल जाइत छैक परीक्षितकेँ साँप कटला बाद अर्जुन सभ साँपकेँ एक ठाम एकत्रित कऽ जरा देलथिन। नाग दहलैक तांहि नागदा भेलैक।

तहिना रामायण सँ अयोध्या, लंका, मिथिला, जनकपुरी, सीतामढ़ी, आ ने जानि की की स्थान व्याप्त अछि। तुलसीदास केर समय वाराणसीमे रामायणमे वर्णित प्रदेश आ क्षेत्रक नाम पर जगहक नाम राखल गेलैक। मिथिलाम अनेक गाम आ स्थानकेँ नाम रामायण सँ लेल गेल अछि। एहि पर चर्च थोड़ेक काल बाद।

बृन्दावन सँ बरसानेक बीच एक गाम छैक "संकेत"। संकेतकेँ राधा केर नैहर मानल जाइत छैक।

बृन्दावनमे यमुना नदीक कछेड़मे एक घाट छैक – केसि घाट। कहल जाइत छैक जे कृष्णक एक केसि नामक घोड़ा छलनि। घोड़ा स्वामिभक्तिमे सर्वश्रेष्ट आ भक्तिपरायण सेहो। ओकरे नाम सँ ई घाट विख्यात छैक। केसि अहि ठाम अपन प्राण त्याग केलक। भगवान कृष्ण कहलथिन जे अगर कियोक एहि घाटमे स्नान करत तँ ओकरा निश्चित रूप सँ बैकुण्ठमे स्थान प्राप्त हेतैक।

एकरा अलावे अनेक चीज़ पर नामकरण होईत छैक। मध्य प्रदेशमे एक जगह छैक "मंदसौर"। एक समयमे ई बहुत पैघ व्यवसायिक शहर छलैक। एकाएक व्यवसायमे मंदी आबि गेलैक। भेलैक जे सूर्य आब जेना रुसि रहलथिन आ मंद भऽ गेलथिन। लोक आब एहि स्थानकेँ छोड़ि आन ठाम पलायन करऽ लागल। मंदी सँ एकर नाम मंदसौर भऽ गेलैक।

रांचीक अगल-बगलमे अदौ सँ लौह अयस्क भेटैत छैक। ओतै केर आदिवासी रौट (wrought iron) के निकालबाक आ व्यवहारक कलामे माहिर छल। मुंडा जनजाति केर भाषामे लौह अयस्ककेँ अर्चि कहल जाइत छैक जे बादमे राँची भँ गेलैक।

झारखण्ड केर सिमडेगा सँ थोड़ेक दूर एक गर्म झरना छैक। जतय पाथर केर चूल्हा बनल छैक। एकरा बारेमे एहेन मान्यता छैक जे वनवासक समय सीता जी अतै रुकल छलिह आ भोजन बनबैत छलिह। एकरा "रामरेखा धाम" कहल जाइत छैक। एहनो मान्यता छैक जे बानर दलमे ओरांव आदिवासी सेहो छल। ओ सब रामकेँ बहुत प्यार सँ "ओ राम, ओ राम" कहैत छल बादमे ओकर नाम ओराम भऽ गेलैक जे आई अपभ्रंष भऽ "ओरांव" भऽ गेल छैक।

जोधपुरक बागलमे मंडोवर नामक एक बहुत पैघ प्राचीन नगर छलैक। बिखरल खंडहर, प्रस्तर अवशेष एहि बातक साक्षी छैक। अगर स्थानीय लोकक बातक विश्वास करी तँ 24 कोसमे ई नगर व्याप्त छल। कतेक महल उल्टा लटकल जकाँ लागत। अगर ध्यान सँ देखब तँ ऐना बुझना जैत जेना कियोक पूरा के पूरा नगरकेँ उलटा लटका देने होइक। पहिने प्रवेशमे बुझा जैत जे जरूर बहुत रहस्य सँ भरल नगर छल हैत ई खँडहर। पूरा खण्डहर जेना बहुत पैघ रहस्य अपना गर्तमे नुका कऽ रखने हो? लोक मान्यताक अनुसार सात हज़ार पाँच सै वर्ष पूर्व रावण

अही स्थान पर आबि मंदोदरी सँ विवाह केलनि। मन्दोदरीकेँ स्थानीय लोक मंदोधरी कहैत छनि। हिनक पिताक नाम छलनि मंदूजी। ओही नाम सँ एहि स्थानक नाम मंडोवर पड़लैक। एकटा 10 खंभा केर चँवर छैक जकरा लोक रावण आ मंदोदरी केर विवाह मंडप केर वेदी कहैत छैक। अगर कोनो ज्ञानी स्थानीय गाइड संग जैब तँ ऐना बुझना जैत जेना रावण आ मंदोदरीक विवाहक मण्डपमे घुसल छी!

राजा उदय प्रताप सिंहक नाम सँ उदयपुर; जय सिंहक नाम सँ जयपुर बनल अछि। राजस्थानमे एक राजा छलाह - महाराजा बिक्रम सिंह। हुनका लोक प्यार सँ बिका कहैत छलनि। बिक्रम केर एक प्रिय भील गड़ेरिया – नेरा – छलनि। बचपनक मीत सेहो। एक बेर बीकाकेँ विपत्ति एलनि। राज पाट किछु दिन लेल हाथ सँ चलि गेलनि। घनघोर जंगलमे नुकायल रहलनि। ओहि समयमे नेरा हुनकर सब तरहेँ मदति केलकनि। बादमे बिकाक दिन घुरलनि। एक पैघ शहर अपन राजधानी लेल बनेलनि। ओहि शहरक नाम अपन नाम आ नेराक नाम सँ मिला कऽ रखलनि - बीकानेर। दुनू अमर भऽ गेलाह।

चंडी देवीक नाम पर चंडीगढ़; श्यामला देवीक नाम पर शिमला; नैना देवीक नाम पर नैनिताल केर नाम पड़ल अछि।

कन्नड़ भाषामे उडु केर अर्थ घर होईत छैक। अतै बँग्लादेवीक नाम पर बंगलुरू; माँगलादेवीक नाम पर मंगलुरू बनल अछि।

आब मिथिला दिस आबी। मिथिलामे अनेक गामक नाम रामायण पर अछि।

प्रारंभ सौराठ सँ करैत छी। सौराठ मिथिलाक धरोहर-गाम अछि। केतेको सालसँ चलैत सभा हेतु ऐ गाम आ सभा-गाछीकेँ के नहि जनैत अछि? कहल जाइत अछि जे सौराठक मूल नाम 'सौराष्ट्र' छल। सौराष्ट्रक अर्थ भेल 100 राष्ट्र। लोक कथाकेँ जँ मानी तँ सौराठ रामायण (हमरा हिसाबे सीतायण) सँ जुड़ल स्थान अछि। कहल जाइत अछि जे सीताक स्वयंवर सौराठमे भेल छल। ओइ स्वयंवरमे 100 राष्ट्रक राजकुमार भाग लेने छलाह तँए एकर नाम 'सौराष्ट्र' भेल जे बादमे अपभ्रंशित भऽ 'सौराठ' भेल। ऐ बातकेँ थोड़ेक आरो ठोस आधार देबाक लेल चली लोक मान्यता दिस। कहल ईहो जाइत अछि जे सीता-स्वयंवरमे, बिआहमे सात

लाख लोक आएल छलाह। ओतेक मनुख रहत केतए? तँए ऐ लेल एकटा पैघ स्थानक निर्माण कएल गेल जे सभ सुविधा सँ युक्त होइ। ओ स्थान आब 'सतलखा' नामक गामसँ विख्यात अछि। सतलखा सौराठ सँ सटले अछि। मात्र तीन किलोमीटरक अन्तर छै। सतलखा रहिका बेनीपट्टी राजकीय मार्ग पर अवस्थित अछि आ रहिका आ अरेड़ दू गामक बीच अबैत अछि। सतलखाक लोक अपन शिक्षा, संस्कार आ कुशल व्यवहार लेल विख्यात छथि। यात्री/नागार्जुनक मातृक अही गाम छनि। ओ अपन प्रारम्भिक जीवन आ शिक्षाक बहुत क्षण सतलखामे बितेने छलाह। आब दोसर उदहारण, भगवान शिवक धनुष जेतए राखल गेल छल ओ स्थान आब 'धनुखी' नाओं सँ जानल जाइत अछि अर्थात धनुखी गाम। राजा जनकक छोट भाए छलखिन कनक। कनक ऋषि छलाह। ओ अपन आश्रम बनौने छलाह। ओइ स्थानपर आब 'कनैल गाम' बसल अछि। सीता प्रति दिन भोरे अपन संगी-बहिनपाक संग निष्ठा संग उल्लसित मोन सँ 'मंगलबनी' नामक फुलबाड़ी सँ फूल लोढ़ै छलीह। मंगलबनी आब अपभ्रंशित भऽ 'मंगरौनी' बनि चुकल अछि आ मधुबनीक बगलेमे ई गाम अछि। भऽ सकैत अछि जे सौराठक यएह दन्त-कथा ऐ गामकेँ 'सभा गाछी' लेल योग्य बनेने हुअए?

विद्यापतिक पौत्र बादमे सौराठमे आबि कऽ बसि गेला। ओ सभ अखनो छैथ। सौराठ अपना-आपमे रामायण, भगवान शिवक तंत्र आ राजा सलहेसक आख्यानसँ जुड़ल अछि। सौराठ हिन्दू आ मुसलमानक बीच आपसी सम्बन्धक अद्भुत उदाहण सेहो अछि।

गुजरातमे जे 'सौराष्ट्र' अछि जेतुक्का सोमनाथ मन्दिर विश्व प्रसिद्ध अछि आ द्वादस ज्योतिर्लिंगमे एक लिंग अछि, जेहो लोकधारामे मिथिलाक सौराठसँ जुड़ल अछि।

सौराठकेँ लोक सौराष्ट्र केर अपभ्रंश मनैत छथि। कहल जैत अछि जे सौराठक दू ब्राह्मण कुमार केर ज्ञान आ शिवक भक्ति सँ प्रभावित भऽ सौराष्ट्रक सोमनाथ महादेव स्वप्नमे राजाकेँ निर्देश देलथिन जे हिनका लोकनिकेँ मंदिर केर मुख्य पुजारी घोषित कैल जाय। सैह भेल। जखन १०२५ ईस्वीमे गजनी लूटेरा सोमनाथ पर आक्रमण केलक तँ एक दिन पहिने शिव दुनू ब्राह्मण कुमारकेँ स्वप्नमे आबि

लिंग केर एक भाग लय चुपचाप मिथिला चलबाक निर्देश देलथिन। हुनकर आज्ञा मानैत दुनू ब्राह्मण – गंगदत्त आ भागिरथदत्त – अपन गाम आबि गेलाह। बादमे एहि गामक नाम सौराठ भऽ गेल।

महाभारत केर युद्धक समयमे मिथिलामे विराट नामक एकटा प्रतापी शासक छलाह। आजुक दरिभंगा जिला केर बरांटपुर आर सहरसा जिलाक बरांटपुर दुनू एहि राजाक विराटक राजधानी कहल जाइयै। इहो बतबैत चली जे सहरसा केर बरांटपुर सँ साबिकक वस्तु पुरातात्विक उत्खनन सँ सेहो भेटल अछि जाहिमे मध्य युगक एक शिलालेख सम्मिलित अछि। नेपाल (मधेश) क्षेत्रमे सेहो एकटा विराटनगर अछि। नेपालक विराटनगर कोनो झाँपल नाम नहि अछि। सभ गोटे एकरा जनैत छी। मिथिला स्थित विराटनगरमे पाण्डव श्रेस्ठ युधिष्ठिर राजा विराट ओतय बहुत दिन धरि अज्ञात वासमे गुप्त रूपेँ रहल छलाह। कहल जाइछ जे वराटपुर आर कीचगढ़ प्रान्त सहरसा जिलाक धर्मपुर परगनामे छल आ पच पडरिया ग्राममे पाण्डव लोकनि अपन माता कुंती सङ्गे अज्ञातवास गुप्त रुपे बितौने छलनि।

तहिना वैदिक समय केर एक पैघ ऋषि उत्तिष्ठ एक सिद्धपीठमे तपस्या करैत छलनि। हुनकर नाम पर उत्तिष्ठ पीठ बनल जे बादमे अपभ्रंशमे उचैठ भऽ गेल।

जखन बज्रयान केर समयमे बौद्ध भिक्षु सभ नेपाल दने भारतमे (मिथिला) मे प्रवेश केलक तँ कतेक तंत्र क्षेत्र बनल। धामि, भगता आदिक प्रभाव भेलैक। एक पूरा धामि केर पट्टी बनल जकरा आई काल्हि धमियापट्टी कहल जाइत अछि।

एक एहेन गाम जे धनगर खेत सँ भरल छल। पर्याप्त मात्रा में नदी कर जल उपलब्ध छलैक। भूसाक ढेरी देख एकर नाम भुसकौल पड़ि गेलैक। भुसकौल दरभंगा तरसराय केर बीच ककरघाटी रेलवे स्टेशन लग एक सुव्यस्थ गाम अछि।

युद्धक समय एक ठाम रथक पहिया अर्थात "रथिका" बनैत छल जकर प्रयोग युद्ध भूमिमे होईत छलैक। रथिका बादमे अपभ्रंस बनि "रहिका" भऽ गेल।

एक गाम अछि "भीठ भगवानपुर"। एहि गामक नाम भीठ भगवानपुर कोना पड़लैक ताहि केर पाछा गामक बूढ-पुराण सभ एक तथ्यपूर्ण आ रोचक बात करैत छथि जे ऐतिहासिक सेहो बुझना जाइत छैक। इतिहास आ लोक इतिहासकेँ जेना

संगम भऽ गेल हो! कहल जायत अछि जे इलाकामे सबस उँच्च स्थान पर अवस्थित रहला कारणे पुर्वमे अहि गामक नाम “भीठ” छल जे जमीन सँ खुदल लक्ष्मीनारायणक मुर्ति पर अंकित शिलालेख “इति मल्लदेवस्य राज्ञ: भीठ” सँ सेहो प्रमाणित होइछ ! इहो कहल जायत अछि जे मल्लदेव 1200 वीं ई. मे कलिंग (संयुक्त बिहार, बंगाल आ उड़ीसा वर्तमानमे बिहार, पश्चिम बंगाल, बंगलादेश आ उड़ीसा) केर राजा छलाह आ हुनक राजधानी रहैन्ह “भीठ”। जखन भगवान सिंह धरौल परगनाक राजा भेलाह तँ ओ अप्पन नाम जोड़ि देलैन्हि आ गामक नाम “भीठ भगवानपुर” पड़ल जे अखनो धरि चलि आबि रहल अछि। “पुर” वैह राजधानी वा स्थानकेँ कहल जाइछ जे चारू कात सँ चहारदिबारी सँ घेरल होइक। अहि वास्ते राजा भगवान सिंह अकरा चहारदिबारी सँ घेरबौने सेहो छलाह मुदा अकर सबुत प्रत्यक्ष रूपें विद्यमान नहि अछि। भुगर्ववेता, भारत सरकार केर सर्वेक अनुसार गामक मंदिर सँ राजाक गढ़ धरि जमीन केर भितर चहारदिबारी अछि जे बिच गाममे रहलाक कारणे खोदल नहि जा सकल अछि।

अहिना एक गाम अछि नागदह। नागदह डॉ शुभद्र झा केर गाम अछि। एहि गामकेँ नागदह होबाक एक आश्चर्यजनक दंतकथा छैक। मान्यता छैक जे कहियों एहि गाममे एक महिला गर्भवती भेलीह। जौं-जौं हुनकर प्रसवक समय नजदिक भेलनि तौं-तौं हुनकर शरीर स्याह भेल गेलनि। जखन बच्चा भेलनि तँ मनुखक बच्चा केर बदला एकटा नाग जन्म लेलकनि। जन्म लैत नाग खेत आ जंगल-झाड़ दिस भागि गेल। ई महिला आब ठीक भऽ गेलीह। बादमे हुनका दू पुत्र जन्म लेलकनि। जखन बेटा पैघ भेलनि तँ दुनू भाई अपन जमीन आ सम्पति केर बटबारा करऽ लगलनि। दू टा ढेर बनायल गेल। मुदा ढेर अपने मोने 3 भऽ जैक। पंच सभ परेशान। बादमे हुनकर माय कहलथिन: “देखू, अहाँक एक भाई नाग छथि। तांहि तेसर कुड़ी हुनकर बनि रहल अछि। अहाँ सब हुनकर आराधना करु।”

मायक बात मानि दुनू भाई हाथ जोड़ि नागक आराधना केलथि। नाग आबि तेसर कुड़ीमे बैस रहल। बहुत दिनक बाद ओ नाग मरि गेल। नागकेँ मनुख जकाँ अग्नि संस्कार कैल गेल आ ओहि स्थानकेँ पवित्र मानि गामक निर्माण कैल गेल। तांहि एहि गामक नाम परल नागदह।

कपिलेश्वर केर बारेमे कहल जाइत अछि जे कपिल मूनि एहि लिंगक स्थापना अपने हाथें केलनि। कपिलक ईश्वर ताहिं कपिलेश्वर।

गाम अथवा एकर अगल-बगलमे किछु अवशेष -मूर्त अथवा अमूर्त - अवश्य रहि जाइत छैक जे ओहि गाम अथवा इलाका केर इतिहासक कोनो विशेष कालखण्ड अथवा घटना, अथवा उन्नति-अवनति, शोषण-दोहन केर साक्षी होईत छैक। अपन मिथिलामे एक फकड़ा अछि, "पानि ड़ेंगाएब"। एकर सामान्य अर्थ होईत अछि निरर्थक काज करब। एकरा पर अगर ऐतिहासिक स्तर पर शोध करब तँ पता चलत जे एकर संबंध नील (मैथिली मे लील) केर धंधा सँ अछि। साक्ष्य कहैत अछि जे मिथिलामे सेहो चम्पारण जकाँ नीलक खेती होईत छल।

इसहपुर गाममे पंडित गोविन्द झाक कथनानुसार हिनका घर सँ करीब दू सए डेग पूब एक खेत लिलबरिआ कहबैए। नाम कहैए जे कहिओ ई लीलक बाड़ी छल। इतिहास कहैए जे करीब दू सए वर्ष पूर्व एतए पानि डेडाओल जाइत छल। पण्डित गोविंद झा अपन नेनपन स्मरण करैत कहैत छथि: "गामक बूढा लोकनि सँ सुनने छी जे ओहि ठाम एक टूटल-फूटल कुंड रहए जाहिमे लीलक गाछ गोरल जाए आ कोठीबाला गोरा सभ किसान सभकेँ पकडि-पकड़ि ओहि कुंडमे पानि डेङबाबए। चोट खाइत-खाइत ओ पानि नील रंग भए जाए।"

लोक इतिहासक ई मूर्त आ अमूर्त प्रमाण लीलक खेती अहि क्षेत्रमे होईत छल तकरा प्रमाणित करैत अछि संगहि कोना किसान आ जनसामान्यकेँ गोरा सब शोषण करैत छल। पण्डित गोविन्द झाक मानब छनि जे "पानि डेंगाएब" लोकोक्ति एही सँ बनलै। जेना सऽन (जूट) केर पानिमे गोरि कऽ डेँगाओल जाइ छै तहिना नीलकेँ सेहो होइ छलैक।

नवानी गाममे लीलबड़िया डीह अखनो अछि जकर कातमे पोखरि अछि। अहि सँ ई प्रमाणित होईत अछि जे लील केर खेती मिथिलाक बहुत गाममे होईत छल।

इसहपुर सँ अढ़ाए कोस पच्छिम नबहथ गाम अछि। एतए लीलक खेती समाप्त भेलापर अङरेज बहादुर कुसिआरक मिल बैसाओल तँ गामक नाम नबहथ सँ लवहठ होइत लोहट भए गेल। पहिने ई नबहथ कोठी कहबैत छल। कोठी माने लीलक कारखाना। एतए सँ कोसेक उत्तर पंडौल कोठी छल जे आइ पंडौल बजार

कहबैत अछि। ई एक समय दुनिआँ भरिमे लीलक सभ सँ पैघ मंडी छल। अर्चिअवल प्रमाण कहैत अछि जे 1876 ई.मे मात्र छओ मासमे 41 लाख 45 हजार 400 रुपयाक नीलक व्यापार केवल दरभंगा जिलासँ भेल छल। ताहूमे पंडौल, इसहपुर, नवहथ सँ कम सँ कम 10 हजार मन लील यूरोप जाइत छल जकर मूल्य तहिआ करीब 24 लाख टाका छल।

एकर मौखिक इतिहासकेँ छिलका छोडेला सँ बहुत रास जानकारी भेट सकैत अछि। लीलहा कोठी भुताह सेहो होइत छल। भूखल पेट अधिक श्रमक कारणें कतेक प्राण त्यागने हेताह, से के कहय।

हम 1997 सँ 2002 धरि UNESCO Chair केर फेलो रही आ UNESCO-UNDP आ भारत सरकार केर सहयोग सँ करीब 100 गामक अध्ययन केने रही। बादमे 100 गामक हमरालोकनि 13 विभिन्न नाम सँ वर्गीकृत कैल:

1. पहिल गाम (The First Village): अरुणाचलमे एक गाम छैक “आदि”। आदि सँ भारत शुरू होइत छैक तांहि ओकर नाम “पहिल गाम”।
2. अंतिम गांव (The Last Village): उत्तराखंडमे माना नामक गाम छैक। ई गाम अंतिम गांव छैक। एकर बाद चीन शुरू भs जाइत छैक।
3. भूदान गाम (The Bhudan Village): भूदान गांव ओहेन गाम छैक जे जमीन विनोबा भावेकेँ लोक श्रद्धा सँ दानमे द्वलथिन।
4. कला ग्राम (The Artist's Village): अहि केर अंतर्गत ओहेन गाम अछि जे कुनो ने कुनो कलाकेँ लेल जनल जाइत अछि।
5. विद्वानक गाम (The Scholastician’s Village): मिथिला सँ सौराठ, सरिसब पाही, महिसी आदि गाम एहि श्रेणीमे अबैत अछि। एहि सब गामकेँ कम सँ कम हज़ार वर्षक इतिहास छैक।
6. कठोर गाम (The Hard Village): किछु एहेन गाम भेटल जतय बहुत दिन सँ लोकमे आपसी झंझट, खुना-खूनी केर माहौल रहैक। माओ नक्सल केर प्रभाव आदि। चारु दिस शान्तिक अभाव। एहेन गामकेँ हार्ड गामकेँ श्रेणीमे राखल गेल।

7. मृदुल गाम (The Soft Village): जहानाबादमे एक गाम एहेन भेटल जकरा अगल बगलमे बहुत रक्तपात होईत रहैक, नक्सली हिंसा, रणवीर सेनाक आक्रमण, मुदा ताहि सब घटनाकेँ कोनो दुष्परिणाम एहि गाम पर नहि रहैक। गामक लोक कतेक सौ साल सँ आपसी प्रेम, आ भ्रातृत्वमे रहैत आबि रहल छलनि। एहेन गाम आनो ठाम भेटल। एहि तरहक गामकेँ सॉफ्ट गामक श्रेणीमे राखल गेल।
8. पर्यावरण सँ सुसज्जित गाम (The Ecologically Oriented Village): किछु गाम अरुणाचल, सिक्किम आ हिमाचलमे एहेन भेटल जे प्रकृति सँग तारतम्य स्थापित करैत छल। पुड्डुचेरीमे नलबद्दु नामक मल्लाहक एक गाम गेल रही। ओतै केर माल्लाह समुद्र सँ माछ मारि ओकरा बेचि अपन गुजर करैत अछि। गामक माल्लाह समुद्रक बालू केर रंग देखि बुझि जाइत अछि जे कतेक कालमे कतेक बेग आ कोन दिशा सँ कतेक प्रलयंकारी तूफ़ान आबि सकैत अछि। अपन अहि ज्ञानक कारणे ओ सब आई धरि कोनो तरहक भीषण दुर्घटना केर शिकार नहि भेल अछि। समय रहैत अपनाकेँ समुद्र सँ बाहर आनि लैत अछि, नावकेँ कात कऽ लैत अछि।
9. स्वावलंबी गाम (The Self Generating Village): केरल, सिक्किममे किछु एहेन गाम भेटल जकर सब लोक जड़ी-बूटी केर संकलनमे लागल छल आ ओकर ज्ञान आ व्यवसाय सँ अपन जीविका चलबैत छल।
10. अनुषंगी गाम (The Fringe Village)
11. तीर्थ गाम (The Shrine Village)
12. परित्यक्त गाम (The Forsaken Village)
13. महाकाव्य केर आख्यान सँ संबंधित गाम (The Epic Village)

अहि तरहे अहु सँ लोक बहुत तरहक गाम आ ओकर संस्कार केर लोककंठ सँ बजैत अछि।

कहबाक तात्पर्य ई जे गामक नामकरण पर सामाजिक, लोक परम्परा, इतिहास आदि केर साथ लय एकिकृत भऽ काज करबाक आवश्यकता अछि। एहि सँ बहुत रोचक जानकारी भेट सकैत अछि।

3

मिथिलाक गाम अनेक समस्या आ इतिहास

चलु मिथिलाक गाम चली। समस्या गाममे अवश्य छल। आ ओहि समस्या ऩभ पर निस्सन काज नहि भेल। ऩभ सँ पैघ समस्या छल मैथिलानीक दुर्दशा, बाल विवाह। ई स्थिति तथाकथित उच्च वर्ण आ जातिमे आरो भयावह छल। ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक स्त्रीगनक स्थिति आरो दयनीय रहल अछि। दयनीय एहिलेल जे तथाकथित छोट जातिक स्त्री खेत, पथारमे मजदूरी सेहो कऽ सकैत छलि। पतिक मृत्यु भेला उत्तर बिबाह कऽ सकैत छलि । मुदा ई ऩभ स्वतंत्रता आ अवसर उच्च जातिक महिलाकेँ कहाँ छल!

यद्यपि एहि बातक अंतिम स्थापना एखन धरि नहि भेल अछि मुदा बहुत लोकक सोचब छनि जे तुर्क, मुसलमान आ तांत्रिक (बज्रयाणी) सभक उत्पात, जुआन कन्या सभकेँ भगा लऽ जएबाक कारणे मिथिलामे बाल विवाह, गोदना आदिक प्रथा प्रचलित भेल। धार्मिक आ अनुष्ठानिक क्रिया सेहो दुष्कर भेल गेल जाहि सँ समाज नहुँ-नहुँ दोखाह भेल गेल। ई अपना आपमे एक शोधक विषय भऽ सकैत अछि। ओना बुद्धिस्ट तांत्रिक सभ नेपाल दने मिथिला अबैत छल जकर अनेक लोक प्रमाण अछि। ताहि समय मिथिलाक गाम कतेक खुशहाल छल तकर प्रमाण भेटैत अछि। प्रमाण कतऽ भेटत? प्रमाण भेटत जैन आ बुद्ध भिक्षुक संस्मरणमे, मिथिलाक मादे हुनका लोकनिक लेखनीमे, हुनकर सभक धार्मिक पांडुलिपिमे। जखन अनेक नीक बात लिखने हेताह तँ किछु अधलाहो बात लिखने हेताह। नीक आ अधलाह ककरो बिना शोध केने, दोसर प्रमाण सँग मिलान केने स्वीकार करब शैक्षणिक अपराध करब सन अछि। शोधकर्ता लोकनिमे हंसक क्षीर नीर समभावक गुण उतपन्न केनाइ आवश्यक। काज तखने आगा बढ़त। ओना महाकवि विद्यापति ठाकुर सेहो अपन यात्राक विवरण दैत तुर्क सभक उदंडताक, हिंदू धर्मक लोकक प्रति ओकर सभक अन्याय, आदिक एथनोग्राफिक वर्णन करैत

छथि। एक जैन भिक्षु मिथिला लेल लिखैत छथि: “अतय केर गाम सुव्यवस्थित अछि, अतय केर गाय पुष्ट आ दुधगर होइत अछि। मिथिलामे घोड़ा, हाथी, गाय, बरद सभ उन्नत नस्लक अछि। अतय केर स्त्रीगण बुद्धिमति छथि। घरक अथवा गामक कोनो सामुदायिक निर्णयमे स्त्रीगनक विचार लेल जाइत छनि। अतय केर खेत अपन उर्वरा शक्ति लेल जानल जाइत अछि…”।

उपरोक्त कथन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे हमर सभक पुरखा लोकनि इतिहासमे गामक संरचना आ व्यवस्थाकेँ बहुत नीक सँ व्यवस्थित करैत छलाह। समाज नीक सँ चलि रहल छल। जनसंख्या नियंत्रणमे छल। यद्यपि किछु भाग वसुधाक एहनो छल जे दलदल छल, कटाह छल। मुदा ओहि जमीनमे अनाज उगेबाक कोनो प्रयोजन अथवा दरकार नहि छल।

समस्या उतपन्न भेल अंग्रेजक भारतमे अयलाक बाद। लेकिन तैयो मिथिला आन ठाम जेना कि भोजपुरी क्षेत्र, खोरठा क्षेत्रक तुलनामे नीक छल। अतय लीलक (नील) खेती हेतु धरती बहुत हिस्सामे राज दरभंगाक सहयोग सँ भेल आ आन ठाम स्थानीय जमींदार सँग। जखन कित्रिम लील बनबाक दिशामे वैज्ञानिक ऩभ सफल भेलाह तँ प्राकृतिक लीलक खेतीक कोनो प्रयोजन नहिं रहलैक। मिथिला फेरो भाग्यशाली रहल। अतय जमीन पुनः राज सर्किलमे चलि गेलैक आ सभ जमीनक प्रयोग कुसियारक खेतीमे होमय लगलैक। कुसियारक खेती अहि तरहेँ शुरू भेल जे जन-जन ओहि सँ जुड़ि गेल। लोक लग काजक कमी नहिं रहलैक। यैह कारण रहैक जे चंपारण जकाँ मिथिलामे गांधी जीकेँ नहिं आबय पड़लनि। यद्यपि चंपारण बला मामला किसान सँ कम जमींदार सँ अधिक रहैक। राजकुमार शुक्ल जे गांधी जीकेँ 1917 मे चंपारण अयबाक लेल वाध्य केलनि सेहो अगर पुनः शोध करब तँ ज्ञात हएत जे लिलहा मजदुर लेल कम आ जमीनक मालिकाना हक लेल प्रयत्नमे लागल छलाह। शुक्ल जी तँ स्वयं जमींदार छलाह आ ओहि क्षेत्रमे सूदिक कार्य करैत छलाह। अहि विषय पर बहुत लिखबकेँ कोनो जरूरत नहि अछि। प्रसंग आयल तँ शोधक नव दिशा दिस इसारा करब आवश्यक छल।

प्रयोजन ई अछि जे जखन अंग्रेज ऩभ चाहक बागान, कॉफ़ीकेँ बागानमे असम, दार्जलिंग एवं अन्य स्थान पर Indentured अथवा गिरमिटिया मजदुर

(गवर्नमेंट आ अग्रीमेंट दुनू शब्दक भोजपुरी अपभ्रंश भेलैक गिरमिटिया) कँ रूपमे अनेक ठामक लोककँ लऽ गेल तँ ओहिमे मिथिला सँ लोक नहिये जकाँ गेलाह। भोजपुर सीमाक क्षेत्रक अंतर्गत जे लोक सभ अबैत छलाह से ऩभ कनि मनि अवश्य गेलाह। ई गिरमिटिया अनुबंधित मजदुर होइत छल जे एक हिसाबे दासक जीवन जिबा लेल वाध्य छल। यद्यपि एकरा सभकँ भरिपेट भोजन आ न्यूनतम वस्त्र आ पैसा आदि भेटैत छलैक। गिरमिटिया मजदूरक भारतक विभिन्न हिस्सा आ बादमे ब्रिटिश साम्राज्य के दोसर दोसर देश मे 1834 ईसवी सँ 1922 ईसवी धरि चलैत रहलैक। यद्यपि गांधी जीकँ आंदोलन आ प्रयास सँ एहि प्रथाकँ बंद करबाक निर्णय भेलैक लेकिन पूर्णतः बंद 1922 के बाद भेलैक। संक्षिप्तमे ई बुझू जे भारत सँ गिरमिटिया मजदूर कुसियार, रबड़, कॉफ़ी, चाह बागान आदिमे काज करबाक लेल कैरिबियाई क्षेत्रक सँग फिजी, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, मलेशिया, श्रीलंका आदि देशमे बलजोरी भेजल गेल। एकरो पर बहुत चर्च करब जरूरी नहि अछि। प्रसंग आयल अछि तँ मूल बात बुझब अत्यवश्यक अन्यथा सूत्र सँग चलब आ इतिहासक माला बनेनाइ असम्भव भऽ जाइत। आ अगर से भेल तँ बात अपन निर्धारित छोड़ पर नहि आएत।

कुसियारक खेती गामक-गाम होमय लागल । ओकर कारण छल अनेक चीनी मिलक स्थापना। नीक माटि, जलक पर्याप्त मात्रामे उपलब्धता आ जमीनक समतल स्वरूपक कारणे किछुए दिनमे मिथिलाक गाम गाम एक सुंदर संरचना सँग जुड़ि गेल। मजदूर सँ किसान धरि अपन काजमे व्यस्त भऽ गेल। तावत धरि रेल आबि गेल रहैक। रेलक ट्रैकक तर्ज पर गामे-गामे खेत ऩभसँ कुसियार उघबा लेल ट्रालीकँ व्यवस्था विकसित कएल गेलैक। किसान सभकँ पहिने पुर्जी भेट जाइक। ताहि आधार पर ओ सभ कुसियार कटा कऽ तैयार रखैत छलाह। फेर जखन ओकर वजन भऽ जाइ तँ ओकर रशीद भेट जाइक। रशीदक आधार पर तीन मास सँ चारि मासक भीतर लोककँ पैसा भेट जाइक। ओ रशीद फिक्स्ड डिपॉजिट कार्ड अथवा चेकबुक सँ कम नहि होइक। कतेक लोक अपन बेटीक विवाह, द्विरागमन, बेटाक उपनयन, माता पिताक श्राद्ध, गृह निर्माणक कार्य ओहि रशीदकँ बदौलत करैत छलाह। रशीद राखि भट्ठा बला ईंट दऽ दैत छलनि, महाजन समान,

आ बेटा बला विवाह लेल तैयार। मुदा ई संरचना नहुँ-नहुँ चरमरा गेल। एकर एक कारण इहो रहल जे मिथिलामे कम्युनिस्ट आंदोलन तँ पसरल मुदा कहियो कोऑपरेटिव व्यवस्था झमटगर भेल विकसित नहि भेल। ई मिथिलाक लोक लेल, समस्त मिथिला क्षेत्र लेल आ मिथिलाक हरेक गाम लेल ऐतिहासिक गलती भऽ गेल। मैथिल कोऑपरेटिव नहि बना एक लिखे हुमाचि गेलाह। अगर कोआपरेटिव बनि गेल रहैत तँ आर्थिक रूप सँ, शैक्षणिक रूप सँ आ राजनीतिक रूप सँ सभ तरहेँ मिथिला बिहारमे अव्वल रहैत। कोआपरेटिवकेँ कारण महारष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक आ पश्चमी उत्तरप्रदेश कतेक आगा बढल से ककरो सँ नुकाएल नहि अछि। शरद पंवार, गोपीनाथ मुंडे, नितिन गडकरी, केशुभाई पटेल, सभ कियोक कोआपरेटिव सँ विकसित भेल नेता छथि। कोआपरेटिवकेँ बले अमूल आंदोलन गुजरातमे कतेक आगा बढल तकर जानकारी सभ लग अछि। पश्चिमी उत्तरप्रदेशमे सेहो यएह स्थिति भेल। मिथिला पिछड़ि गेल। लड़खड़ा गेल। टांग तोड़ि बैस रहल।

आब स्थिति बिगड़ि गेल अछि। इतिहासक अनंतकाल सँ पानिक प्रचुरता लेल ख्यात मिथिला आई पानिक संकट सँ त्राहिमाम कऽ रहल अछि। आब समस्त दुनियाँमे लोक आर्गेनिक खेती अथवा नेचर फ्रेश दिश बढ़ि रहल अछि। चीनीक बदला कोनो एहेन फसलकेँ खोजमे कृषि वैज्ञानिक लागल छथि जे चीनीक स्थान लऽ सकय। जकरा ग्रहण केला सँ मधुमेह अथवा आन कोनो तरहक बीमारी नहि होइक। जाहिमे केमिकल अथवा फर्टीलाइजर केर प्रयोग या तँ साफे ने होइक अथवा न्यूनतम होइक। संगहि ओ चीज छोट सँ छोट जमीनक टुकड़ामे अधिक सँ अधिक उपजैक। आ ई सभ गुण सँ पूर्ण जे कृषि उत्पाद विकसित भेलैक अछि तकर नाम छैक स्टेविया। स्टेविया तुलसीकेँ जनजातीय अथवा जंगली प्रजातिक झाड़ी अछि जकर मिठास चीनीक तुलना केला सँ 300 गुणा तक होइत छैक। ई एक प्रकारक औषधि पादप अछि। एकर खेती कम सँ कम आ छोट सँ छोट जमीनक टुकड़ामे सहजता सँ कएल जा सकैत अछि। ई पानि सेहो नामे मात्र ग्रहण करैत छैक। ई आजुक समय पूर्णतया आर्गेनिक छैक आ नहुँ-नहुँ लोकक पसिनक वस्तु भेल जा रहल छैक। कृषि वैज्ञानिक सभ एकरा पर आरो प्रयोग कऽ रहल छथि। अगर यएह स्थिति रहलैक तँ चीनीक आवश्यकताकेँ ई लगभग आबय बला

समयमे जड़ि सँ उखाड़ि सकैत अछि। ऊपर सँ यदि हम ऩभ मिथिला केंद्रित बात करी तँ मिथिलामे नहिये तँ आब पर्याप्त जमीन अछि, ने पानि आ ने चीनी मिल। फेर एकर केहन संभावना?

बात कृषि आ कृषि अनुसंधान आ कृषिमे विकासक करैत रही। एहि बात पर एक बात कहब ई जरूरी जे 1857 के सिपाही विदोह अंग्रेज सभ हारैत हारैत जीतल छल। अंग्रेज बुईझ गेलैक जे आब भारतीय एक भs रहल अछि। ओ सभ एक अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञक टीमकेँ पूरा भारतमे अध्यन करक एक परियोजना देलकैक। ओ दल पूरा भारत केर कम सँ कम पांच मुख्य शहर : दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई (मद्रास पढ़ि सकैत छी), मुंबई (बॉम्बे पढ़ि सकैत छी) आ लाहौरक रेलवेक नेटवर्क सँ जोड़बाक बात केलकैक। एकर फायदा ई भेलैक जे कोलकाता जे ओहि समय भारतक राजधानी रहैक से अन्य चारि महानगर सँ 24 घण्टाक भीतर संपर्कमे आबि सकैत अछि। अकाल आ कोनो विपरीत परिस्थिति भेला पर रेल द्वारा लोकक मद्त कs सकैत छल। रेलवे ट्रैककेँ अंग्रेजक एक प्रवधान इहो रहैक जे अगर कोनो राजा अथवा जमींदार चाहय तँ अपन खर्च सँ रेल लाइन बिछा सकैत अछि। दरभंगा महाराज अपन खर्च सँ रेलवे लाइन मिथिला धरि अनलाह। मिथिला पुनः अहि तरहेँ देशक मुख्यधारा सँ जुटि गेल।

वैह कमिटी एक बात आरो कहलकैक अपन रिपोर्टमे की? ई जे दरभंगा (आजुक समस्तीपुर जिला) लग पुसा जतय केर जमीन कनि दलदल छैक परन्तु भारतक प्रथम कृषि वैज्ञानिक शोध केंद्र स्थापित हो जतय नाना तरहक प्रयोग सँ कृषि वैज्ञानिक अनेक तरहक अनाज आ मनी क्रॉप्स केर उपज कs सकय जाहि सँ अकाल आ महामारीक स्थिति नहि उतपन्न होइक। तदनुसार 1902 ईसवी सँ जमीन अधिकरण केर काज शुरू भेलैक आ 1 अप्रैल 1905 ईसवीमे ताहि समयक गवर्नर जनरल ऑफ इंडिया लार्ड करज़न कृषि शोध संस्थान आ महाविद्यालय केर स्थापनाक नीव देलाह। बादमे भारतक गवर्नर जनरल भेलाह लार्ड मिंटो। हुनका समयमे राजधानी कोलकाता सँ दिल्ली आबि गेलैक मुदा ओ पुसाकेँ बहुत पैघ आ रॉयल स्टेटसकेँ वैश्विक कृषि अनुसंधान केंद्रक रूपमे स्थापित करय चाहैत छलाह। ताहिं 1918 मे बहुत सहायता राशि दैत, भवन निर्माण केर नव संरचना

दिस ध्यान खिचैत लार्ड मिंटो महोदय एहि संस्थानकेँ इम्पेरिअल मान्यता दैत एकर पुनरनामांकन इम्पीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट केर रूप मे केलाह। दुर्भाग्य सँ 1934 मे बिहारमे एक भीषण भूकंप भेलैक जाहि सँ एकर भवन सभ ढंनमना गेलैक। ताहि समय निर्णय ई भेलैक जे भवनकेँ फेरो सँ भूकम्प प्रतिरोधी क्षमता सँ युक्त बनाएल जाय आ तावत लेल संस्थानक काज धाज दिल्लीक 500 एकड़ जमीनमे होइत रहय। जेना हम ऩभ जनैत छी, 15 अगस्त 1947 मे भारत आजाद भऽ गेलैक। अंग्रेज चलि गेलैक मुदा पुसा दिल्लीमे रहि गेलैक। जे मुख्य शोध केंद्र रहैक से सहायक भऽ गेलैक आ जे संस्थान किछु दिन लेल कैम्पमे शुरू कएल गेल रहैक से भारतक प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जीक कृपा सँ मुख्य संस्थान भऽ गेलैक। सभ सँ पैघ बात ई जे अहि स्थिति पर मिथिलाक बुद्दिजीवी, नेता, सोशल नेटवर्किंग केर सामाजिक कार्यकर्ता (आजुक भाषामे आन्दोलनी कहि सकैत छी) चुप रहल। मौन साधि लेलक। स्थापना केर किछुए दिनमे पुसा आ अगल बगल केर किसान मनी क्रॉप्स, तरकारी, तमाकुल आदि उपजेनाइ बहुत पैघ स्तर पर शुरू केलकैक।

आइयो एहि बातक नितांत आवश्यकता छैक जे मिथिलाक बुद्धिजीवी, नेता, आ आन्दोलनी भारत सरकार सँ एहि बात पर बात करथि, एकरा लेल सांगठनिक क्षमता प्रदर्शित करथि आ फेरो पुसाकेँ मुख्य केंद्र बनबथि

कैम्प आफिस मुख्य आफिस कोना भऽ सकैत अछि। अगर ई संस्थान बिहार छोड़ि बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल आदिमे रहैत तँ ओतय केर लोक कहिया ने एकरा अपना ठाम वापस लऽ गेल रहैत। ई सोचबाक विषय एहिलेल अछि जे एकर विकास सँ मिथिलामे नव तरहक खेती आधुनिक मेथड आ तकनीकी सँ सम्भव अछि। से सोचत के???

मुदा नारीक स्थिति आ विधवाक सँग अत्याचार जकर साक्षी मिथिला रहल अछि पर चर्चा चलैत रहत। जावत धरि एक एक चीजक खोईछा नहि उतारब गामक अवधारणा के ऐतिहासिक सन्दर्भ मे बुझब कठिन भेल रहत…

4

बच्चा झा प्रथम:
लोककंठमे व्याप्त इतिहास गाथा

चलु अरेड़ गाम चलैत छी। मधुबनी सीतामढ़ी अथवा मधुबनी बेनीपट्टी राजकीय सड़कक काते-काते 14 टोलक मिथिलाक पाँच पैघ गाममे एक गाम अरेड़ अछि। अरेड़ बेनीपट्टी ब्लॉक आ अरेड़ थानाक परिसीमनमे अबैत अछि। अरेड़ – पोस्ट आफिस, थाना, बैंक, चिकित्सा केंद्र, मवेशी अस्पताल, मिडिल स्कूल, बेसिक स्कूल, हाई स्कूल, संस्कृत महाविद्यालय आदि सुविधा सँ परिपूर्ण अछि। अरेड़क चौक सभमे सभ आवश्यक वस्तु भेटैत छैक। रैय्याम चीनी मिलक कोऑपरेटिव सोसाइटीक आफिस अरेड़मे छल। अरेड़क लोक पहलमानी आ फुटबॉल एहि दू विधामे सर्वश्रेष्ट रहल अछि। फुटबॉलमे अरेड़ कतेक बेर राज दरभंगाक टीमकेँ परास्त कऽ चुकल अछि। एहि प्रतिभा सँ प्रसन्न भऽ अंग्रेजक एक अधिकारी 13 गोटेकेँ एकै दिन रैय्याम चीनी मिलमे नौकरी दऽ देलथिन।

कहि ने कियैक स्थापित इतिहासकार लोक इतिहास पर बौक छथि? या तँ ई सभ लोक इतिहासके तुच्छ बुझैत छथि अथवा शोधक झंझटमे नहि ओझराए चाहैत छथि? रामे जानथि हिनकर मनोदशा मुदा एहि उदाशीनताक हानि लोक इतिहास भुगति रहल अछि।

एखनो अगर मिथिलाक गामे-गाम घूमी आ गम्भीर अवलोकन करी तँ लोक इतिहासक एक सँ एक परत फूजत। लोक इतिहास सँ मिथिलाक महत्व देशक इतिहास आ विश्व इतिहासमे देखल जा सकैत अछि। तकर प्रारम्भ के करत? चलू प्रारम्भ हम अरेड़सँ करैत छी। अरेड़क इतिहासक अनेक परत एखनो लोककंठमे व्याप्त अछि।

अरेड़मे दूटा बच्चा झा भेलनि। दुनूक नाम लोकमानसमे एखनो व्याप्त अछि। संयोगसँ दुनू बच्चा झा अरेड़ डीह टोलक छलाह। अगर अरेड़क इतिहास देखब तँ

दुनू हर्षवर्द्धन प्रथम आ द्वितीय सँ कम कीर्तिमान नहि छलनि। अहिबेरक खेपमे बच्चा झा प्रथमक बात करैत छी।

18वी शताब्दीक अंत आ 19वीं शताब्दीक प्रारम्भमे बच्चा झा प्रथमक प्रादुर्भाव भेलनि। ओ महाबलशाली, शौम्य, सहमिल्लु, अति सहज आ हृदयवन्त लोक छलाह। मल्लयुद्धमे सभदिन नव कीर्तिमान स्थापित करैत गेलाह। नहूँ-नहूँ इलाकाक सभ पहलमानकेँ पछाडि देलनि। हूनकर कीर्तिक भान जखन दरभंगा महाराजकेँ भेलनि तँ बजेलथिन आ कहलथिन जे अहाँ राजक पहलमान भऽ जाउ आ दरभंगेमे रहू। राजा इहो प्रलोभन देलथिन जे बच्चा झा लेल ओ एकटा पैघ गाछी देथिन जाहिमे ओ अपन पहलमान सभलेल अखाड़ा बना सकैत छथि। अरेड़ सँ अतेक ने सिनेह छलनि बच्चा बाबूकेँ जे ओ महाराजक प्रस्तावके ई कहैत अस्वीकार कऽ देलथिन "सरकार, अपनेक प्रेम सँ हम नम्र भेल छी मुदा हमर गाममे हमर अखाड़ागाछी अछि। नवयुवक सभ हमरा उस्ताद कहैत छथि। हमरा बिना ओ सभ हेहरु भऽ जाएत। गामक प्रति सेहो हमर कर्तव्य बनैत अछि। अपने कहियो आबि ओकरा अपन चरणसँ पवित्र करियौक आ हमर शिष्य सभक मनोबल करियौक। अपने लेल पूरा अरेड़ गाम बाट जोहत। हमरा गामेमे रहबाक अनुमति देल जाओ। राजमे जखन कखनो हमर जरूरत पड़त हम अपनेक एक सम्बाद पर दौड़ल आबि जाएब।”

महाराजकेँ बुझा गेलनि जे बच्चा झा अरेड़ छोड़ि आन कोनो ठाम नहि रहता। कहलथिन: “ठीक छै, अहाँ गामेमे रहू मुदा जखन कखनो राजकेँ जरूरत हेतए तँ अहाँ एतए आबि जाएब।”

बच्चा झा प्रसन्न होइत बजलाह, “सरकार, हम अहाँक प्रजा पूत थिकहूँ। अपनेक एक आज्ञा पर सभ काज त्यागि दौड़ल चलि आएब। कखनो अपने हमरा परेखि सकैत छी।” पहलमानशिरोमणिक उद्गार देखि राजा प्रसन्न भेलाह। यथोचित सम्मान दए विदा केलथिन।

एकबेर दरभंगा राजमे नेपालसँ कोनो मुसलमान पहलमान आबि गेल। राजक सभ पहलमान ओकरासँ हारि गेल। जखन सभ हारि गेल तँ महाराज तुरत बच्चा झा लग दूत पठेलथिन।

महाराजक सम्बाद सुनैत देरी बच्चा झा अपन अखाड़ागाछी सँ घरो नहि गेलाह सोझे दरभंगाक बाट धेलनि। घोड़ाकेँ चरपट दौड़बैत एकहि साँसमे राजदरबार पहूँच गेलाह। विनम्रता सँ प्रणाम करैत बजेबाक कारण पुछलथिन। महाराजा कहलथिन जे सभ पहलमान एहि नेपाली पहलमानक आगा हारि मानि लेलक। आब मात्र बच्चा झा सँ आशा। बच्चा झा कुश्ती लड़बा लेल तैयार भऽ गेलाह।

भोरे-भोर अखाड़ा सजल। लोकक हँसेड़ी आबय लागल। हेंजक-हेंज लोकक करमान लागि गेल। महाराज लेल आसन लागल। नेपाली पहलमान बच्चा झाक बगे देखलक तँ ऐना अट्टहास केलक जेना ओकरा लग ई पीद्दी होथि! बच्चा झा गंभीर बनल रहलाह। लंगोट धारण केलनि। अरेड़क ब्रह्मबाबाक स्मरण केलनि। कुलदेवीक धेआन देलनि आ अखाड़ाक माटि समस्त देहमे रगडि देहकेँ पवित्र केलनि। आब मल्लयुद्ध शुरू भेल। मुश्किल सँ 2 मिनटमे धोबिया पाट मारैत नेपाली पहलमानकेँ सीधे चित्त कऽ देलथिन। उमड़ल भीड़ बच्चा झाक जयघोष सँ वातावरणकेँ मनमोहक बना देलक। महाराज आनंदविभोर भऽ गेलाह।

नेपाली पहलमान आब विनम्र भऽ चुकल छल। बच्चा झाक चरण छुबैत अपन गुरु मानि लेलक। दक्षिणामे रस्ताक अर्जित समस्त धनकेँ सुपुर्द कऽ देलकनि। बच्चा झा ओकरा हृदयसँ लगा लेलाह। महाराज बच्चा झाकेँ घरे लग 100 बीघा जमीन अखाड़ाक संचालनक हेतु देबाक घोषणा कएलथिन्ह। बच्चा झा अरेड़ चलि अएलाह। अरेड़क लोक हूनकर उपलब्धि सँ चमत्कृत छल।

अरेड़ सँ 4 किलोमीटरक दूरी पर सौराठक सभागाछी लागल रहैक। एकदिन बच्चा झा धोती, मिरजई, पाग, दोपट्टा धारण केने सभागाछी बिदा भेलाह। सभागाछीमे बीड़ी, सिगरेट, मदिरा आदिक सेवन वर्जित रहैक। बच्चा झाक नजरि एक अंग्रेज पर गेलनि। ओ अंग्रेज घोड़ा पर चढ़ल सिगरेट पिबैत छल। बच्चा झा इशारा सँ मना केल्थिन। मुदा अंग्रेज तँ घमंडमे चूर। बाजल: “तों के होयत छह हमरा टोकए बला? हमर जे मोन हएत से करब।”

बच्चा झा तामस पर काबू केने रहलनि आ बजलाह: “से तँ नहि हएत। ई हमर सभक मर्यादाक प्रश्न अछि। हमर संस्कृति एहि बातक स्वीकृति नहि दैत अछि जे

हमरा लोकनि किनको, चाहे केहनो लाट साहेब कियैक ने होथि अपन पावन स्थलीमे बीड़ी, सिगरेट, मदिराक सेवन करक छूट दियौन। ई मर्यादास्थली अछि। अपने सँ आग्रह जे अपने सभागाछी सँ बाहर भए पीबू।”

अंग्रेज अपन गुमान पर तनल रहल। सिगरेट पिनाई बन्द नहि केलक। एहि अप्रत्यासित आ उदण्ड व्यवहार सँ क्रुद्ध होइत बच्चा झा एक नन्हिटा ढ़ेप ओकरा शरीर पर फेंक देलथिन। ढ़ेप लगिते ओ अंग्रेज चारुनाल चित्त होइत धरती पर खसल आ प्राण त्यागि देलक। आब की हो? बच्चा झा सभागाछी सँ चोट्टे नेपाल भागि गेलाह। इम्हर चौकसी बढ़ि गेल। हुनका पर नॉन बलेबल वारंट जारी भs गेलनि।

अरेड़क अखाड़ागाछी बच्चा झाक बिना सुन्न लागए लागल। लोक चिंतित। महाराज लाचार। आखिर एक अंग्रेज हाकिमक ख़ून भेल रहैक। की हो?

सात मासक बाद बच्चा झाक पित्तिक निधन भs गेलनि। बच्चा झा नहकेस दिन चोरा कs रातिमे गाम आबि गेलाह। एहि बातक भनक कहि ने कोना पुलिसकेँ लागि गेलैक। द्वादशा दिन पुलिस हुनक घर पर छापा मारलक। आब की हो? बच्चा झा एक बखारीमे घुइस गेला। पुलिस घरक तलासी लेमए लागल। अहि स्थिति सँ माहौल खराप भs गेलैक। हुनकर पित्ती बच्चा झा लग जाइत बजलाह: “बच्चा यौ बच्चा! ई की कs रहल छी? गामक इज्जत जा रहल अछि आ अहाँ बखारीमे दुबकल छी। पुलिस आब स्त्रीगण सभसँ पूछताछ शुरू कs देने अछि। अहाँ बाहर आउ।” बच्चा झा तुरत बाहर अबैत आत्म समर्पण कs देलाह। हथकड़ी हुनका हाथमे अटबे ने केलनि। अंतमे रस्सी सँ हाथ बान्हि हुनका जेहल लs गेलनि। केस चलs लगलनि। एक बरख बीत गेलैक।

एक दिन अंग्रेज जजक कनिया जेल घुमs एलैक। हिनका एक कोनमे एक विशाल सखुआक सिल्लसँ बान्हने छल। ओकरा भेलैक ई कतेक विशाल लोक अछि। छड़ी सँ हिनका कुरेदलकनि। ई सकपकाकs बैस गेलाह।

अंग्रेज महिला: “अहाँकेँ कोन अपराधमे जेहलमे रखने अछि?”

“ख़ूनक अपराधमे” बच्चा झा बजला।

महिला: “ई 27 हाथक साखु अहाँ कन्हा पर उठा सकैत छी?”

“अगर अपनेक आज्ञा होइ तँ प्रयास कऽ सकैत छी।” ई कहैत बच्चा झा कनिकाल धरि जोर सँ सांस लेलनि आ झटदनि सिल्लकेँ कान्हपर राखि लेलाह। महिला अचम्भित रहि गेलि।

महिला: “अहाँ अपन हाथक लोहाक बेड़ीकेँ तोड़ि सकैत छी?”

बच्चा झा: “हूजूरक आदेश हो तँ कोशिस कऽ सकैत छी।”

महिला: “ठीक छैक। करु प्रयास।”

आब बच्चा झा दम फुलबै लगलाह। साँसक सङ्ग हाथ सख़्त होइत गेलनि। हाथक नस सेहो तना गेलनि। पांच मिनटमे कड़ी कड़कड़ाकऽ टूटि गेलैक। अंग्रेज महिला विस्फारित नेत्रसँ हिनका देखैत रहलनि।

महिला: “अहाँ सत्ते खून केलयैक?”

बच्चा झा कहलथिन जे हुनक मनसभ खून करक नहि छलनि। ओ तँ मात्र नन्हिटा ढ़ेप फेक देलथिन जाहिसँ मृत्यु भऽ गेलैक। आब ओ महिला आश्वस्त भऽ गेलि जे बच्चा झा निर्दोष छथि आ हिनकर मनसा खून करऽक नहि छलनि।

पांच-सात दिनक बाद ओ महिला अपन जज पति लग गेलि आ बाजलि: “ई बच्चा झा निर्दोष आ निश्छल लोक अछि। एकरा फँसाओल गेल अछि। ई दैत्याकार मनुख अछि जकरा लेल एक आदमी की अनेक आदमीकेँ मारब आसान छैक। फेर ई एक आदमीक हत्या कथिलेल करत? अहाँ एकरासँ ई कबूलनामा लैत जे ई निर्दोष अछि एकरा वरी कऽ दियौक।”

जज अपने सँ बच्चा झा लग गेल। सभ बातक संज्ञान लैत किछुये दिनमे बच्चा झाकेँ वरी कऽ देलकैक। आर तँ आर दरभंगा महाराज सेहो एहि सँ बहुत प्रसन्न भेलाह आ अपने सङ्गे बच्चा झाके लकऽ अरेड़ एलाह।

अरेड़क लोक खुशीसँ बताह भऽ गेल। मस्तीमे झुमय लागल। नग्र हिलकोर मारए लागल। सोहर आ कीर्तनसँ वातावरण गुंजायमान भऽ उठल। बच्चा झा पहलमानीमे भेर भऽ गेलाह।

अरेड़क बुढ पुरानक कहब छनि जे ऐतिहासिक साक्ष्य पर आधारित अछि जे एकबेर पंजाबक “सैंडो पहलवान” लड़बाक वास्ते दरभंगा गेल रहथि। हुनका बच्चा झा पहलमानक संबंधमे जानकारी भेटलनि। ताल ठोकैत घोड़ा पर चढल अरेड़

एलाह। भोरे भोर अखाड़ा गाछीमे कुश्तीक तैयारी भेल। जखन बच्चा झा लंगोट धारण केलनि आ अरेड़क कुलदेवीक स्मरण केलनि तँ धीरे-धीरे हुनकर शरीर सामान्य सँ 3 गुणा बढ़ि गेलनि। ई देखिते पांजबक पहलमान बच्चा झाकेँ गुरु मानि वापिस आबि गेलाह....

अरेड़मे अखाड़ागाछीमे एक बीजू आमक गाछ पर बहुत पाकल आम रहैक। महाराज आम खएबाक इच्छा व्यक्त कएलनि। भेल आम कोना टूटत? बच्चा झा विशालकाय बीजू गाछकेँ अपन पीठ सँ हिला देलथिन। सभ आम देखिते मातर झड़ि कऽ खसि पड़लैक। महाराज चमत्कृत भेलाह। आ बगलक राजक आमक गाछी सेहो बच्चा झाकेँ लिख देलथिन।

एक बात आरो प्रसिद्ध अछि बच्चा झाक बारेमे। कंसी सिमरी गामक नेवति झा बहुत कलामा पहलमान छलाह। ओ अपना आगा ककरो मोजर नहि करैत छलाह। एकबेर नेवति झा अपन कोनो संबंधी लग अरेड़ अएलाह। अपन गुमान सेहो सङ्गे अनलथि। बच्चा झा चुपचाप हुनका लग गेलाह आ सोझे गछियाक हुनका अपना काबूमे करैत हुनकर माथक चानन चाटि गेलाह। तहिया सँ लोकमे ई प्रचलित भऽ गेल जे "अरेड़क लोक नढ़ेढ़"। सही अर्थमे ई एहि बातक प्रमाण छल जे अरेड़क लोक ककरोसँ नहि डेराइत अछि।

बच्चा झा दीर्घजीवी नहि भेलाह मुदा भरल-पूरल परिवारक स्वामी भेलाह। हुनक वंशक लोक एखनो अरेड़मे छथि। अखाड़ागाछी अछिए मुदा अखाड़ा आब खेतमे बदलि गेल अछि।

बच्चा झा प्रथमक आख्यान एहि तरहे पूर्ण भेल। बच्चा झा द्वितीयक चर्च दोसर खेपमे....

अग्रज महेश डखरामी अरेड़पर एक त्वरित चरिपतिया प्रेषित केला अछि। ओ सभसँ बाटि रहल छी:

"कणे कण भरल गुण खान
शौर्य पराक्रम बुद्धिक मान।
चौदह टोले ललित ललाम
धन्य अरेड़ हे चरण प्रणाम।।"

5

बच्चा झा दोसर: अरेड़क मानवीय धरोहर

अरेड़ गामक इतिहास सौर्य, समृद्धि, मानवीय संवेदना, भक्ति, अनुराग, परिश्रम आ करूणाक इतिहास रहल छैक।

अरेड़क अर्थ की अछि? एहिपर हम नेने सँ काज कऽ रहल छी। बात कनि स्पष्ट नहि भऽ पाबि रहल अछि। अरेड़क नाम अलग अलग भाषामे अलग अलग अछि। संस्कृत विद्यालयमे एकर नाम अरेरु छैक; डाक घर आ आन ठाम हिंदी आ मैथिलीमे अरेड़ लिखल भेटत; अंग्रेजीमे ANRER लिखल रहैत छैक। किछु पुराण संस्कृतक विद्वानक कहब छनि जे अरेड़क अर्थ भेल एहन गाम जकर लोक अपन धुनक पक्का होथि। जिनका कियोक रेड़िया नहि सकैत अछि। मतलब धखगर गाम। दोसर मत कहैत अछि जे एक समयमे एहि गाममे अंडी केर बन छलैक ताहिं अंडी सँ अरेड़ भऽ गेल। अहिपर किछु आरो काज करबाक प्रयोजन छैक। तखन बात फ़रिछा सकैत अछि। यद्यपि हमरा पहिल बला बात कनि अधिक सटीक बुझना जाइत अछि।

विद्वत परम्पराक थोड़ मुदा महत्वपूर्ण साक्षी रहल अछि अरेड़। स्वतंत्रता आन्दोलनमे अरेड़क भूमिका महत्त्वपूर्ण छैक। एकर मतलब ई नहि जे अरेड़मे किछु अधलाह नहि भेल होइक। नीक अधलाह सभ ठाम सभ कालमे होइत छैक। अरेड़ सेहो एकर अपवाद नहि अछि। अहि गाममे किछु परिवार आ लोक गामक गरिमा एवं मर्यादाकेँ थालमे मिलाबय बला सेहो भेल छथि। खैर, निकक चर्च करैत छी।

पहिने कहि चुकल छी जे अरेड़मे दू समयमे दू बच्चा झा भेल छथि जिनक यश आ कृतिक सुगन्ध सँ अरेड़ एखनो सुवासित अछि आ भविष्यमे सेहो रहत। प्रथम बच्चा झाक चर्च कऽ चुकल छी आई दोसर बच्चा झाक चर्च करब जे अपन यश आ

कृति सँ अमर छथि। हुनक व्यक्तित्व लोककेँ अचम्भित करैत अछि। ओ अनुकरणीय छथि, अनुपम छथि, अद्वितीय छथि।

बच्चा झा कालक लेख पर अमृतक रोशनाई सँ लिखल शास्वत हस्ताक्षर छथि। आई जे अरेड़क बच्चा सभ पढ़ि-लिख रहल छथि ओहि सभ बच्चाक शिक्षामे बच्चा झाक अमूल्य योगदान छनि। बच्चा झा कालपुरुष आ इतिहास पुरुख छथि।

बच्चा झाक जन्म अरेड़ डीह टोलक दक्षिणवारि गच्छमे ब्राह्मण परिवारमे भेलनि। ई समय लगभग 1870-75 के छल हएत। पांच भैयारीमे बच्चा झा दोसर स्थान पर छलाह। हिनकर आर भाई सभहक नाम –

रत्ते झा
नेवा झा
मधुरी झा आदि छलनि।

बच्चा झाकेँ पिताक नाम गुदड़ी झा छलनि।

बच्चा झाक जन्म जे जनश्रुति कहैत अछि ताहि हिसाबे सामान्य परिवारमे भेलनि। ताहि समय अरेड़मे लोकक पढ़बाक दिस ओतेक ध्यान नहि रहैक ताहिं बच्चा झा पढ़ाईकेँ बारेमे की सोचि सकैत छलाह! बच्चा झा निरक्षर रहलाह। लेकिन छलाह बहुत अग्रसोची आ अग्रचेती। अपन छोट सन बारीमे नाना तरहक तरकारी लगाबथि, गाछ रोपथि। हुनकर हाथ जेना कोनो सिद्धक हाथ होनि। मरगिल्लीकेँ कहैत अछि सुखलो गाछ जँ ओ कतहुँ रोपि दैत छलथिन तँ ओ जिब उठैत छल। लहलहा जाइत छलैक। स्थिति ई भऽ गेलनि जे बच्चा झा सदैव अपन काँख तर एक घसकट्टा हाँसू, आ खुरपी रखने रहैत छलाह।

बच्चा झाकेँ कम चास छलनि। ओहिमे ओ जी जान सँ लागल रहैत छलाह। हुनकर खेत देखला सँ लगैत छल जेना कोनो परिश्रमी कोइरी परिबारक खेत हो। माटिकेँ कोदारि सँ तामि, बना गहुमक चिक्कस जकाँ मेही बनेने रहैत छलाह। हुनकर परिश्रम आ समर्पण सँ प्रभावित भेल भू-देवी अन्न आ ओ जे कोनो पदार्थ लगबैत छलाह तकर फसलक वृद्धि कतेक गुणा अधिक कऽ दैत छलथिन। बच्चा झा अनुभवक मौसम विज्ञानी छलाह। डाक भट्टरी जकाँ वसातक रुझान, चिड़ै केर

बाजब, जानवरक चिक्करब, मेघक ठनकब, देखि अनुमान लगा लैत छलाह जे एहि साल अतिवृष्टि हएत अथवा अनावृष्टि। आ फेर ओही हिसाबे कोन फसलकेँ खेती करताह से निर्णय लैत छलाह। बच्चा झा जतबे काल सुतैत छलाह ततबे काल आराम आ ओकर बाद केबल परिश्रम। ओ अनेड़े ककरो सँ बात नहि करैत छलाह। ककरो कुचर्य करब अथवा विवाद आ कुतर्क करब हुनक संस्कार नहि छलनि। लोक अगर हुनका पर बातो बनबैन तँ ओहि दिस सँ जेना ओ कान मुइन लैत छलाह आ आँखि बन्द कऽ लैत छलाह। जखन प्रचण्ड रौदक बेरूपहर लोक अपन दरबज्जा पर अथवा कोनो गाछक छाहरि लग बैस बियनि हौंकैत छल, बच्चा झा धरतीपुत्र बनल जेठक बताह भेल प्रचण्ड रौदकेँ चैलेंज करैत माथ पर मुरैठा बन्हने कोदारि सँ खेत तमैत रहैत छलाह। आगि, पानि, पाथर, बरखा, बेकाल, भूत, प्रेत जेना सभ हिनक दृढ़ संकल्पक समक्ष हारि मानि लेने हो! ओ कमे वयसमे कर्म पुरुख बनि गेल छलाह। छोटे बयसमे बिआह भऽ गेल छलनि। हुनकर पत्नी परसौनी गामक छलथिन। पत्नी सेहो उद्यमी, मृदु भाषिणी, गृहकार्यमे दक्ष छलथिन। बाहर सँ बच्चा झा कमा कऽ आनथि आ ओकर सही रख रखाव आ ओरियान हुनक पत्नी करैत छलथिन।

समय चलैत रहलैक। बच्चा झा दूनू प्राणी अपन धुनमे लागल रहलनि। ओ पूर्ण निष्ठावान कृषक छलाह आ अपन काजकेँ भगवानक आराधना मनैत छलाह। आवश्यकता मात्र वस्त्र - धोती पहिरैत छलाह। महर्षि कणाद जकाँ एक-एक कणक सम्मान करैत छलाह, ओकर महत्व बुझैत छलाह आ बहुत चतुरताक सँग दक्ष किसान जकाँ ओकर संचय आ संग्रह दुनू प्राणी मिल करैत छलाह।

किछु दिनक बाद एक दिन एहनो भेलनि जे पहिल बेर बच्चा झा एक छोट खेत किनलाह। ओ दिन बच्चा झाक जीवनक सभसँ सुखद दिन छलनि। ओहि दिन सँ प्रगतिक बाट पर निस्सन डेग दऽ देलनि। ओहि दिन हुनकर जीवनक विकासक द्वार खुजि गेलनि। ओहि दिन ओ बच्चा सँ बच्चा बाबू होबक बिया रोपि देलनि। ओ युग पुरुष आ ग्राम्य पुरुष होमाक जोगार कऽ लेलनि। ई बात भले पढला आ सुनला सँ दतकट लगैत हो, मुदा अरेड़क लोक बुझैत अछि जे बच्चा झा एक जिबैत किंवदंति छथि। ई बात अगाक प्रसंगक वर्णन सँ स्पष्ट भेल जाएत।

समय चलैत रहलैक। बच्चा झा अपन परिश्रममे कहियो कपची नहि भेलाह। धरती सँग धरतीपुत्र बनि लागल रहलाह। खेत पर खेत किनैत रहलाह। आड़ि-धूर पर गाछ लगबैत रहला। कलम गाछी अलग लगेलनि। गाछ सभ हुनक विकासक साक्षी बनैत लहलाहइत रहलनि। पल्लव, डारि, मज्जर, टुस्सी, फूल, फल सँ भरैत रहलनि। जँ-जँ अपन रोपल गाछ आ अपन जोतल-कोदल, कोरल खेत आ खेतक चास देखथि तँ सभ थकान दूर भऽ जानि। स्फूर्ति आबि जानि। नव योजनाक निर्माण केनाइ शुरू कऽ देथि। स्थिति नीक सँ सर्वोत्कृष्ट भेल गेलनि।

आब बेटा सभ सेहो योग्य होमऽ लगलनि। बाहिं पूरे लेल तैयार भऽ गेल छलनि। बच्चा झाकेँ चारि पुत्र भेलथिन:

रामचन्द्र झा
हरिश्चन्द्र झा
देवचन्द्र झा उर्फ़ धाबले झा
उदय चन्द्र झा

चारू बेटा सुन्दर, आ सभ्य आ पिताक आज्ञाक पालन करक हेतु सदैव तत्पर। देखैत-देखैत बच्चा झाकेँ एक सए बिघा सँ उपर जोतसिम जमीन भऽ गेलनि। घर द्वार सेहो पक्का केँ भऽ गेलनि। विनम्रता एखनो ओहिना रहलनि।

अरेड़ गाममे मिडिल स्कूल, बेसिक स्कूल, प्राइमरी स्कूल, संस्कृत विद्यालय तँ रहैक मुदा हाई स्कूल नहि रहैक। एकर दुष्परिणाम इ भेलैक जे दस टामे छह टा बच्चा हाई स्कूल नहि जाइक। ताहि समय हाई स्कूल हेतु अरेड़क विद्यार्थी सभकेँ लोहा हाई स्कूल जाई पड़ैक। लोहा हाई स्कूल अरेड़ चौक सँ साढ़े चारि किलोमीटर छैक।

संयोग सँ 1955 ईस्वीके बाद अरेड़क इतिहासमे एक नव रत्नक उदय भेलैक। ओ नव रत्न छलाह विश्वम्भर झा। विश्वम्भर झा बच्चा झाक जेठ भाई रत्ते झाक पौत्र आ घुरण झाक पुत्र छलथिन। कहैत चली जे घुरण झाक दोसर विवाह दरभंगा जिलाक भुसकौल गाम छलनि। घुरण बाबूक पत्नी डॉ शुभद्र झाक सारि छलथिन। विश्वम्भर झा राजनीतिमे साकांक्ष छलाह। गाम आ अगल-बगल केर लोक हेतु

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि लेल सतर्क रहैत छलाह। हुनके प्रयास सँ अरेड़मे पोस्ट ऑफिस स्थापित भेल। रोजगार लेल ओ खादी भण्डारक स्थापना केलनि। खादी भण्डारमे स्त्रिगन सभ सूत काटय लागलि। बुनकर सभ बुननाइ शुरू केलक। सरिसभक तेल पेड़ेनाइ प्रारम्भ भेलैक। लोक विश्वम्भर झाक बात पर, हुनक कर्म पर विश्वास करय लागल।

विश्वम्भर झा नव-नव बात आ कायक्रम अरेड़ आ पास पड़ोसक गाम लेल करैत रहला। हुनकेँ समयमे बिजली सेहो आबि गेलैक।

विद्यार्थी सभकेँ पढबा दिस अभिरुचि होइक ताहि लेल विश्वम्भर जी पुस्तकालय अभियान शुरू केलनि। अरेड़, बेलोजा आदि गामक युवक सभ हुनका संगे पुस्तकालय आन्दोलनमे लागि गेल। खादी भण्डार आ पुस्तकालय दुनू संसथान लेल अपन परिवार सँ जमीन दान केलनि आ संस्थाक पजीकरण भेलाक बाद ओकर गृह निर्माण भेलैक। अरेड़क भाग जेना एकाएक जागि गेलैक। राजनीति जगतमे विश्वम्भरजी उदीयमान नक्षत्र बनि उगलाह। हुनक यश आ कर्मठताक ध्वजा पटनाकेँ कहैत अछि दिल्ली धरि पहुँच गेल। ललित नारायण मिश्र सनहक नेता सेहो विश्वम्भर जी सँ बहुत प्रभावित भेलाह। इंदिरा गान्धी सँ सेहो भेट करा देलथिन। कांग्रेस पार्टीमे जानल नाम भऽ गेलाह विश्वम्भर जी। पूरा गाम हुनकर अप्पन छलनि। खादी भण्डार चलि चुकल रहैक, एक लघु मुदा विलक्ष्ण पुस्तकालयक निर्माण भऽ गेल रहैक। पुस्तकालयमे वाचनालय अर्थात रीडिंग रूम अलग सँ बनल रहैक। किछु छात्र सभ ओकर संचालन केर जिम्मा लेलनि। पुस्तकालयकेँ आगा आ कातमे एक हरियर घास सँ भरल मैदान बनलैक। ओहि मैदानमे युवक आ छात्र सभ वोली बॉल खेलाथि। एक नव सभ्य, शिक्षित समाज होबाक दिशामे पवनक वेग सँ आगा बढि चुकल छल अरेड़। गरीब घरक स्त्रिगन सभ चरखा चला नीक आमदनी केनाइ शुरू केलनि। डाक घर आब बीच हाट सँ नव निर्मित खादी भण्डारक प्रांगनमे पक्का घरमे आबि गेल छलैक। पुस्तकालय आ खादी भण्डारक परिसर रंग विरंगक फूल, फल आ गाछ सँ सुशोभित भऽ रहल छलैक।

कहि चुकल छी जे अरेड़मे हाई स्कूल नहि भेला सँ विद्यार्थी सभकेँ बहुत दिक्कत होइक। लोहाक बाद रहिकामे सेहो स्कूल भऽ गेल रहैक मुदा अरेड़मे हाई स्कूल एखनो धरि नहि रहैक। इ बात 1963 ईस्वीक अछि। किछु छात्र अपन समस्या एक दिन विश्वम्भर जी लग रखलनि। विश्वम्भरजी बात पर गम्भीर भेलाह। तुरत ओकर जोगारमे लागि गेलाह। जखन पता केलाह तँ ज्ञात भेलनि जे स्कूल लेल एक बिघा जमीन आ दस हजार नगद जमा भऽ जाइक तँ सरकार सँ हाई स्कूल केर मान्यता भेट जएतैक। मतलब भेलैक जे कम सँ कम एक बिघा सड़कक कातक जमीन दस हजार टका केर डिपाजिट आ पन्द्रह हजार टाका हाई स्कूल केर भवन लेल तुरत चाही। प्रश्न इ ठाढ़ भेलैक जे अतेक जमीन आ पाई के देतैक? विश्वम्भर झा बहुत सोचमे पड़ि गेलाह मुदा विचलित नहि भेलाह। हुनका विश्वास रहनि जे एकर कोनो ने कोनो जोगार अवश्य भऽ जेतैक।

एक दिन गामक लोक सभहक एक बैसार भेलैक। सभ गणमान्य लोकनि लग विश्वम्भर झा हाई स्कूल केर प्रस्ताव रखलनि। सभ अहि प्रयास केर स्वागत केलनि। आब समस्या रहैक जे जमीन के दान करत? अहि प्रश्न पर सभ चुप। गामक सभ सँ प्रतिष्ठित लोक आ डीही छलाह रामचन्द्र झा उर्फ़ रामबाबू। रामबाबूकेँ पक्की सड़कक पच्छिम दिशामे पर्याप्त जमीन छलनि। विश्वम्भर झा रामबाबू सँ स्कूलक जमीन दान करबाक निवेदन केलथिन मुदा रामबाबू साफे जमीन देमा सँ मना कऽ देलथिन। आब की हो? लोक सभ आपसमे घेंघाउज करऽ लागल। ओही क्षण संयोग सँ बच्चा झा अपन खेत सँ घर दिस जा रहल छलाह। लोकक भीड़ आ हल्ला देख जिज्ञासा केलथिन: “कोन बातक भीड़ छैक?”

विश्वम्भर झा आगा अबैत उत्तर देलथिन: “बाबा, अरेड़मे हाई स्कूल नहि अछि। अहि सँ गामक विकास जेना अवरुद्ध भेल अछि। एहिलेल आइ हम सभ जमा भेल छी। रामबाबू सँ जमीन लेल निवेदन हमरा लोकनि केलहुँ मुदा ओ सोझे नाठि गेलाह। कहि देलनि जे कोनो हालातमे जमीन नहि देताह।”

बच्चा झा: “कतेक जमीनक दरकार अछि बाऊ?”

विश्वम्भर झा: “एक बिघा जमीन आ दस हजार टका केर डिपाजिट अत्यावश्यक छैक बाबा। ओकरा बिना फ़ाइल नहि खोजल जा सकैत छैक।”

बच्चा झा पांच मिनट लेल गुम भऽ गेलाह। गुमसुम भेल मोने मोने किछु सोचैत रहलनि। फेर हुनकर कपार पर एक आभा चमकि उठलनि। ओ बाजि उठलाह: “ठीक छैक हम एक बिघा जमीन आ दस हज़ार टका दैत छी। तुरत काज आगा बढ़ाउ।”

बच्चा झा केर इ वचन सुनतहि सभहक मोन प्रसन्न भऽ उठलैक। तुरत एक कमिटी बनलैक जकर सचिव विश्वम्भर झा बनलाह। बच्चा झा एवं अन्य गणमान्य लोकनि ओकर सदस्य सेहो भेलाह। बच्चा झा तीन दिनक भीतर जमीन केर काग़ज़ बना देलथिन आ दस हज़ार टका दऽ देलथिन। काज शुरू भऽ गेलैक। अरेड़ आ अगल-बगल केर योग्य आ गुणी लोककेँ शिक्षक नियुक्त कएल गेलैक। बादमे गामक आनो लोक सभ जमीन देलथिन। चूँकि सर्वाधिक जमीन आ पैसा बच्चा झा सँ भेटलैक ताहिं हाई स्कूलक नाम भेलैक बच्चा झा जनता उच्च विद्यालय अरेड़।

स्कूलक मान्यता तँ भेट गेलैक मुदा भवन निर्माण लेल मुद्राक अभाव बनले रहलैक। एकबेर बच्चा झा फेरो बीड़ा उठेलनि आ दस हजार टका भवन निर्माण लेल देलथिन। भवन बनलैक मुदा लेबोरेटरी, पुस्तकालय आदि लेल एखनो पैसाक दरकार छलैक। विश्वम्भर झा केँ विश्वास छलनि जे गामक लोक सहयोग करथिन आ सभ किछु भव्यताक संग सम्पूर्ण भऽ जेतैक। काज शनैः-शनैः आगा बढ़ि रहल छलैक। अरेड़मे हाई स्कूल, पुस्तकालय देखि, लोकक रुझान देखि, छात्र सभहक मुश्कान देखि एना लगैत छलैक जेना विद्याक देवी सरस्वती प्रसन्न होथि। सभ किछु नीक सँ चलि रहल छलैक। एकाएक एहेन ने प्रचण्ड हवाक बिहारि एलैक जे सभ किछु उखाड़ि देलकैक। सभ खोता उजड़ि गेलैक। चिड़िया उड़ि गेलैक! महावज्र खासी पड़लैक। विश्वम्भर झा एकाएक वीमार पड़ि गेलाह। बहुत सीरियस भऽ गेलाह। जाँच पड़तालमे पता लगलनि जे पेटमे अल्सर छनि। तुरत ऑपरेशन केर जरुरत पड़लैक। 1969 ईस्वीमे छठि पाबनि केर खरना दिन हुनक ऑपरेशन भेलनि। ऑपरेशन केर बाद एकहुँ क्षण लेल होश नहि एलनि। स्थिति विकराल भेल गेलनि। अंततः दरभंगा केर डॉक्टर सभ आश छोड़ि देलनि। आ इमहर अरेड़ गामक लोक छठि पाबनिक संझुका अर्घ दऽ रहल छल आ दरभंगा केर हॉस्पिटलमे

इन्टेन्सिव केयर यूनिटमे अरेड़क गौरव आ भविष्यक आश विश्वम्भर झा मात्र 37 वर्षक अवस्थामे अपन प्राण त्यागि देलनि। अरेड़ अनाथ भऽ गेल। मिथिलाक दोसर गाममे भोरुका छठिक अर्घ चलि रहल छल, लोक आनंद मंगल गाबि रहल छल; एकर विपरीत अरेड़मे मातम केर वातावरण छल। विश्वम्भर झाक चिता भोरे भोर धू-धू जरि रहल छल। लोकक तँ की कहब लगैत एना छल जेना खादी भण्डार, पुस्तकालय, डाक घर आ हाई स्कूल सभ भवन आ धरती कानि रहल अछि! एहनो कतौ अनर्थ भेलैक अछि! ओह विधाता ओह! सभ चौपट्ट! शायद विश्वम्भर झा अतबे दिन लेल अरेड़क धरती पर अवतरित भेल छलाह।

समस्या आब इ भेलैक जे हाई स्कूल केर की हएत? इ कोना आगा बढ़त? सरकार सँ कोनो अनुदान भेटनाइ शुरू नहि भेल रहैक। भवन निर्माणक काज सेहो पूरा नहि भेल रहैक। समिति केर सदस्य सभ उदासीन भऽ गेल छलाह। एहेन स्थितिमे अस्सी सँ अधिक वयस भेलाक बादो बच्चा झा आश नहि छोड़लनि। ओ यद्यपि पढ़ल-लिखल नहि छलाह तथापि हाई स्कूल रूपी यज्ञक अनुष्ठानक स्वयम जिम्मेदारी लेलाह आ तत्क्षण विद्यालय समिति केर सचिवक भार स्वीकार केलनि। फेरो पैसा आ जमीन देलथिन। लोक सभ सँ सेहो मदति भेटलनि। स्कूल साकार भऽ उठल। चहुँ दिश सँ बच्चा सभ आबए लगलैक। बच्चा झा ताबत धरि सचिव बनल रहला जाबत धरि स्कूलक सरकारीकरण नहि भऽ गेलैक। जखन स्कूलकेँ सरकारीकरण भऽ गेलैक तँ ओ समिति सँ हटि गेलाह। किछु वर्षक बाद ओ भरल पुरल परिवार – पुत्र, पौत्र, पौत्री, परपौत्री सभकेँ रहैत एहि नश्वर कायाकेँ छोड़ि अनश्वर संसारमे चल गेलाह।

मरैत तँ सभ अछि। जकर सोइरी होइत छैक तकर सारा सेहो बनैत छैक। राजा, रंक, फ़क़ीर कियोक एकरा सँ वंचित नहि भेल अछि। बच्चा झा सेहो मृत्युक प्रजातान्त्रक पालन केलाह आ गोलोकवासी भेलाह। मुदा अपन कृति सँ, विनम्र स्वाभाव सँ, परिश्रम सँ, ईमानदारी सँ अमरत्वक पदवी पेलाह।

अरेड़ हाई स्कूल बहुत नाम केलक 1975मे राजकिशोर मिश्र मेट्रिक केर परीक्षामे पूरा बिहारमे नवम स्थान आ 1979 मे ओंकार नाथ मिश्र सातम स्थान आनि एहि स्कूल, एकर शिक्षक, आ बच्चा झाक नामकेँ विख्यात केलाह। हम,

कैलाश कुमार मिश्र चूँकि सभ दिन झारखण्डमे अपन पिता संग रहलहुँ ताहिं ओतय पढ़बाक अवसर नहि भेटल। हमर जयेष्ट भ्राता नारायण मिश्र बच्चा झा जनता स्कूलक छात्र छलाह।

आइ जखन बच्चा झाक बात करैत छी। हुनका श्मरण करैत छी तँ लगैत अछि जे ठीके तँ कहल गेल छैक जे कृति करैत छथि सएह जीबैत छथि। बच्चा झा कृति पुरुख छलाह ताहिं जीबैत छथि आ भविष्योमे जीबैत रहता। पुण्यात्माकेँ विनम्र श्रधांजलि। एहि तरहे दुनू बच्चा झाक गौरव इतिहास सम्पूर्ण भेल।

अरेड़क प्रसंग अनेक अछि।

6

अरेड़क लोक इतिहास आ महादेव स्थान

अरेड़ हमर गाम अछि। जन्मभूमि अछि। हमरा गामक अथवा कोनो भौगोलिक क्षेत्रक एथनोग्राफी कोना तैयार करी तकर आधार अछि। अरेड़ हमरा सँ दूर अछि तथापि नजदीक अछि। अरेड़ हमरा नेटिव एथनोग्राफर बनबैत अछि। अरेड़ हमरा लेल प्रशिक्षण शिविर अछि। हम गामक बात तखन करब जखन अरेड़कँ बुझब। अरेड़क लोक इतिहासक जे लोक परंपरामे अछि, वाचन परंपरामे अछि मुदा लेखन परंपरामे नहि अछि। लोकमे बात रहब बहुत नीक बात अछि, कारण, नीक बात, नीक काज, नीक घटना, नीक कृतिकेँ लोक सदैव मन मस्तिष्कमे बेर-बेर स्मरण करैत याद रखैत अछि। यूनान केर महान दार्शनिक सुकरात लिखबामे नहि विश्वास करैत छलाह। ओ कहियो कोनो बात नहि लिखलनि। हुनकर शिष्य सभ जे हुनकर शिक्षाकेँ क्लास नोट बनबैत छलाह सएह उपलब्ध अछि। सुकरात प्रयोजन सँ नहि लिखैत छलाह। हुनकर इ मानब छलनि जे लिखला सँ बात छोट भऽ जाईत अछि। लोकक माथा सँ विस्मृत भेल जाईत अछि। बात लोक परंपराक जीवंतता सँ संग्रहालय केर वीथिकामे टंगा जाईत अछि। पाण्डुलिपि अथवा पोथीमे मुना जाईत अछि। जिवंत परम्परा सँ जीवाश्म भऽ जाईत अछि। अपन सहजता, अपन प्राण, अपन सनातन स्वरुप खत्म कऽ लेत अछि। एहि बातक भान हमरा तखन भेल जखन हम अरुणाचल प्रदेशक खामती जनजाति समूह संगे काज करैत रही। खामती सभ बौद्ध धर्मक अनुयायी भऽ गेल छथि। खामती सभमे जखन ककरो सन्तान होइत छैक, कोनो घर द्वार बनैत छैक, ककरो विवाह होइत छैक, कोनो सदस्यक निधन होइत छैक तँ लोक एक बौद्ध मठ पर अबैत अछि आ मठक संत सँ मठमे अध्ययनरत विद्यार्थी (नेना मोंक) द्वारे भगवान बुद्धक देशना केर पाण्डुलिपिकेँ लिखक लेल कहैत छैक। जकरा जतेक श्रधा से ओतेक अधिक पांडुलिप केर सच्ची प्रतिलिपि तैयार करबैत अछि। ओतय एक समस्या रहैक जे

हरेक तीन चारि वर्ष पर हजारों केर संख्यामे पाण्डुलिपि ओतय जरा देल जाईत रहैक। हमरा कहल गेल जे अहाँ देखू जे कोना लोक ओहि पाण्डुलिपिक रक्षा करत? हम गेलहुँ। हमरा ओहि मोनास्ट्रीमे एक गोल आ पैघ भंडार घर भेटल जाहिमे लोक पाण्डुलिपि रखैत छलैक। लगभग 2000 पाण्डुलिपि जमा भऽ गेल रहैक। करीब 15 विद्यार्थी आरो लिखबामे मगन रहैक। पता चलल जे मोनास्ट्री केर सभ व्यवस्था पाण्डुलिपि केर प्रतिलिपि सँ संचालित होइत छैक। आ जखन ओ भंडार घर उमटाम भऽ जाईत छैक तँ लोक सभ पाण्डुलिपिकेँ बाहर निकालि पूजा, अर्चना, तंत्र, मंत्रक सहारा लेत ओहि ढेरमे आगि लगा देत छैक। हमरा संगे संयोग सँ कँजेर्वेशन केर एक जानकार गेल छलाह। इ बात सुनिते देरी ओ माथ पकड़ि लेलनि। हताश होइत हमरा कहए लगलाह – "सर! एहि पर शीघ्र प्रतिवंध लागब जरुरी अन्यथा सभ पाण्डुलिपि खत्म भऽ जेतैक।" मुदा हम अहि व्यवस्था सँ मुदित रही। हम हंसय लगलहुँ। फेर हुनका संबोधित करैत कहय लगलहुँ: "सुनु, इ पाण्डुलिपि जरेनाइ अपना आपमे संरक्षण छैक।" ओ तामश आ विस्मय सँ हमरा दिस आँखि फाड़ि देखय लगलाह। आब हम अपन बात स्पष्ट करय लगलहुँ: "देखू, अतय इ परंपरा जागल छैक। लोक आबि रहल छैक आ संत सभकेँ पाण्डुलिपि केर कॉपी बनेबाक काज भेट रहल छैक। मतलब सभ अहि परम्पराकेँ जिया रहल छैक। फेर कतेक पाण्डुलिपि केर ढेर मोनास्ट्री रखतैक? इहो बात नहि छैक जे पाण्डुलिपिमे किछु नव बात होइत हो। सभ तँ त्रिपिटक केर प्रतिलिपि बनि रहल छैक। तखन अनेड़े ओकर ढेर राखब केर की प्रयोजन?" हमर बात पर मोनास्ट्री केर मुख्य संत मंद-मंद मुस्कान देमय लगलाह। संरक्षक महोदयकेँ सेहो बात स्पष्ट भऽ गेलनि। विद्यार्थी सभ मस्त भेल पाण्डुलिपि केर प्रतिलिपि बनबैत रहल।

मुदा अरेड़ लेल इ बात सही नहि अछि। कियैक? कारण मिथिलाक आन गाम जकाँ अरेड़क लोक सभ सेहो प्रवासी भऽ गेल छथि। अतेक युवक सभक जन्म सेहो प्रवासमे भेल छनि। शिक्षा, दीक्षा सभ प्रवासमे। हुनका सभकेँ अपन गाम, गामक पूर्वज, गामक इतिहास, संस्कृति आ संस्कारक जानकारी होबाक चाही। अरेड़क संबंधमे जे किछु भ्रान्ति अछि तकर निराकरण हएब सेहो अत्यावश्यक। यएह सभ कारने हम अरेड़क लोक इतिहासकेँ अपना जनैत अधिक सँ अधिक प्रमाणिकता

संग टिपैत रहैत छी। चलू फेरो अरेड़ गामक लोक इतिहास दिस किछु साधल डेगे चली। बूढ पुरान आ अनुभवी ग्रामीण सँ बात केला सँ इ तँ स्पष्ट अवश्य भेल जा रहल अछि जे प्रथम पुरुष, अथवा बीज पुरुष जतय पहिल डेग अंडी केर अंडेरक झाड़ी साफ़ करैत धेलनि आ डीह बना डीहक आधार देलनि से भेल अरेड़ डीह। एक बात याद राखू, एखन टोलक निर्माण नहि भेल अछि। डीहमे छी। डीही सकिलबार बड़ उद्यमी छलाह। डीह लग ब्रह्मस्थान स्थापित केलाह। पिंड बनल। पोखरिक निर्माण भेल जाहि सँ पिंडमे व्यास ब्रह्मक पूजा हो। भूमि उपजाऊ छलैक। हुनकर सभहक उद्यम सफल होमय लगलनि। सभ जाति, वर्ग, धर्मक लोक सभकेँ बसेनाई शुरू केलनि। कलम, गाछ, पोखरि बनल। गाम बढय लागल। कहि देने छी अनेक नीक मूल आ वंशक भलमानुष, श्रोत्रीय सभकेँ भगिनमान बनाएल गेल। गाममे प्रतिष्ठा संग बसाएल गेल। गाम एक प्रमाणिक गाम हो ताहि कारणे गामक चौहद्दीमे कायस्थ, मुसहर, चमार, अहीर, डोम, अमात, धानुख, कोईरी, तेली, लहेरी, हलुवाई, मुसलमान (कुजरा), लोहार, हजाम, दुसाध सभ बसल। सभमे अद्भुत सिनेह। आर तँ आर गामक द्वार लग डोमकेँ राखल गेल आ तकरा बाद अमात केँ। कोईरी सभ कबीरपंथी आ साहेब परंपरामे रमल रहलनि। जँ-जँ जनसंख्या बढल गेल लोक डीह सँ अगल बगल दिस टघरैत गेलाह। आ ताहि क्रममे टोल सभ विकसित भेल गेल। अरेड़ डीह आब अरेड़ डीह टोल भऽ गेल। टोलोमे कतेक गच्छ भऽ गेल, जेना दक्षिणवाई टोल (अतय टोलक अर्थ गच्छ बुझी), नेपाली, वयोधा, नवघरिया, नवका पोखरि, हाट आदि। फेर आन टोल जेना पुवारी टोल, विशनपुर, बढ़ूलिया, बलहा, आदि। जेना की कहि चुकल छी जे राजनीती आ व्यवस्थापन हेतु किछु हिस्सा परिसीमनमे कटि कऽ बेलौजा दिस चल गेल आ उत्तर बेलौजा नाम सँ ख्यात भेल मुदा इ नव परिसीमन कागज मात्रमे रहल। ओ सभ एखनो धरि मानशिक आ संस्कृति केर स्तर पर, भोज भात, पूजा पाठ आ सामाजिकता लेल अरेड़क अभिन्न अंग बनल रहल छथि।

आब अबैत छी महादेब स्थान जे आजुक डीह टोल, पुरवारी टोल आ उत्तर बेलौजा केर मिलान केंद्र अछि। आ अतय सँ नहुँ-नहुँ पुरवारी टोलक दुर्गास्थान धरि पहुचब। महादेब स्थान मतलब ओ रम्य जगह जे जलकर, ईनार, फुलवारी,

मंदिर आ विद्या मंदिर सँ सुशोभित अछि। ओ स्थान जतय भगवान शंकर अपन दिव्य स्वरुपमे छथि ताहिं दिवेशर नाथ (कदाचित दिव्येश्वरनाथक अपभ्रंश)। महादेव असगरे नहि छथि। हिनका संग हनुमान, भैरव, आ पार्वती सेहो विराजमान छथि। लगभग 85 वर्ष सँ अतय एक संस्कृत विद्यालय सेहो चलि रहल अछि। एकर स्थापना केना भेल, कोना लोक एकर आस्था सँ जुड़ल तकर सेहो एक रोचक इतिहास आ दन्त कथा भेटैत अछि। से अगर कम सँ कम संक्षिप्तमे नहि कहल जाय तँ बात स्पष्ट नहि हएत।

अरेड़क दिवेश्वरनाथ मंदिर आ समस्त प्रांगन केर स्थापनाक श्रेय संत श्रीपति स्वामीकेँ छनि। के छलाह श्रीपति स्वामी? श्रीपति स्वामी अरेड़ डीह टोलक निवासी छलाह। नैमितिक मैथिल ब्राह्मण परिवारमे जन्म भेल रहनि। इ सभ काश्यप गोत्री छलाह आ हिन्कर मूल छलनि दरिहरे बरगमिया। हिनक पूर्वज बहुत पैघ कर्मकांडी छलथिन। हिनका सभकेँ प्रख्यात गाम सौराठ सँ कर्मकांडक निमित्त अरेड़ आनल गेल छलनि। जन श्रुति कहैत अछि जे हिनकर जे पुरखा अरेड़ एलाह से सौराठ गामक बीज पुरुष भागीरथ दत्त झाक प्रपौत्र छलाह। श्रीपति स्वामी बाल ब्रह्मचारी छलाह। इ तीन भाई रहथि:

- बुद्धिनाथ झा
- जानकीनाथ झा
- श्रीपतिनाथ झा जे बाद मे श्रीपति स्वामी नाम सँ प्रख्यात भेलाह।

कहैत चली जे तीनू भाई बहुत भव विष्णु छलाह। पंडित बुद्धिनाथ झा प्रकांड ज्योतिष छलाह। हुनका दू कन्या भेलथिन। पहिल कन्याक विवाह नरौच बिहारी भेलनि आ दोसर कन्याक विवाह सिमरी (भोज पंडौल लग)। बुद्धिनाथ झाक छोट जमाय पंडित परमेश्वर मिश्र सेहो ज्योतिष आ व्याकरणक विद्वान छलाह आ जखन दिवेश्वर संस्कृत विद्यालय अरेड़क स्थापना भेलैक तँ ओहि मे शिक्षक नियुक्त भेलाह। पंडित बुद्धिनाथ झाक ज्ञान, हुनक ज्योतिष पर अधिकार आदिक अनेक कथा एखनो अरेड़क लोक करैत रहैत छथि। श्रीपति स्वामी केँ दोसर भाई

जानकीनाथ झा पांडित्य कलामे प्रवीन रहथि आ कृषि कार्य पर सेहो ध्यान देथि। पंडित जानकीनाथ झा केर तीन बालक भेलथिन:

- चंद्रकांत झा
- उमाकांत झा
- रमाकांत झा

हुनके सभसँ उतेढ़ आगा बढ़ि रहल छनि। वंशक जानकारी आ लघु वंशावली देबाक उदेश्य मात्र एतबे जे हम जे लोक इतिहास लिख रहल छी तकर प्रमाणिकता बनल रहए।

श्रीपति स्वामी नेनपने सँ भगवान भोलानाथक सेवक छलाह। अहिलोकी संसार, मायामोह सँ हुनका कोनो संबंध नहि छलनि। ओ परम भक्त आ नैमितिक ब्रम्हचारी संत छलाह। सदैव पूजा, उपासना आ भगवत भजनमे मगन रहैत छलाह। विवाह दान नहि केने रहथि। बहुत कम अर्थात जे बात बहुत जरुरी हो ततबे बजैत छलाह। निरंतर साधना, पूजा-पाठ, योग-ध्यान केर बदौलत श्रीपति स्वामी जितेन्द्रिय भऽ गेल छलाह। गाम आ अगल-बगल केर गाम सभमे लोक हुनकर बहुत सम्मान करैत छलनि। लोक कंठ कहैत अछि जे ओहि स्थान लग चारू दिस बोन रहैक। उपर सँ लगातार पीपर आ पाकरिक गाछ। अनेक तरहक सांप कीड़ा सँ ओ स्थान भरल रहैत छल। पुर्णतः भयाबह। उपर सँ बस्ती सँ दूर। कियोक ओतय नहि जाइत छल। जमीन राज सर्किलक (दरभंगा राजक) रहैक। एक राति श्रीपति स्वामी सुतल छलाह। एकाएक अर्ध रात्रिमे कृष्णपक्ष दिन भगवान महादेब साक्षात हुनकर स्वप्नमे एलथिन आ कहलथिन: “पुत्र श्रीपति! इ जगह बहुत दिव्य अछि। अति प्राचीन समयमे अतय हमर मंदिर छल। मंदिर बहुत जाग्रत छल। लोक सभ अतय जुटैत छल। हमर पूजा पाठ होइत छल। जयकारा लगैत छल। भजन कीर्तन होइत छल। शंख, डमरू, घंटी, घंटा आदिक ध्वनि सँ वातावरण उर्जस्वित होइत रहैत छल। एकाएक किछु भेलैक आ सभ किछु ध्वस्त भऽ गेलैक। आब इ भूमि पुनः जागि उठल अछि। आब अरेड़ गामक विकासक समय आबि गेल अछि। लेकिन सर्वप्रथम हमर एक मन्दिर बनब आवश्यक। अहि

परम पुनीत काजक शुरुआत अहिंक हाथे होबाक अछि। अहाँ भोरे सँ अहि काजमे लागि जाऊ।”

भोर भेने श्रीपति स्वामी ओहि स्थान पर गेलाह। भेलनि मंदिरक निर्माण कोना हएत? तथापि कोनो धराने एकटा फ़ुसक झोपड़ी बना देलथिन। किछु दिनक बाद स्वामी जी गामक सभसँ पैघ आ डीहीक दरबज्जा अर्थात स्वर्गीय रामचंद्र झाक (राम बाबू नामे इलाक़ामे जानल जाईत छलाह रामचंद्र झा) पिता स्वर्गीय नौबत झा लग गेलाह। नौबत झा सँ निवेदन केलथिन जे ओ एक मंदिरक प्रांगन लोकक मंगलकामना हेतु ओतय बनबय चाहैत छथि जाहि ठाम मुख्य देवता भोला बाबा रहताह। कनिकाल लेल नौबत झा एहि प्रश्न पर चुप भऽ गेलाह। फेर ओहि भूमि पर अपन नजरि फेरला आ उत्तर देलथिन: “अहाँ जे कहैत छी से तँ ठीक मुदा तीन समस्या हमरा स्पष्ट देखा रहल अछि:

पहिल, इ स्थान गामक आबादी सँ बहुत दूर अछि। ताहि स्थितिमे लोक मंदिरमे पूजा अर्चना करय कोना जायत? स्त्रीगन आ बुढ सभलेल इ आरो कठिन हएत।

दोसर, मंदिर संग पोखरि नहि रहत तँ लोक स्नान, ध्यान, पूजा, पाठ कोना करत?

तेसर, ओहि भूमिमे तँ पीपर आ पाकरिक गाछक बोन छारल अछि। एकौ धुर जगह रिक्त नहि अछि। पीपर आ पाकरि के काटत? जँ नहि कियोक कटत तँ कोना बनाएब मंदिर?”

नौबत झाक चिंता श्रीपति स्वामीकेँ निरुत्तर कऽ देलकनि। बिना किछु तर्क केने अपन दरबज्जा दिस बिदा भऽ गेलाह। एखनो हुनका लागि रहल छलनि जे किछु ने किछु करिश्मा अवश्य हेतैक आ मंदिर बनबे करतैक। ओहि दिन भरि राति श्रीपति स्वामी चिंतित भेल देवाधिदेव महादेबकेँ गोहराबैत रहला: “कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ....”

जेना भगवान शिव हुनकर सभ बात सुनैत छलथिन। एक राति बहुत जोरक अन्हर, बरखा भेलैक। झट्टक बसात अलग। हवा ऐना छलैक जे ओकर गति सँ हाथी हजार लग्गी घिसटा जाय। एकर बादो सुखद संयोग इ रहलैक जे गामक

कोनो लोकक घर अथवा माल घर नहि टूटलैक। भोरमे जखन श्रीपति स्वामी ओहि स्थान पर अपन झोपड़ी निरिक्षण हेतु गेलाह तँ देखैत छथि जे एक कात सँ अनेक पीपर आ पाकरि केर गाछ जड़ि सँ उखरि गेल रहैक। ओहि सभमे किछु पुरातन वस्तु, ईटा आदि सेहो भेटलैक। श्रीपति स्वामीकेँ बुझैत देरी नहि लगलनि जे इ सभ काज महादेब कऽ रहल छथि। आनंदक लहरि हुनकर देहमे जोर मारए लगलनि। श्रीपति स्वामी भाव विभोर भेल "हर हर महादेब" केर नाम लेमय लगलाह। नाचय लगलाह। गाम आबि लोक सभ लग बजलाह जे हुनकर मंदिर परिसर बनेबाक कल्पना आब पूर्ण भऽ जेतनि। महादेब सभ व्यवस्था कऽ देलथिन। गामक लोकक सहायता सँ दोसरे दिन सँ मंदिर निर्माणक काज प्रारम्भ भऽ गेलैक। मंदिर निर्माणमे गामक मधुरी झा मुख्य भूमिका निभेलनि। मधुरी झा पांच भाई छलाह आ सभहक किछु ने किछु भूमिका अवश्य छलनि। मंदिर निर्माण जहाँ मधुरी झा केलथिन ओतहि एकटा पोखरि मधुरी झाक सहोदर बच्चा झा करा देलथिन। हालमे जखन मंदिर केर जीर्णोधारक बात भेलैक तँ मधुरी झाक भाई रत्ते झाक पौत्र डॉ एस एन झा (स्वर्गीय घुरन झाक बालक) करा देलथिन। मधुरी झा कश्यप गोत्री आ सकरारी मूलक छलाह। हिनक पांच भैयारी केर नाम छलनि:

- मधुरी झा
- तोफा झा
- रत्ते झा
- नेबा झा
- बच्चा झा

अहि तरहें ओहि भूमिकें यज्ञ सँ पवित्र कएल गेल। महादेवक मंदिरक संग माता पार्वती मंदिर, हनुमान जीक मंदिर, भैरव मंदिर (जाहि मंदिरमे मंदिर बना काल मुर्ति भैरव केर निकलल किछु भंगणा अवस्था मे सेहो अछि) बनल। तीन टा कमरा अलग सँ बनल जतय संस्कृत विद्यालय चलय लागल। मंदिर दिवेश्वर महादेबक नाम सँ प्रसिद्ध भेल। लोक ओहि स्थानकें महादेब स्थान कहि सेहो संबोधित करैत अछि। विद्यालय केर नाम सेहो दिवेश्वर नाथ संस्कृत विद्यालय

रखल गेल। विद्यालय कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय सँ एफिलिएटेड छल। बादमे अहि विद्यालय केर सरकारीकरण भऽ गेलैक। अतय ऑर्थोडॉक्स अथवा परम्परागत संस्कृत केर शिक्षा संग-संग आधुनिक विषय यथा अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि संग संस्कृत शिक्षा सेहो प्रारम्भ भेलैक। प्रारम्भमे तीन विद्वानकेँ अहि विद्यालयमे पढ़बाक लेल चयनित भेलनि:

- पंडित परमानन्द मिश्र (व्याकरणाचार्य) जे पौना गामक नैमितिक विद्वान छलाह।
- पंडित परमेश्वर मिश्र (ज्योतिषाचार्य) जे श्रीपति स्वामीक जेठ भाय बुद्धिनाथ झाक जमाता छलाह आ भोज पंडौल सिमरीक निवासी छलाह।
- पंडित श्रीकांत मिश्र (साहित्याचार्य) जे बेलौजा गामक छलाह।

बादमे पंडित परमानन्द मिश्रक बालक पंडित रामचन्द्र मिश्र, अरेड़क श्री ध्रुव झा आदि सेहो अहि विद्यालयक शिक्षक भेलाह। मंदिरक प्रांगनमे एक ईनार मधुरी झा बनबा देने छलथिन। आब ओ ईनार प्रयोगमे नहि छैक। ओहि स्थान पर एक चापाकल लागल छैक। बगलमे सुन्दर सनक पोखरि बच्चा झाक छन्हि, पूरवारी कात ब्राह्मणक घर वंगट झा एवं जगदीश झाक वच्चा सभक छन्हि पश्चिम मलहटोली, उत्तरमे विद्यालय / पोखरि, दक्षिणमे आमक गाछी लागल छैक।

श्रीपति स्वामी केर देहावसान भेलाक बाद योगेश्वर झा मंदिरक देख रेख करैत छलाह। ओ प्रति दिन 4:30 बजे सायंकाल बाबाक श्रींगारक हेतु तत्पर भय जाइत छलाह, सरयुग नामक एकटा पुरवारी टोलक मलाह छलाह। हुनका चलबामे कनि दिक्कत छलनि। कारण पैर दोखाह रहनि। सरयुग जीकेँ कोनो बाल बच्चा नहि छलनि। सरयुग धर्मात्मा लोक छलाह आ मंदिरक फूल सभक देखभाल आ मंदिरक साफ-सफाईमे अपन जीवन समर्पित कयने छलाह। सरयुग मलाहक बाबाक चढौना सँ गुजर चलैत छलनि।

विद्यालयक वगलमे एकटा साधुक कुटी छल। ओ साधू अरेड़क सटले गाम धकजरीक छलाह। ओ वीतरागी संत भऽ गेल रहथि। अपन परिवार, दियाद, सभकेँ छोड़ि अतय रहैत छलाह। ग्रामिण लोकनि ओहि कुटिक साधुक आवश्यकताक

पूर्ति करैत छलाह। साधू एवं सरयुग बाबा दिवेश्वरनाथक शरणमे शरीर छोड़लनि। तकर बाद हरि नन्दन झा, गुलाई झा मंदिरक सेवामे राखल गेल छलाह।

एकटा दत्त कथा अछि जे एकटा ब्राह्मण बाबा सँ कोनो कबुला केलथिन्ह ओ पूरा नहि भेलनि तँ टेंगारी सँ बाबाक शिवलिंग पर प्रहार कय देलथिन्ह: "तौ नहि छह ई पाथर थिक, तुरत ओहि शिवलिंग कs भंगुर स्थान सँ रक्तक धार बहय लागल आ प्रहारक वेहोश भय खसि परलाह लोक सभ दौड़ल। बाबाक स्तुति कयलक तखन रक्तक प्रवाह बंद भेल आ प्रहारक उठि बैसलाह। ओहि दिन सँ नितः बाबाक पूजा अर्चनामे जिवन पर्यंत लागल रहलाह। सही अर्थमे जेना कि पहिने कहि देने छी, महादेव स्थान अरेड़ डीह टोल, पुरवारी टोल, आ उत्तर बेलौजाक मिलान केंद्र अछि। इ साक्षी अछि अरेड़क संस्कार, संस्कृत आ संस्कृति सँ लगावक।

पाठकक प्रतिक्रिया

धन्यबाद् प्रिय अनुज कैलाश मिश्रजी, क्षमा चाहव आई सँ 65 वर्ष पूर्व, अहि दिवेश्वर नाथ संस्कृत उच्च विद्यालयक हम छात्र रहि चूकल छी एवं आलेख मे वर्णित पंडित लोकनिक आभार प्रकट करैत छियनि जे संस्कृतक रूचि जगोलनि जे आई तक चहटगर लगैत अछि, अहि विद्यालय सँ हम नविन प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा (साहित्य) सँ कामेश्वर सिह विश्व विद्यालयक अन्तर्गत उत्तीर्ण थिकहु।

ओहि समय मे ततवा विद्यार्थी जूटैत छलाह जे विद्यालयक प्रागण मे 62 हाथक घर वनाओल छल जे खतरा सँ छारल छल, तत पश्चात्यो आगा मैदान मे वगीचा मे कक्षा चलैत छल।

एकटा बंगाली परिवार (चटर्जी) आवि वसल छथि हूनक वाल वच्चा सभ से हो अहि विद्यालयक छात्र/ छात्रा रहि चूकल छथिन्ह (भारती, कल्याणी एवं भाई अश्वनी कुमार चटर्जी)

पूर्ण वर्णनानुसार सूस्कार पंडित लोकनिक द्वारा देल जाइत छल, सभ वर्णक पढवाक व्यवस्था छल फवस्वरूप आई धरि तथाकथित अरेरक मध्य कहियो सामंजस मे कोनो वर्णक संग कहियो किछु नहि भेल अछि। एक दोसरक आदर

अधिकार/कर्तव्य मे कहियो विभेद नहि अछि जखन कि अहि गाम मे मिथिलाचलक वर्णित सभ वर्ण निवाश करैत छथि एक दोसरक खूशी/गम मे सरीक होइत छथि।

हर शुभ/अशुभ कार्यक प्रारम्भ/अन्त माता दुर्गा एवं बाबा दिवेश्वर नाथक दरवार मे दर्शनोपरान्त होइत आवि रहल अछि। 1966 मे अहि स्थान पर विश्वस्तरिय महारूद्र यग्य भेल छल, पंडित, पुरोहित, यग्यकर्ता, प्रवचन कर्ता, किर्तनिया कतहु सँ बजाय नहि परल छल सभ ग्रामिणे छलाह, प्रामिणकता सिद्ध भय रहल अछि जे कतवा यग्य मे सम्मिलित भेल होयता ततवा विद्वद् जन गाम मे छलाह अहि यग्यक आचार्य आलेख मे वर्णित आदरनिय राम चन्द्र झा छलाह।

समय समय पर अहि स्थान पर धर्मिक कार्य सभ होइत रहैत अछि, शिवरात्रि पर सुन्दर मेलाक आयोजन रहैत अछि।

।। जय बाबा दिवेश्वरनाथ ।। – जीवकांत मिश्र

बहुत नीक पौराणिक आ प्रमाणित जीवंत सत्य रचना संग्रहित अड़ेर डीह' क़! जय बाबा देवेश्वर नाथ महादेव। जय अड़ेर' क ग्रामीण जनता।

– सतीश झा

सविस्तर वर्णन। ग्रामगौरवक पीठिकाक परिचायक। सुन्दर। – भीमनाथ झा

हम स्वर्गीय रामाकांत झाक द्वितीय पुत्र बद्री नाथ झा, आहां एहन विद्वानक मुंह सॉ अपन पूर्वजक खास क श्रीपति स्वामीक अलौकिक भक्ति क गुणानुवाद पढि बहुत गौरवान्वित भेलहु। एहि लेखन व फेसबुक पर प्रसारणक लेल अपने के कोटि सह धन्यवाद।

– बद्री नाथ झा

बहुत बढ़िया भाई साहेब ई सभ हमर अरेड़क के धरोहर अछि। – ललित कुमार झा

7

कीर्तिपुरुष बुद्धिनाथ झा आ कीर्तिस्थल पुरवारी टोलक दुर्गास्थान

बुद्धिनाथ झा एकटा दैवीय प्रतिभा केर लोक छलाह। पूजा-पाठ, ध्यान, आ जन कल्याण एतबेए हुनक जीवनक ध्येय छलनि। जँ अरेड़ पुरवारी टोल केर लोक इतिहास बुझऽ चाहैत छी, दुर्गामंदिर केर स्थापना आ ओकर व्यवस्थापन केर दृढ स्वरुप बुझऽ चाहैत छी तँ बुद्धिनाथ झाकेँ फरिछा कऽ बुझऽ पड़त। बुद्धिनाथ झा भौरा झा केर पुत्र आ धुनाई झा केर पौत्र छलाह।

बुद्धिनाथक जन्मक कथा हुनका विशिष्ट बनबैत छनि। ओ कथा बुझबाक हेतु हुनक पिता भौरा झाक संबंधमे किछु जानकारी आवशयक। बुद्धिनाथ झाक पिता भौरा झा तीन भाई छलाह:

- भौरा झा
- जीबनाथ झा
- नाना झा

भौरा झा केर भरल-पुरल परिवार छलनि। पुत्र मात्र एक रहनि ओहो बहुत आयुमे भेल रहनि। एक दन्त कथा केर हिसाब सँ भौरा झा केर प्रथम पुत्रक मृत्यु एक दुर्घटनामे भऽ गेलनि। भौरा झा केर पुत्र रूपमे बुद्धिनाथ झा केर जन्म कोना भेलनि ताहि पर दू टा दंतकथा अछि। यद्यपि दुनू दंतकथामे भौरा झा छथि, हुनकर देवाधिदेव महादेबक प्रति अक्षुण्ण निष्ठा छनि आ बुद्धिनाथ झा कोना जन्म लेलाह तकर लोक इतिहास केर प्रमाणिकता छैक। आब एतय हम दुनू दंतकथाकेँ बेरा बेरी बुझैत छी –

प्रथम दंतकथा

प्रथम दंतकथा केर अनुसार कहल जाइत छैक जे हुनक अर्थात भौरा झाक एक पुत्र छलथिन जे अति बलिष्ठ छलाह। भौरा झा सभ तरहेँ प्रसन्न छलाह। एकबेर भौरा झा केर पुत्र असगर कतहुँ वीरान जगहसँ जा रहल छलाह। हुनका असगर पाबि एक बाघ पाछा सँ आक्रमण कऽ देलकनि, लाख प्रयत्न केर बादो ओ अपना आपकेँ बाघसँ नहि बचा सकलाह आ अंततः बाघ हुनका मारि कऽ खा गेल। दुर्भाग्य सँ भौरा झाक एहि एक मात्र पुत्रक विवाह-दान सेहो नहि भेल छलनि। आब की होएत? घोर अनर्थ भऽ गेल रहै, ताबत भौरा झा ७० सँ अधिक बयस केर भऽ गेल छलाह। हुनका कियोक विचार देलथिन्ह जे ओ बाबाधाम (झारखंड केर बैद्यनाथ धाम) जाथि आ बाबासँ गोहार लगाबथु। की पता भोला बाबा हुनक समस्याक समाधान कऽ देथिन्ह। आब भौरा झा अपन पत्नीकेँ सूचित करैत गाम सँ चुपचाप पैदल बिदा भेलाह बाबाधाम हेतु। ओतय पहुँचलाक बाद बाबा लग पेटकुनिया दऽ देलनि। अन्न-जल तियाइग मात्र बाबा केर गोहराबऽमे लीन भऽ गेलाह। दू दिनक बाद ओतय केर पंडा आ संरक्षक सभ हिनका एक कातमे धकेल देलकनि। कातोमे ई अपन मौन साधनामे लागल रहलाह। किछु दिन बितलाक उपरांत भगवान शंकरकेँ बुझना गेलनि जे "बड़ा हठी लोकसँ पाला पड़ल अछि, ई हठी मैथिल ब्राह्मण बिना अपन इच्छित मनोकामनाकेँ वापस नहि जाएत।" ई सोचैत देवाधिदेव महादेब मुख्य पंडाकेँ स्वपनमे दर्शन दैत निर्देश देलथिन्, "देखू, मिथिलाक कोनो अरेड़ गामक एक अत्यधिक धार्मिक किन्तु घोर हठी मैथिल ब्राह्मण भौरा झा पुत्र कामना हेतु एतय पेटकोनिया देने अछि। अवस्था आब बहुत भऽ चुकल छैक। पहिल पत्नीकेँ आब दोसर पुत्रक योग नहि छैक। एकेटा उपाय शेष छैक जे अपन ई दोसर विवाह करऽ। दोसर विवाह सँ एक पुत्रक प्राप्ति हेतैक। ओ पुत्र धार्मिक आस्था आ सात्विक प्रवृति केर स्वामी हेतैक। लोक कल्याण ओकर जीवनक मूल उदेश्य हेतैक। अहाँ एहि दम्पतिकेँ भोरे-भोर सूचना दियौक जे आब निश्चिंत भऽ गाम जाथि। शीघ्र पुत्र रत्नक प्राप्ति हेतनि।" अतेक निर्देश दैत भगवान् महादेब अंतर्ध्यान भऽ गेलाह।

भोरे भेने मुख्य पंडाजी देखैत छथि जे भौरा झा मंदिरक एक कोनमे पेटकोनिया देने पड़ल हर-हर महादेब केर जप कऽ रहल छथि। पंडाजी भौरा झाकेँ उठहैत, “उठू, आब अहाँक दुखक अंत भेल। सोझे घर जाउ। साल भरिक भीतर एक बालक जन्म लेत। ओहि बालक सँ अहाँक वंश वृद्धि हएत। बालक यशस्वी सेहो हेताह।”

भौरा झा विस्मयकारी मुद्रामे कहलथिन्ह, “ई कोना सँभव छैक? हम जीवनक चारिम अवस्थामे आबि चुकल छी। आब हमरा संतान कोना होयत? अहाँ सभ अपने हिसाबे बात बना रहल छी आ हमरा एतय सँ हटबऽ चाहैत छी।”

पंडा जी आब बात स्पष्ट करैत कहल्थिन्ह, “अहाँ हमर बात ध्यानसँ नहि सुनलहुँ। अहाँक एखन जे पत्नी छथि तिनकासँ दोसर पुत्रक योग नहि अछि। मुदा अहाँ तकर चिंता जुनि करू। महादेब सभ व्योंत लगा देने छथि। अहाँक अतिशीघ्र दोसर विवाह केर लग्न अछि। दोसर पत्नी सँ पुत्र होएत।”

भौरा झा नैराश्यमे उत्तर देलथिन, “आब एहि चारिम अवस्थामे हमरा सँ के ब्राह्मण पिता अपन पुत्रीक विवाह करताह?”

पंडा जीक आत्मविश्वास भरल छलनि। पंडा जी भौरा झाकेँ कहलथिन: “तकर चिंता अहाँ जुनि करू। भोला बाबा सभ व्यवस्था कऽ देने छथि। अहाँ दुनू प्राणी आब प्रसन्न मनसँ गाम आपस जाउ। अहाँ सँ पहिने कन्यागत दरबज्जा पर बैसल हेताह। पहिने जाऊ तँ। ई हमर कथन नहि, साक्षात देवाधिदेव महादेब केर वरदान अछि। स्वयं बैद्यनाथ अहाँ ओतय अहाँक पुत्रक रूपमे जन्म लेताह। आब देरी जुनि करू, जाऊ। हाँ, एक बात ध्यान राखब, पुत्रक नाम बुद्धिनाथ राखब। ई बात कोनो स्थितिमे नहि बिसरब कारण ई निर्देश बाबा बैद्यनाथ सँ आयल अछि।”

आब भौरा झा सभ तरहें अस्वस्त भऽ गेलाह जे हुनक कल्याण हेबे टा करतन्हि। एक बेर पुनः स्नान ध्यान करैत बाबा बैद्यनाथ केर पूजा अर्चना केलनि आ प्रसन्न मन सँ गामक लेल विदा भेलाह। भरि रस्ता नचारी, महेशवानी, आ भांति-भांति केर शिव भजन गबैत बाबाकेँ सुमरैत रहला। घर पहुँचते देरी देखैत छथि जे एक कन्यागत पहुँचल छथि। विवाह तय भऽ गेलनि। कनिकबे दिनक बाद विवाह भऽ गेलनि। सोझे बरखे एक सँतान अर्थात पुत्र जन्म लेलकन्हि। पुत्र केर

जन्म होइते देरी भौरा झाकेँ बाबा बैद्यनाथ केर निर्देश स्मरण भेलनि जे बालक केर नाम बुद्धिनाथ राखक छनि। पुत्रक नाम राखल गेल बुद्धिनाथ।

दोसर दंतकथा

दंतकथा केर दोसर फॉर्मेट जे अरेड़ पुरवारी टोलमे सुनल जाइत अछि तकर हिसाबे भौरा झा केर कोनो पुत्र नहि छलनि। एक दिन भोरमे भौरा झाक पत्नी चुल्हा लेसक हेतु आगि माँगए गेलथिन। जकरा दरबज्जा पर आगि मांगए गेल छलीह से हुनका पाछामे बाजि उठलि: "अजुका दिन ख़राब भऽ जाएत, भोरे-भोर निपुत्रियाही केर दर्शन भऽ गेल।" भौरा झा केर पत्नी ई बात सुनि लेलथिन। ओ बहुत दुखी भेलीह। अपन भाग्य पर पश्चाताप करए लगलीह। चुल्हा पजारनाई, भोजन बनेनाइ छोड़ि देलनि आ घरक एक कोणामे पेटकुनिया दय पड़ि रहलीह। जखन भौरा झा खेत पथार देखि सुनि, स्नान ध्यान केलाक बाद घर अएलाह तँ देखैत छथि जे हुनक आँगन सँ (अर्थात पत्नी) घरक एक कोणमे पेटकुनिया देने पड़ल छथि। चुल्हा मौन छनि। घरक वातावरण खिन्न छनि। भौरा झा अपन पत्नी लग जा पुछलथिन, "की भेल? आई चुल्हा नहि पजरल अछि? किछु बात? मोन ठीक अछि ने? कही तँ तुरत बैद्य जीकेँ बजा कय आनी?"

भौरा झा जखन अतेक बजलाह तँ हुनक पत्नी केर धैर्य केर आरि भरभराकऽ क्षण भरिमे टूटि गेलनि। दहो-बहो नोरे कानय लगलीह। जखन भरि इच्छे नोर बहा कऽ कानि लेलीह तखन अपन पति भौरा झाकेँ कहलथिन, "जनैत छी आई हम बहुत अपमानित भेल छी।"

भौरा झा पुछलथि, "से की, कोन बातक अपमान? के केलक अहाँक अपमान? कहब तखन ने हम बुझब!"

भौरा झाक अर्धांगिनी कनैत उत्तर देलथिन, "आई भोरे चुल्हा पजारबा लेल बुच्ची माय सँ आगि लेबय गेल रही। मुदा घूरैत बेर हमरा ओढ़ होइते ओकर मुँह सँ सुनलहुँ, 'आई भोरे-भोर निपुत्रियाही देखा गेल, आजुक पूरा दिन खराब भऽ गेल।' तखन सँ बहुत कष्टमे छी, हमर मोन तार-तार भऽ गेल अछि। नहि जनि कोन अपराध जे भगवती एकटा संतान नहि देलनि। ओ कोनो अधलाह बात तँ नहिये

कहलक। सत्य बातकेँ कतेक दिन झपबैक? इहो बात तँ सत्य छैक जे बिना पुत्रक पितरकेँ मुक्ति नहि भेटैत छैक!”

भौरा झा कने काल गुम्म भऽ गेलाह। सोचैत रहलाह। फेर भेलनि आब एकर उपाय एकैटा शक्ति कऽ सकैत अछि – बाबा बैद्यनाथ। फेर सोचैत अपन कनिया सँ बजला ,“एक काज करू। जल्दी सँ हमरा चुरा दही भोजन करा दिय’। हम एखने बैद्यनाथ धाम लेल पैदले बिदा भऽ रहल छी।”

चुरा दही भरि इच्छा भोजन केलाक बाद भौरा झा बैद्यनाथ धाम लेल बिदा भेलाह। जखन ओतय पहुँच गेलाह तँ तपस्यामे लीन भेल रहथि। ने खेबाक चिंता ने घर बारक। मंदिर केर कोणमे पेटकोनिया देने मात्र बाबापर ध्यान लगेने रहैत छलाह। महादेबकेँ भेलनि: “ई विचित्र हठधर्मी अछि, एहेन स्थितिमे जँ ई बिना खेने पीने एहि प्रांगनमे रहत तँ एकर मृत्यु निश्चित छैक, आ एना किछु भेलै तँ मंदिर केर अपयश हेतै, आब की होबाक चाही?” भगवान महादेब पंडाकेँ स्वपनमे आबि कहथिन, “कहियो एकरा जे एकरा भागमे संतान योग नहि छैक। ताहिं ई वापस अपन घर चलि जेए।”

प्रात: भेने पंडा भौरा झाके तकैत आयल आ सुचना देत कहलकनि, “बाबा! अहाँकेँ पुत्रक योग नहि अछि। अहाँ गाम वापस चलि जाउ।”

भौरा झा उत्तर देलथिन, “जखन हमरा संतान योग नहिए अछि तखन हम घर जाकय करब की? गाम घरक लोक तँ हमरा निपुत्री कहत। ओहि ताड़ना सँ नीक जे एतहिँ बाबाक शरणमे हम अपन प्राण त्यागि दी। जाह तों महादेबकेँ कहि दिहौन जे भौरा झा मरि जायत से मंजूर मुदा घर वापस नहि जायत। जँ महादेब हमरा सँतान नहि देताह तँ दोसर के देत।”

पंडा तमसा कऽ चलि गेल। भौरा झा फेरो सुति रहलाह। पंडा महादेब लग सभ बात सुना देलकनि। दू तीन दिनक बाद पंडा जी फेरो अएलाह भौरा झा लग। कहलथिन, “सुनू, अहाँकेँ सँतानक योग नहि अछि। एकै टा बातकेँ कतेक बेर बुझाबी अहांकेँ? अहाँ बेकारमे अतए छी। एहि हठधर्मितामे अहाँ अतय मरि जाएब। अहाँ अगर एहेन अवस्थामे एहि प्रांगनमे मरैत छी तँ हमरा सभकेँ जे हएत से हएबे करत, महादेबकेँ सेहो ब्राह्मण हत्या केर पतिया लगतनि!”

भौरा झा एहिपर हंसैत उत्तर देलथिन, “जँ महादेबकेँ ब्रह्महत्या केर डर छनि तँ हुनका हमरा संतान देबाक चाही। जा कहि दहुन महादेवकेँ जे हम कोनो अवस्थामे बिना बरदान लेने वापस घर नहि जायब। एक बात आरो, हम तँ अपन जीवन-मरण अवधारिये लेने छी। अगर तों सभ बहुत परेशान करबह तँ तोरो ठठा कऽ पटकि देबह।”

पंडा जी उत्तर देलथिन, “ठीक छैक। हम बाबा बैद्यनाथकेँ सभ बात बता देबनि। आब ओ जे आज्ञा देताह से अहाँकेँ बता देब।”

ई कहैत पंडा जी पुनः महादेब लग जा सभ बातक सूचना दऽ देलथिन। महादेब पंडा जीकेँ स्वप्नमे निर्देश देलथिन, “ई भौरा झा बहुत हठी भक्त अछि। बिना बरदान लेने ई कोनो अवस्थामे वापस नहि जायत। आब हमरा स्वयं एकरा ओतय पुत्र बनि जन्म लेबय पड़त। अहाँ जाकऽ भौरा झाकेँ सूचना दऽ दियौक जे एकरा प्रथम पत्नीमे पुत्र योग नहि छैक। आब ई सोझे गाम केर रस्ता पकड़ि लियऽ। एकरा गाम पर जाइते देरी फलां गामक कन्यागत एकर दरबज्जा पर अपन कन्या केर विवाहक प्रस्ताव सँग भेटतैक। एक बात आरो कहि दिहक जे विवाह केर सोझे साल एकरा एक पुत्र हेतैक जकर नाम एकरा सभकेँ बुद्धिनाथ राखक छैक।”

पंडा जी भोरे आबिक भौरा झाक सभ बात आ महादेब केर निर्णय बता देलथिन। आब भौरा झाकेँ विश्वास भऽ गेलनि जे महादेब हुनकर अर्जी स्वीकार कऽ लेने छथिन। ओ प्रसन्न मुद्रामे पुनः स्नान-ध्यान करैत महादेबक पूजा केलनि आ गाम लेल बिदा भऽ गेलाह। गाम पर अबिते देरी देखैत छथि जे एक कन्यागत अपन बेटीक विवाह हिनका सँ करेबाक उदेश्य सँ हिनक दरबज्जा पर उपस्थित छलाह। एहि तरहेँ भौरा झाकेँ पुनः विवाह भेलनि आ सोझे साले एक पुत्र जन्म लेलखिन जिनकर नाम महादेबक निर्देश सँ बुद्धिनाथ राखल गेल।

अतय सँ दुनु दंतकथा एक भऽ जाइत छैक।

बुद्धिनाथ दिव्य व्यक्तित्व सँ सँपन्न साक्षात महादेबक अवतार छलाह। लोक श्रुतिक अनुसार बुद्धिनाथ झा जन्मे सँ पुजारी आ नैमित्तिक लोक छलाह। नाम ज्ञाने बुद्धिमान, संस्कारी आ विलक्षण बालक छलाह। नेनपन सँ बुद्धिनाथ झामे जेना कि भगवान शंकर केर वरदान भेटल छलनि धार्मिक कार्य, जनकल्याण केर

कार्य आदिमे मोन लगैत छलनि। भाग्यशाली अतेक रहथि जे लोहा छुला सँ सोना भऽ जाइन। बुद्धिनाथ झा जखन छोटे वयस केर छलाह तखने हुनक पिता भौरा झा स्वर्गवासी भऽ गेलथिन। आब बुद्धिनाथ झा घर आ सम्पति आदिक व्यवस्थापन बहुत सफलता सँ करए लगलाह। सभ व्यवस्थापनमे बुद्धिनाथ झा केर माय अपन पुत्रक सहयोग करैत रहलथिन।

जँ-जँ बुद्धिनाथ नमहर भेल गेलाह तेना-तेना हुनकर व्यक्तित्वमे निखार आबय लगलनि। टोल आ गाम के कहैत अछि अगल-बगल केर लोक हुनक व्यक्तित्व आ दिव्य व्यवहार सँ चमत्कृत छल। किम्बदन्ति अछि जे बुद्धिनाथ झा लग एक बहुत पैघ आ दिव्य बखारी छलनि। जनश्रुतिमे ओ बखारी "लक्ष्मनिया-बखारी"क नाम सँ जानल जाइत अछि। आइयो लोक ओहि बखारी केर चर्चा करैत अछि।

आउ आब किछु लक्ष्मनिया-बखारीक बारेमे जानि ली। नामे गुणे ई बखारी बुद्धिनाथ झा लेल पारस पाथर अथवा कल्पवृक्ष जकाँ छलनि। बहुत यथेष्ट जोतसिम खेत पथार छलनि बुद्धिनाथ झा लग। उपर सँ लोक धान आ अन्य अनाज सवैया आ ड्योढ़ा पर लऽ जाइत छलनि। जखन वापस देबाक समय अबैत छलैक तखन बुद्धिनाथ बाबू ककरो देल गेल अनाजकेँ अपने अथवा अपन नोकर-चाकर सँ नहि जोखबैत छलाह। सोझे कहैत छलथिन: "जाउ, लक्ष्मनिया-बखारीमे खसा दियौक।" आ ओ बखारी अतेक भागवंत जे बुद्धिनाथ बाबूक सभ काज ओहि बखारी केर अन्न सँ भऽ जाइत छलनि। बुद्धिनाथ झा प्रतिदिन फुल, अक्षत, जलसँ लक्ष्मनिया-बखारीक पूजा करैत छलाह। आ लक्ष्मनिया-बखारी हुनकर सभ इच्छा केर पूर्ति कऽ दैत छलनि। बुद्धिनाथ झा केर तीन बालक रहथिन:

- राजा झा
- भाईजी झा
- भागवत झा

तीनु बालक आज्ञाकारी आ पिताक पदचिन्ह पर चलय बला। जे कियोक धान इत्यादि वापस दऽ जाइन तँ बुद्धिनाथ बाबू अपन तीनु बालककेँ निर्देश देने रहथिन

जे "जोखऽ नहि। जे जहिना दैत छह तकरा तहिना लक्ष्मनिया-बखारीमे ढारि दहक। सभ किछु केर पूर्ति ई बखारी कऽ देतह।"

बुद्धिनाथ झा बहुत दिन धरि अपना दरबज्जा पर भगवतीक पूजा करैत छलाह। दुर्गापूजा सेहो बहुत वर्ष धरि करैत रहलनि। हुनक पूजा आ सत्कर्म केर प्रधानता ई छलनि जे ओ सभ काज समाज केर सभ वर्ग, जाति लेल करैत छलाह। कहियो ओ जातिगत, व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक संकीर्णता केर पोषक नहि रहलाह। ओ सामाजिक सद्भाव केर अपना समयमे जीबैत किम्बदन्ति छलाह। बुद्धिनाथ झाके भेलनि जे दुर्गापूजा केर विधिवत आयोजन होबाक चाही जाहिमे सभक सहभागिता हो। स्पष्ट करैत चली जे ताहि समय पुरवारी टोल के कहैत अछि, पूरा अरेड़ गामक चौहद्दी पर कतौ मूर्ति स्थापित कऽ कऽ दुर्गापूजा नहि होइत छल। ककरो ने ककरो तँ एहि परम्पराकेँ प्रारंभ करक छल। एकर प्रारम्भ केलनि बुद्धिनाथ झा। ओ प्रथम बेर दुर्गापूजा अपन दरबज्जा पर प्रारम्भ केलनि। माटिक मूर्ति बनाओल गेल। पंडित जी केर चयन भेल। विधिवत रुपे दुर्गापूजा सँपन्न भेल। अरेड़ पुरवारी टोल आ डीह टोल केर अतिरिक्त अगल-बगल केर लोक सेहो एहि पूजनोत्सवमे अपन सभ तरहक सहभागिता देखोलनि। जतेक अर्थ केर खर्च भेलनि से बुद्धिनाथ झा अपन लक्ष्मनिया-बखारीसँ लेने छलाह। अनेक वर्ष धरि बुद्धिनाथ झा ककरो सँ बिना कोनो आर्थिक सहयोगे असगरे अपन दरबज्जा पर करैत रहला। लोक मान्यता कहैत अछि जे बुद्धिनाथ झा दुर्गापूजा केर प्रारंभ अपन कोनो व्यक्तिगत मनोकामना केर पूर्ति लेल केने छलाह। जखन हुनकर इच्छित मनोकामना पूर्ण भऽ गेलनि तखन हुनका मोनमे एक विचार भेलनि, "यदि दुर्गापूजा केर आयोजन गामक लोक प्रति वर्ष करथि तँ कतेक नीक बात!" ई चिंतन अबैत बुद्धिनाथ झा ओहि पर गंभीर होइत गामक प्रमुख लोक सभकेँ अपन दरबज्जा पर एहि संबंधमे विचार करबाक हेतु बजेलाह। सभकेँ संबोधित करैत कहलथिन, "सुनल जाओ! एखन धरि दुर्गापूजा हम अपन दरबज्जा पर व्यक्तिगत रूप सँ करैत आबि रहल छी। हमर इच्छित मनोकामना पूर्ण भऽ चुकल अछि। अगर अहाँ सभक विचार हो तँ एहन व्यवस्था करी जे सभ वर्ष सनातन रुपे ग्राम्य उत्सव जकाँ एकर आयोजन हो?"

गामक लोक सभकेँ बुद्धिनाथ झा केर प्रस्ताव बहुत नीक लगलनि। ओ सभ तैयार भेला जे एकर व्यवस्थित स्वरुप तैयार हो आ ग्राम्य-उत्सव जकाँ एकर आयोजन हो। तखन बुद्धिनाथ झा कहलथिन जे एक ठाम हुनक साढ़े चारि कट्ठा जमीन छनि ततय दुर्गाजी केर स्थापना हेतनि। मंदिर लग पोखरि केर निर्माण होबऽ लगलैक। पोखरि निर्माणमे जतेक श्रमिक रहैक तकर बोनि प्रतिदिन साँझु पहर कऽ लक्ष्मीनिया बखारी सँ देल जाइक। एक दिन सांझ काल कियो श्रमिक बुद्धिनाथ झाकेँ कहलकनि, “बाबा! आब पोखरि नहि खुना सकैत अछि।”

बुद्धिनाथ झा चिंतित होइत पुछलथिन: “से किएक?”

श्रमिक उत्तर देलकनि: “बाबा बखारी खाली भऽ गेल। आब ककरो बोनि देबा जोग अन्न नहि अछि बखारीमे।”

बिना कोनो डर आ विचलनकेँ बुद्धिनाथ झा उत्तर देलथिन: “अच्छा आई भरि अहाँ सभ सँतोष करू। काल्हि सँ सभके समय सँ बोनि भेट जायत।”

दोसर दिन भोरमे स्नान-ध्यान केलाक बाद बुद्धिनाथ झा बखारी लग गेलाह। दुभि, अक्षत, चानन लगा जल सँ पूजा केलनि। तकर बाद ओहि बखारीकेँ तीन बेर ठोकि देलथिन। बखारी पुनः धान सँ भरि गेल। गाम आ अगल-बगल केर लोक सभ एहि चमत्कारकेँ देखि अचंभित रहि गेल। तहिये सँ एहि बखारी केर नाम लक्ष्मीनिया-बखारी भऽ गेलैक। जाबेत धरि बुद्धिनाथ मिश्र जिलनि लक्ष्मीनिया-बखारी सँ हुनकर सभ काज होइत रहलनि। लोक सभक मान्यता छैक जे लक्ष्मीनिया-बखारी बुद्धिनाथ मिश्र आ हुनक परिवार लेल कुबेर केर भंडार गृह छलनि। बुद्धिनाथ झा केर जीवन बिना दुर्गापूजा, दुर्गाघर, आ लक्ष्मीनिया बोखारी के नहि लिखल जा सकैत अछि। खैर पोखरि केर निर्माण बुद्धिनाथ झा अपन लक्ष्मीनिया-बखारी केर सँचित अन्न सँ केलनि।

एहि तरहें बुद्धिनाथ झा पोखरि आ चारि कट्ठा दुर्गामंदिर केर स्थापना हेतु देलथिन। आब नियमित प्रतिवर्ष दुर्गापूजा केर आयोजन धूमधाम सँ होबय लगलैक जे एखन तक चलि रहल छैक। दुर्गास्थान लग हुनकर साढ़े छ बीघा जमीन आरो रहनि, जेकरा अमात समुदाय केर लोक सभकेँ लेल गाय बरद चरेबा लेल दय देलखिन।

दुर्गापूजा हेतु यद्यपि बहुत दिन धरि एक नियमित पुजारी केर व्यवस्था नहि भेल रहैक। साले-साले जे पुजारी जी उपलब्ध होइत छलाह तिनका ओहि वर्षक पूजा केर सँपादन करबाक भार दऽ देल जाइत छलनि। अनेक वर्ष बितलाक बाद एक प्रसिद्ध आ विद्वान संस्कृत केर ज्योतिषी जे अरेड़ संस्कृत गुरुकुल केर अध्यापक सेहो छलाह, एक प्रस्ताव देलथिन जे आब एक नियमित पुजारीक (यजमान) व्यवस्था भऽ जएबाक चाही। हुनकर बातकेँ गामक लोक गंभीरता सँ लेलक। आ नियमित पुजारी केर खोज होबऽ लागल। किछु दैव सँयोग एहेन भेलैक जे कियो जे एक साल पूजा करथि तिनका परिवारमे किछु ने किछु अनिष्ट होमय लगलनि। सभ संस्कृत केर विद्वान आ पंडित ताहि डरे नियमित पुजारी केर जिम्मेदारी सँ भागय लगला आब की हो? ताहि समय एक युवा पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र जे अरेड़ पुरवारी टोलक नैमित्तिक कर्मकांडी ब्राह्मण छलाह। ओ मूल रूपसँ सौराठ गामक वासी छलाह। बलियासे नरसाम मूल छलनि आ महामहोपाध्याय पंडित राजनाथ मिश्र 'रज्जे' केर वंशज छलाह। पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र नियमित पुजारीक भार बहन करबाक निर्णय लेलनि। यद्यपि प्रथम वर्षमे हुनको सँग किछु अनिष्ट घटना घटित भेलनि मुदा हुनक माय कहलथिन्ह: "जे होबाक छल से भेल, अहाँ पुजारी बला काज करैत रहू। भगवती मंगल करतीह।" मायक वचनकेँ शिरोधार्य करैत पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र लगातार 64 साल धरि दुर्गापूजा केर पुजारीक कर्म अनवरत करैत रहलनि। 1989 इस्वीमे ओ छोड़ि देलथिन। आ 1990 मे स्वर्गवासी भऽ गेलाह। दुर्गापूजा नियमित होइत रहल। पुरवारी टोलक लोक सर्वसम्मति सँ निर्णय लैत रहल जे बलिप्रदान जे मुलतः अष्टमी दिन होइत छैक, मे पहिने डीह टोल आ अन्य स्थानक लोकक हेतैक आ अपन टोलक सभ सँ अंतमे। ई भेल अतिथि भावक सम्मान करब।

समय बितैत गेलैक। पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र आब नहुँ-नहुँ बुढ होइत रहलाह। ६४ साल तक पूजाक भारक बाद हुनका किछु शारीरिक दिक्कत होमय लगलनि। पूजाक आसन पर एक आध बूंद मूत्र हुनक धोतीमे चुबि जाइन जे ओ नहि बुइझ पबथिन। औषधि काज करब बंद कऽ देने छलनि। ताहि समय हुनक पुत्र श्री जीवकांत मिश्र सिंदरीमे (आजुक झारखंड) सरकारी नौकरी करैत छलाह। आब

गामक लोक एक बेर पुनः श्री जीवकांत मिश्रकेँ पुजारी केर भार स्वीकार करबा लेल निवेदन केलथिन्ह। श्री जीवकांत जीक पिता पंडित लक्ष्मीकांत मिश्रक सेहो इच्छा रहनि जे जीवकांत जी अपन सनातनी परम्परा केर निर्वहन करथि। अंततः श्री जीवकांत मिश्र तैयार भेलाह आ साले-साले दुर्गापूजा केर समय छुट्टी लऽ गाम आबय लगलाह आ पुजारीक कार्यक संपादन करैत रहलनि। जीवकांत मिश्र सेहो लगातार 11 वर्ष एहि दायित्वक पालन केलनि तकर बाद हुनक पितियौत श्री प्रेमकांत मिश्र पिछला 25 वर्षसँ दुर्गापूजा केर नियमित पुजारी छथि। निष्कर्ष इ भेल जे पिछला 100 वर्ष सँ एक परिवारक लोक एहि दुर्गापूजा केर नियमित आ अधिकारिक पुजारी रहल छथि। ई परम्परा एखनो अक्षुण्ण छैक।

दुर्गापूजा आ दुर्गा मंदिर केर प्रसँग पुजारी आ पुरोहित केर वर्णन आ इतिहासकेँ अपूर्ण छैक। पूर्णकालिक पुजारी केर दायित्व स्वर्गीय लक्ष्मीकांत मिश्र कोना उठेलनि आ 64 वर्ष धरि स्वयं एहि दायित्वक पालन करैत अपने सोझामे अपन पुत्र पंडित जीवकांत मिश्रकेँ सुपुर्द केलिनि से कथा कहि चुकल छी। पंडित जीवकांत मिश्र एग्यारह वर्ष धरि एहि दायित्व केर विधिवत पालन करैत अपन पित्तयौत श्री प्रेमकांत मिश्रकेँ देलाह। पंडित प्रेमकांत मिश्र पिछला 25 वर्ष सँ पुजारीक भूमिका निभा रहल छथि। एखनो प्रति वर्ष दुर्गापूजा केर समय पंडित जीवकांत मिश्र गाम अवश्य जाइत छथि आ यथासाध्य अपन अनुज पंडित प्रेमकांत मिश्रकेँ अनुष्ठान, पूजा, अर्चना आदिमे सहयोग करैत छथि।

पुरोहित केर भूमिका आ नियमित पुरोहित केर चयन कोना भेल ताहिकेँ बुझबाक हेतु फेर कने प्रारंभ दिस घुस पड़त। जखन पंडित लक्ष्मीकांत नियमित पुजारी भऽ गेलाह तँ गामक लोककेँ भेलनि जे आब नियमित पुरोहित केर चयन सेहो भऽ जेबाक चाही। ताहि समय एक पंडित कंतू मिश्र नामक सज्जन पुरोहित केर काज करैत छलाह। बादमे पंडित देवकांत मिश्र जे संस्कृत केर आन विधा संग ज्योतिष केर नीक जानकार रहथि तिनका सँ गामक विशिष्ट लोक सभ नियमित पुरोहित बनवा लेल आग्रह केलथिन। पंडित देवकांत मिश्र वरिष्ठ आ अनुभवी पंडित छलाह। ओ एहि आग्रहकेँ स्वीकार कऽ लेलनि। पंडित देवकांत मिश्र बहुत दिन धरि एहि कार्यक अर्थात पुरोहित्य केर संपादन करैत रहला। ओ जीवनपर्यंत ई काज

केलनि। हुनक मृत्यु केर बाद एक बेर पुनः पंडित कन्तु मिश्रक परिवारक पंडित रामानंद मिश्र जिनका लोक पंडित घोघन मिश्रक नाम सँ जनैत छल, कँ ई उत्तरदायित्व देल जएबाक चाही तकर निर्णय लेल गेल। घोघन मिश्र कोलकातामे पुरोहिती कर्म करैत छलाह। तिनका एक बेर पुनः गामक गणमान्य व्यक्ति सभ निवेदन केलनि जे हुनक घरक खर्चा आ सभ व्यवस्था गामक लोक करथिन ताहि पंडित घोघन मिश्र कोलकाता छोड़ि गाम आबि जाथि। पंडित घोघन मिश्र ई प्रस्ताव स्वीकार कऽ लेलाह आ जीवनपर्यंत पुरोहित बनल रहलनि। पंडित घोघन मिश्रक मृत्यक बाद हुनक पुत्र पंडित बीरेंद्र मिश्र वर्तमानमे पुरोहित छथि।

पुजारी आ पुरोहितमे एक विशिष्ट अंतर ई छैक जे पुजारी साल केर सभ मास आ मासक सभ दिन भगवती केर पूजा अर्चना भोर आ सांझ काल करैत छथि। जखन कि पुरोहित केर काज दुर्गापूजा केर दस दिनक बाद समाप्त भऽ जाइत छनि।

बुद्धिनाथ झाकेँ गामक आ परोपट्टा केर लोक "पूजा-बाबा" कहि बजबैत छलनि। अपन यथेष्ट आयुमे कीर्ति, यश एवं नैमित्तिक जीवन जीबैत बुद्धिनाथ झा स्वर्गवासी भेलाह।

लक्ष्मनिया-बखारी केर संबंधमे एक दंतकथा एखनो धरि गामक लोक कहैत छथि। लक्ष्मनिया-बखारी कखनो खालिये ने होइक। बढले जाइक। जखन बुद्धिनाथ झा केर निधन भऽ गेलनि तखन हुनकर माझिल बालक एकबेर तंग आबि कऽ लक्ष्मनिया-बखारी लग गेलाह। दुनु हाथ जोड़ि निहोरा केलथिन: "हे लक्ष्मनिया-बखारी! आब हम सभ तंग आबि गेल छी। अतेक धान कतऽ राखब। चैन हेरा गेल अछि। अहाँ जाऊ!"

आ लोक मान्यता कहैत अछि जे तहिये सँ लक्ष्मनिया-बखारी केर बरक्कत क्षय होबऽ लगलैक। धीरे-धीरे लक्ष्मनिया-बखारी ख़त्म भऽ गेलैक। ओ स्थान जतय लक्ष्मनिया-बखारी रहैक से एखनो छैक मुदा नहि छैक तँ लक्ष्मनिया-बखारी।

पूजाक रहस्य आ विधान पर एक दंतकथा

बात लगभग 1967–68 इस्वी केर छैक। ताहि समय पुजारी छलाह पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र आ पुरोहित कर्म करा रहल छलाह पंडित देवकांत मिश्र। देवकांत मिश्रकेँ गामक लोक पंडित देवकांत ज्योतिषी कहैत छलनि। ई दुनू गोटे बहुत नैमित्तिक लोक छलाह। पूजा आ अनुष्ठानमे हिनका लोकनि केर निष्ठा आ समर्पण अनुपम छलनि। भेलैक ई जे जखन दुनू गोटे मिल कय निशा पूजा करैत छलाह ताहि काल एकाएक पंडित लक्ष्मीकांत मिश्रक दृष्टि भगवती केर प्रतिमा दिस पड़लनि। बाहरमे, अर्थात मंदिर केर बरामदा पर कुमारि-बटुक केर भोजन होइत रहैक, बाहर महिला सभ गीत नाद गेबामे निमग्न छलीह, स्टेज पर नाच-गान भऽ रहल छलैक। पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र देखैत छथि जे भगवती केर प्रतिमा एकाएक बहुत झुकि गेलनि। झुकब सामान्य नहि छलैक। बहुत झुकल रहैक। ओ चिंतित आ कोनो अनिष्टक डर सँ भयभीत होइत थरथर कापैत पंडित देवकांत मिश्रकेँ कहलथिन: “ज्योतिषी जी यौ! भगवती केर प्रतिमा तँ बहुत झुकि गेल छनि!”

आब की हो? पंडित देवकांत ज्योतिषी सेहो बहुत डेरा गेलाह। दुनू मिलि भगवती केर स्तुति ठाढ़ भऽ कऽ करऽ लगलाह। पंडित देवकांत मिश्र कहथिन: “किछु ने किछु गलती हमरा सँ भेल अछि पुरोहित कर्म कराबक प्रक्रियामे लगैत अछि ताहिं भगवती रुष्ट भऽ गेलि छथि। एकर की समाधान हो ओकरा पर दुनू गोटे चिंतन करऽ लगलाह। गामक लोक सभमे हाहाकार मचि गेल। आब की हो? हे भगवती! रक्षा करू! त्राहिमाम! त्राहिमाम।”

पंडित देवकांत मिश्र आ पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र स्तुति करैत रहला, संगे लोक सभकेँ निर्देश देलथिन जे टोलक जतेक प्रमुख लोक सभ छथि तिनका सभकेँ मंदिर केर प्रांगनमे तुरत बजाएल जाय। सभ कियोक उपस्थित भेलाह। सभ कियो भगवती केर समक्ष हाथ जोड़ने ठाढ़ छलाह। मंत्रक उच्चारण होइत रहल। पंडित देवकांत ज्योतिषी सभ बातक जिम्मेदारी अपना माथ पर लैत रहलाह। कखनोकाल पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र कहथिन: “ज्योतिषी जी, इहो सँभव अछि जे गलती हमरा सँ भेल हो!” खैर पूरा गामक स्त्री पुरुष, बाल, वृद्ध सभ कियोक विनत

भावे भगवतीकेँ गोहराबैत रहल। परिणाम ई भेलैक जे धीरे-धीरे भगवतीक प्रतिमा पुनः सोझ होबय लगलनि। लोक सभ आरो उत्साहित भेल आर्तनाद सँ भगवतीकेँ गोहराबैत रहल आ किछुए घंटामे भगवती अपन स्थान पर आबि गेलीह। ई दृश्य देखि पंडित देवकांत मिश्र आ पंडित लक्ष्मीकांत मिश्रक आंखि आनंदक नोर सँ भरि गेलनि। तपल, स्नेहिल नोर गोल-गोल भेल भगवती केर चरणमे खसय लगलनि। उपस्थित जनसमुदाय, "दुर्गा महारानी की जय" केर नारा सँ वातावरणकेँ रोमांचित कऽ देलनि। आब दुनू पंडित सहित सभकेँ ई विश्वास भऽ गेलनि जे भगवती कोनो तरहक अनिष्ट नहि होबय देतीह।

एहि घटनाक बाद पंडित देवकांत मिश्र आ पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र सभ दिनकऽ आपसमे संवाद करथि जे एना भेलैक कियैक? कतऽ ककरा सँ चूक भेल? आदि-आदि। लक्ष्मीकांत मिश्र कहथिन, "हमरा सँ किछु गलती भेल।" ताहि पर चट दने पंडित देवकांत मिश्र कहथिन, "अहाँ सँ किएक गलती होएत? अहाँ तँ पूजेगरी छी। गलती हमरा सँ भेल अछि। कारण हम पुरोहित छी।" मुदा गलती कतऽ भेल, कोना भेल, ककरा सँ भेल तकर सूत्र नहि भेट रहल छलैक। अंतिममे मूर्ति विसर्जन केर दिन मूर्ति केर बेस केर पूजा सँ पूर्व जखन बेलक गठरी पुजेगरी अर्थात पंडित लक्ष्मीकांत मिश्र खोलऽ लगलाह तँ देखैत छथि जे एकै टा बेल बान्हल रहैक। एकटा बेल रहबे नहि करैक। ई स्थिति देखि पंडित देवकांत मिश्र अचंभित होइत जमीन पर धराम सँ खसि पड़लाह। लोक सभ उठाबैत पुछलकनि, "की भेल?"

तखन ओ कहलथिन, "औ बाबू! बिघटन तँ अतए अछि।" बादमे निष्कर्ष ई भेलैक जे बेलनोती केर बाद कियोक तंत्र विद्या लेल किछु प्रयोग केने रहैक। ताहि एक बेल बिला गेलैक। भगवती बहुत दयावंत छलीह ताहिं ने पुजारी, ने पुरोहित आ ने गामक लोककेँ कोनो अनिष्ट होबऽ देलथिन। तकरा बाद ई निर्णय भेलैक जे जिनका दरबज्जा पर बेलक गाछ नौतल जेतनि ओतय भरि राति लोकक पहरा रहतैक जाहि सँ कियो कोनो तंत्र-मन्त्र-जादू-टोना नहि करय।

8

दुर्गामंदिर आ पंडित रत्तेलाल झा वैदिक

चलू फेरो अरेड़ गाम चली। लोक इतिहास लोक कंठ सँ बूझी। आई अरेड़क दुर्गा स्थान दिस चलैत छी। लोकक डेगे चलैत छी। लोकक देखल बात लिखैत छी जे एखन धरि दुर्भाग्य सँ आंखन देखी आ कानक सुनल बनि लोक कंठमे अछि। अगर अहि बात सभहक ईमानदारी सँ दस्तावेजी करण नहि भेल त बहुत बात कालक गाल मे बिला जायत। अरेड़क दुर्गा स्थान (पुरवारी टोल) अपन लोक सँस्कार, गामक विद्वान पंडित श्री रत्तेलाल झा वैदिक रचित दुर्गा पोथी सँ पूजा विधान लेल जानल जाइत अछि। अहि दुर्गा स्थान आ पोखरिक स्थापना करक श्रेय छनि बीज वंशक श्रेष्ट सँतति अर्थात डीही आदरणीय स्वर्गीय श्री बुद्धिनाथ झा महाभागकें। रत्तेलाल झा वैदिक केर पिताक नाम श्री कौष्ठीदत्त झा छलनि जे स्वयम संस्कृत केर विद्वान आ शिक्षा प्रेमी छलाह। इ सकिलवार ब्रह्मपुर (भौरा झा, सकराढी) मूलक छलाह जिनकर पूर्वज अरेड़ गामक स्थापना केलनि। बुद्धिनाथ झा भवविष्णु लोक छलाह। परम उदार, जन कल्याणी, दसलोकी। हिनका लोक हिनक उदारता, भगवानक प्रति हिनकर निष्ठा, भक्ति भावना, आ जन कल्याणक मनोवृत्ति केर कारने साक्षात शंकर अर्थात बाबा बैद्यनाथक स्वरुपमे देखैत छल। लोकक कहब अछि जे हिनका जेना कुबेरक आशीर्वाद छलनि। कतबो दान करथि, हिनकर भंडार घर भरले रहैत छलनि। हिनका परिवारक कोनो सदस्य लग एक लक्ष्मनिया बखाड़ी रहनि जे सभ दिन भरले रहनि। हिनक आग्रह पर हिनकर दियाद पंडित आदि सँ विचार करैत उत्तम जमीनक चयन केलनि आ ओहिमे पोखरि, किछु गाछ आ दुर्गा मंदिरक स्थापना केलनि।

हिनका बारेमे एक किम्बदंती एहेन भेटल जे सभ दिन पोखरिमे स्नान केलाक बाद एक विशाल पीपर गाछक छायामे ई किछु पितृकर्म आ देव कर्म करैत छलाह। एकबेर जखन ई पीपरक गाछ तर पूजा करैत छलाह तँ एकाएक अन्हर बसात

चललैक आ पीपर गाछ धराम सँ खसि पड़लैक। लोककेँ भेलैक जे ओहि गाछक तरमे दबा कऽ पंडित रत्ते झा ख़त्म भऽ गेलाह। जखन हवा बसात थम्हलैक तँ लोक गाछक डारि काटलक। देखैत अछि जे यद्यपि हिनका उपर गाछ खसल छलनि मुदा हिनका शरीर पर कतौ कोनो खोंचो नहि छलनि। ई निर्विकार भाव स अपन पूजा करैत रहलाह। लोक सभके इशारा सँ कहलथिन्ह जे पूजा क लेताह तखन बात करताह। कोनो चिंता केर दरकार नहि।

अरेड़ गामक शिक्षा पर पता नहि कोना कुश्ती आ अन्य बात सभ हावी भऽ गेलैक! अहि पर गहन शोधक दरकार छैक। गाममे महादेब स्थान पर नियमित सँस्कृत विद्यालय चलैत छलैक। एकर अतिरिक्त एहनो प्रमाण छैक जे किछु सम्पन्न गुरुजी अपन दरबज्जा पर गुरुकुल चलबैत छलाह। अठारहवीं शताब्दीक उत्तरार्द्ध सँ बीसवीं शताब्दीक प्रारंभ धरि संस्कृत शिक्षा अरेड़मे नीक छल तकर पुष्ट प्रमाण भेटैत अछि। गामक बीज पुरुख कश्यप गोत्री सखबारे बरहमपुर मुलक छलाह। गाममे सभ वर्णक सामंजस्यपूर्ण वास अदौ सँ रहल अछि। आपसी सौहार्द अनुकरणीय रहल अछि। जेना-जेना जनसँख्या बढ़ैत गेलैक तेना-तेना गामक लोक खेत आ चास दिस घर बना रहय लगलन्हि। अहि तरहेँ किछु लोक दक्षिण दिस बढि गेलाह आ मौजे बदलि गेलनि। अरेड़ सँ बेलौजा मौजेमे कागजी परिसीमनक कारण चल गेलाह। यद्यपि खेत, घरारी, कलम सभ किछु हिनकेँ लोकनिक छलनि आ एखनो छनि तथापि क्षेत्र तँ बदलि गेलनि। ताहि सँ की, ई सभ अपना आपकेँ अरेड़क लोक मनैत रहलनि । आ उचिते मनलनि। ई सभ एखनो अरेड़क दुर्गा घरमे पूजा करैत छथि।

अतय भेलाह एक गंभीर वेदक विद्वान स्वर्गीय रत्तेलाल झा। ओ नेनपन सँ कुशाग्र बुद्धि सँ पूर्ण छलाह। लोक मान्यता कहैत अछि हुनकर पढ़बाक जिज्ञासा सँ प्रेरित होइत हुनक पिता उच्च वैदिक शिक्षा हेतु वाराणसी पठा देलथिन। वाराणसीमे रहैत ओ वेद अध्ययन केलाह। वेदोमे शुक्ल यजुर्वेदकेँ कंठाग्र कऽ लेलनि। यज्ञ विधान, कर्मकांड, धर्म शास्त्र पर गहन शास्त्रीय आ व्यवहारिक ज्ञान आ तकनिकी पर अधिकार प्राप्त केलाह। जेना-जेना ज्ञान बढैत गेलनि तेना-तेना विनम्र आ गंभीर होइत गेलाह। जखन अपन विद्या आ कर्मकांडमे निपुण भऽ गेलाह

आ गुरु सँ आज्ञा भेट गेलनि तँ पुनः अपन जन्मभूमि अरेड़ आबि गेलाह। गाम अएलाक बाद पिता आ श्रेष्ट लोकनि सँ विमर्श केलाक बाद अहि निर्णय पर अयलाह जे ओ कोनो गुरुकुलमे शिक्षक केर चाकरी नहि करताह। तखन अपन अर्जित शिक्षा सँ लोकक कल्याण कोना करताह? एकर समाधान इ भेलनि जे गाममे दरबज्जा पर एक गुरुकुल स्थापित करताह। घरारी यथेष्ट छलनि। घरारी पर फुलवारी, पोखरि, इनार पुर्वहिं सँ छलनि। फुलवारीक सीमा समाप्त होइत देरी आमक गाछी। ताहि घर पर गुरुकुल निर्माणमे कोनो दिक्कत नहि भेलनि। रत्तेलाल झाक उदार पिता हुनक अहि कार्यमे पैघ सहायक भेलथिन। कहैत चली जे सकरारी ब्रह्मपुर मुलक पुरखा सभ शिक्षाक प्रति बहुत साकांक्ष छलाह। अनेक श्रोत्रीय आ भलमानुष सभकेँ भगिनमान बना गाममे बसेने छलाह।

गुरुकुल स्थापित भऽ गेल। चारुकात सँ विद्यार्थी सभ वेद आ कर्मकांडक शिक्षा प्राप्त करबा हेतु पंडित रत्तेलाल झा वैदिकक गुरुकुलमे आबय लगलाह। नेपाल आ दूर-दूर सँ सेहो लोक अबैत छलाह एकर लोक प्रमाण भेटैत अछि। रत्तेलाल झा वैदिककेँ समतुल्य अरेड़ गामक विष्णुपुर टोलमे पंडित सुरेश मिश्र छलाह। सुरेश मिश्र बहुत निमिष्ट लोक छलाह। परम ज्ञानी आ भगवतीक पूजक। अपन दरबज्जा पर बिना ककरो सहयोगक प्रतिवर्ष दुर्गा पूजाक आयोजन करैत छलाह। सुरेश मिश्र वत्स गोत्री छलाह आ हरिअम्बे शिबा मूलक भलमानुष रहथि। पंडित सुरेश मिश्रक एक छोट भाई छलथिन – पंडित उमेश मिश्र। उमेश मिश्र अपना समयक स्थापित व्याकरणाचार्य छलाह। अतबे नहि, ओ भगवतीक बहुत पैघ उपासक सेहो रहथि। लोक मान्यता कहैत अछि जे पंडित उमेश मिश्र प्रतिदिन पैरे अरेड़ सँ डोकहर भगवतीक मंदिर जाईत छलाह। पूजा अर्चना करैत जखन गाम अबैत छलाह तखने अपन भगवतीक पूजा केलाक बाद अन्न ग्रहण करैत छलाह। हमर कथ्य भले दतकट लगैत हो मुदा सत्य एखनो अरेड़ आ अगल बगल केर बुढ पुरान लोकक कंठ आ जिह्वा पर चढ़ल अछि। खैर! पंडित सुरेश मिश्र पर अलग सँ बात करब। हुनकर बारे मे जानकारी देब जरुरी अछि अतय कारण हुनकर सम्बन्ध पंडित रत्तेलाल वैदिक सँ रहल छनि। ओ सँदर्भ कनिकालमे भेटत।

कहबाक अर्थ इ जे एक समयमे अरेड़ गाममे चौदह टा नैमितिक वैदिक छलाह। गामक दन्त कथा कहैत अछि जे एकबेर प्रचंड रौदी भऽ गेलैक। पोखरि इनार सुखा गेलैक। लोकक आ पशुधनक जान कोना बांचत से बड भारी समस्या। गामक कृषक लोकनि वैदिक सभसँ किछु करबाक निहोरा करय लगलाह। अंततः एक सँग चौदहकें चौदह वैदिक सभ स्नान ध्यान करैत दुर्गा स्थानक (पुरवारी टोल) पोखरिमे प्रवेश केलनि। तीन दिन धरि दिनकर दीनानाथ आ भगवान इंद्र सँ भगवती दुर्गाकें साक्षी मनैत दुनू हाथमे जनेऊ लगा गोहार लगबैत रहलाह। लोककथा कहैत अछि जे अंततः तेसर दिन साँझ होइत देरी मुसलाधार बरखा होमय लगलैक। पोखरि ईनार जल सँ भरि गेल। समस्त गाममे आनन्द पसरि गेल।

बात पुनः पंडित रत्तेलाल झा वैदिक केर करी। वाराणसी सँ शिक्षा ग्रहण करबाक कारणे वैदिक जी तांत्रिक व्यवस्था सँ विमुख भऽ गेल रहथि। ओ वैष्णव दिस अधिक झुकल छलाह। तकर एक परिणाम दृष्टिगोचर होइत अछि हुनक रचित दुर्गापुस्तक सँ। अइयो दुर्गा स्थानमे हुनके रचित दुर्गा पुस्तक सँ पूजा होइत अछि। यद्यपि अपन पोथीमे ओ बलिप्रदानक कोनो विधान नहि रखने रहथि। दुर्गा पुस्तकक रचना वैदिक जी मिथिलाक्षर लिपिमे केने छलाह। एकरा अलावे ओ करीब बीस आरो ग्रन्थ लिखने छलाह। एक या दू पोथी देवनागरी आ अन्य मिथिलाक्षर लिपिमे छनि। दुर्भाग्य सँ हुनक लिखित ग्रन्थमे मात्र सोलह ग्रथक पाण्डुलिपि हालहिंमे भेटल अछि। हमरा लोकनि प्रयासमे छी जे ओकर शीघ्र लिप्यान्तरण करा देवनागरी आ मिथिलाक्षर दूनू लिपिमे प्रकाशित करी। अरेड़क दुर्भाग्य इ भेल जे पंडित रत्तेलाल झा दीर्घायु नहि भेलाह। मात्र चालीस बरखक अल्पायुमे स्वर्गवासी भऽ गेलाह। हुनक मृत्युक बाद हुनक दरबज्जा पर जे गुरुकुल चलैत छल से बंद भऽ गेल। इहो लिखब जरुरी जे महादेव स्थानमे गुरुकुल चलैत रहल। एखनो सँस्कृत विद्यालय चलि रहल अछि।

पंडित रत्तेलाल वैदिक धर्मशास्त्रक हिसाबे अपन जीवन जीबैत छलाह। हुनक नाम चारू दिशामे पसरय लगलनि। भारतक मिथिला सँगे नेपालक मिथिलामे सेहो लोक सम्मान दैत छलनि। गामक लोकक कहब छनि जे जखन जनकपुरमे

जानकी मंदिरक निर्माण हिन्दू-कोईरी स्थापत्यक मेलमे मुगल शैली के शीर्ष सँ 4,860 (1910) भs गेलैक जाहिमे गभगृह केर अतिरिक्त 60 कमरा स्वेत सँगमरमर सँ भेलैक तँ मुर्तिक प्राण प्रतिष्ठा हेतु हुनका अर्थात पंडित रत्तेलाल झा वैदिककें बजाएल गेल छलनि। हुनका बजासे चिट्ठी भेज नेपाल नरेश बजेने छलथिन। ओ गेलाह अथवा नहि तकर पुष्ट आ प्रमाणिक जानकारी एखन धरि नहि उपलब्ध भेल अछि। एकबेर जखन सभ जानकारी भेट जाएत तँ इहो बात प्रकाशित कएल जाएत।

पंडित रत्तेलाल झा वैदिकक नामक पताका समस्त क्षेत्रमे लहरा रहल छलनि। गामक लोकक इहो कहब छनि जे जखन मधुबनीमे अतिसय विशाल आ अलंकृत पोखरि गंगासागरक निर्माण सँपन्न भs गेलैक तँ पोखरिकें जनसामान्य हेतु उपयोगमे आबय ताहि हेतु जाठ गारबक प्रक्रिया आ जलकर पूजा हेतु हिनका आचार्य बनबाक हेतु कहल गेलनि। आयोजक लोकनि अनेक वस्तु, अन्न, वस्त्र, मुद्राक अतिरिक्त सोनाक पाँच भरिगर (लाइफ साइज़) चीज – खराम, जनेऊ, लोटा, पाग, आ फुलडाली – देमाक प्रलोभन देलथिन। मुदा वैदिक जी उपनिषद परंपराक ओहेन कर्मकांडी पंडित छलाह ओ दान इ जानि नहि लेत छलाह जे दान ओकरा लेबाक चाही जकरा जरूरत छैक। हुनका कृषि क्रम सँ परिवारमे यथेष्ट अर्थक प्राप्ति भ' जाईत छलनि। फेर कोनो तरहक दानक प्रयोजने की? ताहिं वैदिक जी मना कs देलथिन। मुदा गामक लोक आ सम्बन्धी सभ हुनका पर गंगासागर पोखरि बला पांडित्यक काज स्वीकार करबा लेल जोर देमय लगलथिन। तैयो वैदिक जी अपन निर्णय पर अडिग रहलाह। जखन चारू कातसँ जोर आबय लगलनि तँ किछु दिन लेल गाम छोड़ि कतौ अज्ञातवासमे चल गेलाह। कहल जाईत अछि जे ओ लोक सभकें कहथिन: "जलकर निमित्त यज्ञमे जे दान लैत अछि तकरा सात जन्म धरि गोहिमे जन्म लेमय पड़ैत छैक।

चालीस बरख पुरैत देरी पंडित रत्तेलाल वैदिक अहि नश्वर शरीरक त्याग कs लेलाह। अनंतमे विलीन भs गेलाह। अरेड़क दुर्गा घरमे एक प्रश्न ठाढ़ भेल- पूजा पद्धति की हो – वैष्णव की तांत्रिक? अधिक लोक बलिदानक पक्षमे छलाह मुदा कियोक स्वर्गीय पंडित रत्तेलाल झा वैदिककें पोथी सँ विमुख नहि होमय चाहैत

छलनि। सँयोग सँ ताहि समय पंडित सुरेश मिश्र जीबैत छलाह आ थेहगर रहथि। लोक हुनका लग एहि समस्याक समाधान लेल गेल। ओ पांच पंडितक एक विद्वत परिषद बनौलनि जाहिमे अपनों छलाह। दरिभंगा राज सँ सेहो सँपर्क कएल गेल। अनेक तरहक दुर्गा पोथी मंगा पंडित रत्तेलाल झा वैदिकक मूल दुर्गा पोथीमे थोड़ेक सँसोधन करैत ओकरा अहि तरहें पुनर्स्थापित कएल गेल जाहिमे मूल आत्माकेँ विनष्ट केने ओहिमे तंत्र क्रिया, पूजा, विधान आ बलिप्रदानक समावेश भऽ जाय। आई धरि ओही पद्धति आ पोथी सँ अरेड़मे दुनू ठाम दुर्गा पूजा होइत आबि रहल अछि। वैदिक जी तीन भाई छलाह:

1. स्वर्गीय श्री तोहफालाल झा
2. स्वर्गीय श्री पंडित रत्तेलाल झा "वैदिक"
3. स्वर्गीय श्री लालजी झा।

स्वर्गीय रत्तेलाल झा वैदिक केर विवाह अरेड़ सँ सटल सरिसभ गाममे (नानू दाई देबी के संग) भेल छलनि। सरिसभ धकजरी आ बेनीपट्टीक बीच रहिका बेनीपट्टीक मध्य बिहार राज्य हाईवे पर अवस्थित अछि। वैदिक जीकेँ दू टा बालक छलथिन। बेटाक नाम क्रमशः स्वर्गीय श्री घुरन झा आ स्वर्गीय श्री लीलाधर झा छलनि। स्वर्गीय घुरन झा केँ तीन बालक आ दू टा पुत्री भेलथिन:

1. श्री दशरथ झा (स्वर्गीय)
2. श्री सदानंद झा (स्वर्गीय)
3. श्री बीरभद्र झा (स्वर्गीय)
4. पद्मा देबी (स्वर्गीय)
5. नैना देबी (स्वर्गीय)

स्वर्गीय दशरथ झाकेँ 2 पुत्र आ 1 पुत्री भेलथिन:

1. स्वर्गीय श्री पंडित अनिल कुमार झा (7 टा बेटी छैन्ह)
2. धीरेन्द्र झा (1 टा लड़का आ 2 टा लड़की छैह)
3. बिभा देवी (स्वर्गीय)

सदानंद झाकेँ पुत्र नहि छलनि। हुनका दू पुत्री (आशा देवी आ पुष्पा देवी) छलथिन दुनू सासुर बसैत छथिन।

घुरन झाक तेसर पुत्र भेलथिन पुत्री स्वर्गीय श्री बीरभद्र झा। बीरभद्र झा करीब 85 वरखक आयु मे स्वर्गीय भय गेलाह, हिनक विवाह बेलोजाक श्रीमती निर्जला देवी सँ छनि। बीरभद्र झाकेँ छह बालक भेलथिन:

1. अजय कुमार झा (1. मणिकांत झा, 2. ऋषिकांत झा, 3. रागिनी झा)
2. ललित कुमार झा (1. अंकित झा, 2. अंश झा)
3. दिलीप कुमार झा (1. आर्यन झा, 2. रूही झा)
4. आलोक कुमार झा (हिनका 2 टा बेटी छनि)
5. नरेंद्र कुमार झा (हिनका 1 टा बेटी छनि)
6. हरेन्द्र कुमार झा (अखन विवाहे भेलैन्ह अछि)

पंडित रत्तेलाल झा वैदिक केर दोसर बालक स्वर्गीय श्री लीलाधर झाकेँ एक बालक आ एक पुत्री छलथिन। स्वर्गीय लीलाधर झाक बालक छथिन – श्री उदयकांत झा – उदय कान्त झा पहिने असममे व्यापर करैत छलाह। आब गाम पर रहैत छथि। श्री उदय कान्त झा केर तीन बालक आ दू टा पुत्री:

1. धर्मचन्द्र झा (2 पुत्र आ 2 टा पुत्री)
2. कर्मचन्द्र झा (2 पुत्र)
3. सुधीरचन्द्र झा (2 पुत्री)
4. सुभीता देवी
5. रूना देवी

वंशावली लिखक उदेश्य अछि जे हमरा लोकनि हुनक अर्थात पंडित रत्तेलाल झा वैदिक केर परिवार सँ आ हुनकर शिष्य आदिक परिवार सँ अधिक सँ अधिक प्रमाणिक जानकारी प्राप्त कऽ सकी। वैदिक जी अरेड़ गामक बीज पुरुखक एहेन विलक्ष्ण आ विद्वान पुत्र छलाह जकरा पर पूरा अरेड़ गामक लोक आ सँगहि अगल-बगलक लोक सभ गर्वक अनुभूति करैत अछि। चूँकि वैदिक जी अरेड़क छलाह जे हमर गाम सेहो अछि ताहिं ओ हमर पितर भेलाह। हम हुनकर आह्वान करैत छी आ हुनका जल, तिल सँ तिलांजलि दैत हुनका सँ प्रार्थना करैत छी: “हे पितर आउ तिलांजलि ग्रहण करू आ हमरा सँग समस्त अरेड़क लोकक कल्याण करू”।

9

बाबा लक्ष्मण दास

अरेड़ गाममे एक वैष्णव कुटी छैक जाहिमे अनेक मन्दिर, एक यज्ञशाला, इनार, फुलक लघु फुलबारी आ धर्मशाला छैक। एकरा लोक कुटी अथवा बाबा कुटी कहि संबोधित करैत अछि। कुटीक दोसर छोर पर एक विशाल पोखरि सेहो छैक जाहिमे माल-जाल आनब आ सौच आदि करब वर्जित छैक। पोखरिक भीड़ पर चारु कात अनेक तरहक उपयोगी, फल आ फुल बला गाछ सभ लागल छैक – आम, कटहर, महुआ, तेतरि, धातरी (आँवला), लताम, हरफ़ा, कचनार, बरहर आ आरो अनेक तरहक गाछ वृक्ष। समस्त अरेड़ डीह टोल, हाट आ भटबाना केर लोक गर्मी केर मौसममे एहि गाछ-वृक्षक छाहरिमे बैसैत छल। फल सभक पकबाक समय बटोहीकेँ गच्छ पक्कू फलक लाभ स्वतः भऽ जाइत छलैक।

गामक बुढ पुरान लोकक कहब छलनि जे एहि कुटीक स्थापना एक सन्त श्री लक्ष्मण दास जी महाराज केने छलाह। गामक लोक एहि संतकेँ लक्ष्मण बाबा केर नाम सँ सम्बोधित करैत छलनि। आइयो लक्ष्मण बाबा लोकक जिह्वामे आ चिंतनमे जीबैत छथि। ई लक्ष्मण बाबा के छलाह? गामक पुरान लोक सभ कहैत छथि जे लक्ष्मण बाबा एक सिद्ध पुरुष छलाह, परम सिद्ध आ हठयोगी। कहाँ सँ आयल रहथि, हुनक परिवार केहन छलनि, माता-पिता, भाई-बहिन, गाम, कुटुंब, जाति आदिक जानकारी गामक लोककेँ नहि छनि आ नहिये कियोक जानबाक लेल उत्सुक अछि। बाबा लक्ष्मण दास जनकल्याणी रहथि। सभक सुख-दुःखमे सहयोग करैत छलाह। बाबा अरेड़केँ अपन गाम स्वीकार कऽ लेने छलाह। बाबा केर बिभुत मात्र सँ अनेक व्याधि केर उपचार आ सफल इलाज भऽ जाइत रहैक। लोकक अनुभव इहो प्रमाणित करैत अछि जे बाबाकेँ नाना तरहक जड़ी-बूटी आ समस्त भेषजीय विद्याक ज्ञान छलनि। प्रकृतिक एक-एक बात आ रहस्य सँ जेना बाबा लक्षमण दास परिचित छलाह। बाबा मुलतः ठेठ भोजपुरी भाषी छलाह। लोक

सभ सँ बाबा वार्तालाप या तँ भोजपुरीमे अथवा भोजपुरी मिश्रित हिंदी भाषामे करैत छलाह। यद्यपि बाबा लक्षमण दास ग्रामीण सबहक मैथिली भाषा नीक सँ बुझैत छलाह मुदा अपन उत्तर ओ सदैव भोजपुरी मिश्रित हिंदीमे देत छलाह। ताहिं किछु बुजुर्ग ई अनुमान लगबैत छथि जे लक्ष्मण बाबा भोजपुरी भाषी छलाह आ भोजपुर क्षेत्र सँ छलाह। बाबा बेर-बेर एक बात दोहराबैत रहैत छलाह:

"जात न पूछो साधू की
पूछ लीजिये ज्ञान"

फेर की, कहियो अरेड़ तँ अरेड़ अगल-बगल केर गामक लोक सेहो कहियो बाबा लक्षमण दास सँ हुनक जाति, कुल, गोत्र, मूल, जन्मस्थान, मातृभाषा आदिक बारेमे किछु जानबाक कोशिश नहि केलक। आ जखन लोक पुछबे नहि केलकनि तँ बाबा की कहितथि? कालक पहिया चलैत रहल। कहि देलहुँ ने, लक्षमण बाबा हठ योगी छलाह। चीलम पिबैत छलाह, तमाकुल खाइत छलाह। ओ अपन चेला चपाटी केर सहयोग सँ कुटी केर प्रांगन केर पाछा बला जमीन पर तमकुल केर उपयोग अतेक खेती करैत छलाह। ओकर सेवा करैत छलाह। समय पर पानि देब, समय पर ओकरा काटब आ कटलाक बाद ओकरा छाहरिमे सुखबैत छलाह आ खअरमे साल भरिक उपयोग लेल जोगाक रखैत छलाह। अतिरिक्त उपजकेँ गामक लोक सभमे बाँट दैत छलाह। मुदा एक बात बाबाकेँ अनुकरणीय छलनि, ओ कहियो कोनो युवक अथवा नवतुरियाके तमाकुल अथवा गाजा पीबाक हेतु उत्साहित नहि करैत छलाह।

हठयोगी बाबा लक्ष्मण दासक स्मृति गामक लोक आइयो ओहिना सजग भेल व्याप्त छनि। कहल जाइत छैक लक्ष्मण दास बाबा कहियो कोनो दिन गामक कोनो परिवार, व्यक्ति अथवा घरमे भोजन, भोजनक सीधा अथवा कुट्टी चलेबा लेल परोक्ष आ प्रत्यक्ष रुपे याचना नहि केलनि। अगर कोनो दिन कतहुँ सँ भोजन आ भोग लेल सीधा अथवा कोनो सामग्री नहि अबैत छलनि तँ ओहि दिन उपास (उपवास) कऽ लैत छलाह। बीच पोखरि सँ जल आनि भरि इच्छा पीब लैत छलाह। कतेक दिन तँ कंद-मूल, फल, साग आदि खा कऽ समय बिता लैत छलाह। ओहुना

बाबा सप्ताहमे तीन दिन - मङ्गल, बृहस्पति आ रवि कऽ भोजन नहि करैत छलाह। रातिमे अगर गायक दूध भेट जानि तँ एक गिलास दूध लऽ लैत रहथि अन्यथा पोखरिक पानिमे गङ्गाजल आ तुलसीदल मिलाकऽ पीबी लैत छलाह। दूधमे सेहो बाबाँके शर्त छलनि जे ओ ओहेन लगहरि गायक दूध ग्रहण करताह जकर मालिक अपन गायक आधा दूध ओकर बछड़ा वा बछियाकेँ पियाबैत हो। एक बात मुदा कहब, गामक लोक सेहो लक्ष्मण बाबाक प्रति बहुत निष्ठां सँ समर्पित रहैत छल। पूरा गाम ई ध्यान राखैत छल जे बाबा आ हुनक चेला चपाटीकेँ कहियो कोनो तरहक दिक्कत नहि होनि। गामक लोककेँ भेलनि जे बाबाकेँ आ कुट्टीकेँ एक नियमित व्यवस्था होबाक चाही। व्यवस्थामे कुट्टीकेँ स्वायतता अथवा ऑटोनोमी होबाक चाही। सभ बातकेँ ध्यान राखैत गामक लोक जुटान केलक आ गामक जमींदार (डीही) लग जा हुनका सँ सभ बात विस्तार सँ रखलक। डीही केर नेतृत्वमे गामक लोक ई निर्णय लेलक जे ठाकुर जी (भगवान विष्णु) केर नाम सँ किछु जमीन खेती लायक आ किछु माल-जालकेँ चरऽ बला जमीन दान कएल जाय। गाय इत्यादि लेल एक गौशाला केर निर्माण हो। गौशाला हेतु नौ गाय आ दू सांढक व्यवस्था भेलैक। एहि तरहेँ कुट्टी आ बाबा संग समस्त चेला चपाटी लेल एक नियमित व्यवस्था भऽ गेलैक। आब लक्ष्मण बाबा केर शिष्य गौशाला केर गाय केर नियमित सेवा करऽ लागल। गौधनमे दिनानुदिन बृद्धि होब लगलैक। गामक लोक गौधनक चाराक लेल अपना-अपना घर सँ नार, पुआर, झट्टा, घास इत्यादि देमय लगलैक। बाबा लक्ष्मण दास आ हुनकर चेला सभ गाय इत्यादिकेँ चरेबा लेल विभिन्न स्थानमे लऽ जाय लगलाह। आब सभ काज सही ढंग सँ संचालित होमय लगलैक।

बाबा लक्ष्मण दास सिद्ध पुरुष छलाह, प्रकांड योगी, हठ योगी आ परम साधक। कोनो तरहक बाहरी तामझाम आ दिखावा सँ बाबा दूर रहैत छलाह। लक्ष्मण बाबाकेँ लोक आब कुट्टी बला बाबा कहि बजबैत छलनि। हमर बाबूजी स्वर्गीय राम नंदन मिश्र बतबैत छलाह जे लक्ष्मण बाबा प्रचण्ड गर्मीक समयमे, ताहूमे जेठक रौद्र रौदमे दिनक समय जारनि आ गोरहा आ चिपड़ीक आगि जरा ओकर घुर बना ओकरा सामने ध्यानमग्न भेल उघारे देहे साधनामे लीन भऽ जाइत

छलाह। दिन भरि बिना कोनो उच-बचकेँ बैसल धू-धू जरैत अग्निक ज्वालाक समक्ष ठाकुर जीमे अपना आपकेँ समर्पित करैत छलाह। ककरो ओहि हठयोगकेँ बीच बाबाकेँ हटेबाक अथवा व्यवधान करबाक अनुमति नहि रहैक। जखन सुरुज अस्ताचल गामी भऽ जाइत छल तखन बाबाक चेला सभ बाबाकेँ उठा कऽ पोखरिमे लऽ जाइत छलनि। एक घंटा धरि बाबा स्नान करैत रहैत छलाह। पोखरिक घाट सँ मंदिर आबि ठाकुर जी (भगवान कृष्ण और राधारानी) एवं अन्य देवी देवताक पूजा अर्चना करैत छलाह, भोग लगबैत छलाह तकर बाद भोजन करैत छलाह आ रात्रि विश्राम लेल जाइत छलाह।

बाबाक हठक आ साधनाक अनेक प्रकरण छनि। सभ बातक चर्च करब संभव नहि अछि। अनेक प्रकरण एहनो छैक जकर जनतब लोक लग नहि उपलब्ध छैक। बाबाक संबंधमे खोज चलि रहल अछि। किछु ने किछु नव आ विस्मयकारी सुचना लागातर भेट रहल अछि। एक बात आर कहब अनिवार्य बुझैत छी। पूसक हाड़ गलाबऽ बला जार मासमे सभ दिन राति कऽ लक्ष्मण बाबाकेँ हुनके निर्देशानुसार हुनक शिष्य केराक थम्भक नाव बनाक ओहिमे सुता दैत छलनि। सेहो उघारे देहे। वस्त्रक नाम पर एक लंगौट मात्र रहैत छलनि। आब ओहि नावकेँ पोखरिमे छोड़ि देल जाइत छलैक। बाबा भरि राति ओहि नावमे सुतल पोखरिमे दहाइत रहैत छलाह। नावकेँ पैघ रस्सी सँ पोखरिक जाठि सँ बाँधि देल जाइत छलैक जाहि सँ प्रात भेने सहजता सँ बाबाकेँ पोखरिक जल सँ बाहर आनल जाय। आब बाबा जल सयनमे मग्न। बाबाक शिष्य पोखरि सँ घुरि अबैत छलाह आ कुट्टीक एक भागमे एक दिया लेसि दैत छलथिन्ह। बाबा जाबेत धरि होशमे रहैत छलाह "हरि ॐ, हरि ॐ" केर जाप करैत रहैत छलाह आ जखन बेहोश भऽ जाइत छलाह तखन जीबैत लाश बनि शवाशन मुद्रामे लेटल रहैत छलाह – बिलकुल प्राणहीन भऽ जाइत रहथि। एकर बादो बाबाकेँ पोखरि सँ बाहर कियोक नहि आनैत छलनि। प्रातः काल सूर्योदय भऽ गेलाक बाद हुनक शिष्य बाबाकेँ पोखरि सँ वापस कुटी पर लाबैत छलनि। आब बाबा लेल धूनी लागैत छलनि। खअर पात आ गोइठा चिपड़ी जरा मधुर अग्नि केर व्यवस्था उत्पन्न कएल जाइत छलैक। बाबा होशमे आबिते मातर पुनः नित्यकर्ममे संलग्न भऽ जाइत छलाह। पूजा अर्चना करैत, ठाकुर जीक भोग

लगाबथि तकर बाद स्वयं भोजन करैत छलाह। एहि हठ योगकेँ बाबा जलसयन कहैत छलाह। बाबा लक्ष्मण दास पूरा पूस आ माघ मास नियमित रूप सँ रात्रिमे जलसयन करैत छलाह। ठीक तहिना वैशाख आ जेठ मासमे दिनभरि सूरजक भीषण ज्वालामे अग्निसयन करैत छलाह।

बाबा प्रजातंत्रक सार्थक प्रहरी छलाह। सभकेँ समान भाव सँ देखैत छलाह। महिला लोकनि बाबाकेँ स्पर्श तक नहि कऽ सकैत छलीह। महिलामे मातृभाव देखैत छलाह, हरेक मासमे दू बेर कुमारि कन्याक भोजन कराबैत छलाह। अगर गामक लोकक इच्छा होनि तँ सहयोग करैत छलथि अन्यथा यथासाध्य बाबा स्वयं करैत छलाह। कुमारि कन्याक भोजनमे खीर आ पुआ होइत छलैक। पाक क्रियामे केवल बाबाक पुरुष सन्यासी शिष्यकेँ रह देबाक आ बनेबाक आज्ञा छलनि। से जे हो, सभ भोज्य पदार्थक निर्माण बहुत भक्ति भाव आ सुचिताक संग होइत छलैक।

बात लक्ष्मण बाबा केर प्रजातंत्र आ हुनक मान्यता पर करैत रही तँ एक आरो बात कहब जरुरी अछि बाबा जतए बैसैत छलाह ओतय ककरो लेल कुर्शी, चटाई, खटिया, चौकी आदिक व्यवस्था नहि होइत छलैक। सभ कियोक निचा सहरजमीन पर बैसैत छल। इ बात राजा, रंक, फ़क़ीर सभ लेल रहैक। कतेक लोक तँ ठाढ रहैत छल। अपन बात कहलक आ बिदा भेल। बाबा सभ लेल तुम शब्दक प्रयोग करैत छलाह। मुदा हुनक तुम शब्द जखन हुनकर कंठ सँ निकसैत छलैक तँ बहुत रसगर आ मधुर सम्प्रेषण होइत छलैक। बाबाक तुम संबोधनमे अपनत्व केर फोरन रहनि।

बाबा लक्ष्मण दास सही अर्थमे गुणक खान छलाह। कहल तँ इहो जाइत छैक जे बाबा भुत, वर्तमान आ भविष्य तीनू बुझैत छलाह। बाबा मस्त मलंग छलाह। हुनक गुरु हुनका प्रेम सँ बात-बात पर "साला" कहैत छलथिन। एकरा आब दुर्गुण कही अथवा सद्गुण, इ लत लक्ष्मण बाबामे सेहो आबि गेल छलनि। बाबा ककरो पर खुश होथि अथवा कोनो बात सँ तामस करथि तँ ओकरा "साला" कहि संबोधित अवश्य करैत छलाह। ओना गामक लोक बाबा केर एहि स्वाभाव स परिचित छल ताहि कियो एकरा गलत अर्थमे नहि लैत छल।

एक प्रसंग इ छैक जे एक बहुत पैघ जमींदार बहुत दूर सँ बाबा लक्ष्मण दास लग आयल। बाबा लग बाजल: “बाबा! हमर बेटा बहुत गलत लोक सबहक संगतमे रहि रहल अछि। मदिरा पिबैत अछि, जुआ खेलाइत अछि, दुष्कर्म करैत अछि। एकै टा बेटा अछि। लागैत अछि ई पूरा रियासत ख़त्म कs देत। बाबा! हमर कल्याण करू!” जमींदार बजैत रहल। बाबा सुनैत रहला। ओ आदमी बजैत रहल आ कनैत रहल। बाबा कहलथिन: “कोनो बात नहि। एक काज करह, ई जंत्र लs जाह। मंगल दिन स्नान-ध्यान करा बेटाकेँ पहिरा दिहs। संगहि 108 बेर ठाकुर जीक नाम केर पाठ कs लीहs। सब किछु ठीक भ जेतह। बेटा सुधरि जेतह।”

जमींदार विनम्रता सँ अपन हाथ आगा बढ़ा देलक। लक्ष्मण दास बाबा सँ जंत्र हाथमे लैत बाजल “बाबा, जीवन भरि हम अहाँक उपकार नहि बिसरब। अहाँ जे कहब से करब।”

लक्ष्मण दास बाबा बजलाह: “अगर बेटा ठीक भs जेतह तँ की देबह?”

जमींदार बाजल: “हमर सभ किछु अहाँक अछि बाबा! जे कहब से अहाँक पैर पर समर्पित।”

बाबा कहलथिन: “ठीक छैक जखन तोहर बेटा सभ अवगुण छोडि देतह आ नीक आचरण शुरू कs देतह तखन एक नीक आ पनिगर घोड़ा हमरा भेज दिहs।”

लोक सभ आश्चर्यचकित छल “आखिर बाबा ई की कहि रहल छथि? बाबा तँ निराकार सन्यासी छथि। बाबा लग घोड़ाक की प्रयोजन? ककरा लेल लेताह घोड़ा!” लेकिन कियोक किछु नहि बाजल। जमींदार माथ झुकबैत बाबा केर पुनः आशीर्वाद लैत कुट्टी पर सँ प्रसन्न मन अपना घर लेल बिदा भेल।

समय बितs लगलैक। एक वरखक बाद एक दिन ओ जमींदार अपन बेटा संग बाबा लग कुट्टी पर आयल। जमींदार बहुत प्रसन्न छल। दुनू पिता पुत्र बाबा लक्ष्मण दासकेँ चरण स्पर्श केलक। आब जमींदार विनम्रता सँ बाजल: “बाबा! अहाँक कृपा आ जंत्रक प्रभाव सँ हमर जीवन धन्य भs गेल। हमर बेटा सब अवगुण छोड़ि देलक। आब पूरा समय अपन राज काज पर दैत अछि।” अतेक कहैत जमींदार बेटाकेँ इशारा सँ किछु लाबय कहलकैक। जमिंदारक बेटा पिताक आज्ञा केर पालन करैत एक घोडा आ एक घोड़ी दुनू उत्तम नश्लकेँ बाबा लग आनलक।

घोडा आ घोड़ीकेँ देखिते आश्रम केर सन्यासी आ आन लोक आपसमे कौल करय लागल जे बाबा आखिर घोड़ा लऽ कऽ की करताह?”

लक्ष्मण बाबा तुरत घोड़ा लग गेलाह आ घुड़सवारी शुरू कऽ देलनि। बाबा बहुत कुशल राजा जकाँ घोडा केर कमान अपना हाथमे लेने घोड़ाकेँ चारू कात सरपट दौड़्बैत रहला। लोक आश्चर्यचकित होइत बाबाक एहि नव स्वरुपकेँ देखैत रहल। ताहि दिन सँ कुट्टी पर गाय, बछरा संग घोड़ाक स्थान सेहो बनि गेलैक। बाबा नियमित आब घोड़ा केर सवारी करैत छलाह।

लक्ष्मण बाबा आब नहुँ- नहुँ बुढ भेल जा रहल छलाह। ओ अपना लेल आ अपना बाद कुट्टी केर सही सञ्चालन हेतु एक योग्य शिष्य केर तलाश कऽ रहल छलाह। एक दिन सांझ पहर सीतामढ़ी केर एक गाम सँ एक बहुत सुन्दर, दिव्य युवक जे सन्यासी छल बाबा लग कुट्टी पार आबि गेलैक। युवा सन्यासी लक्ष्मण बाबा सँ रात्रि विश्राम लेल याचन केलक। बाबा ओकर याचनाकेँ तुरत स्वीकार केलनि। युवक रात्रि विश्राम केलक। युवा सन्यासी केर नाम संत सियाराम दास रहैक। सियाराम दास ज्ञानी, संस्कृत आ धर्मशास्त्र केर शिक्षा मे पारंगत, मल्लयुद्ध, घुड़सवारी आदि विधा आ विद्यामे निपुण छलाह। बाबा बुइझ गेलाह जे युवा सन्यासी संत सियाराम दास हुनकर सही उतराधिकारी छनि। आ बिना कोनो बिलम्बकेँ बाबा लक्ष्मण दास जी युवा सन्यासी सियाराम दासकेँ अपन शिष्य आ अपन उतराधिकारी घोषित कँ देलनि। बादमे सियाराम दास सेहो लक्ष्मण दास बाबा जकाँ बहुत यश प्राप्त केलनि।

लक्ष्मण बाबा पर अनेक प्रसंग अछि, किछु लघु प्रसंग मात्रकेँ अतय प्रस्तुत करबाक यत्न कएल अछि।

बाबा लक्ष्मण दासक प्रति अपना दिश सँ आ समस्त अरेड़ गामक कृतज्ञ ग्रामीण दिस सँ विनम्र श्रधांजलि अर्पित करैत छी।

10

सुदर्शन मिश्र बनाम सीताराम दास बनाम रामचन्द्र दास

अरेड़क इतिहास अर्थात लोक-इतिहास दिस आई फेरो एक डेग आगा बढ़ैत छी। गाम अपन लोकक व्यक्तित्व सँ अपन व्यक्तित्व निर्माण करैत अछि। जखन गाम पैघ होइत छैक तँ गाम सँग नीक-अधलाह दुनूक इतिहास कालक गति सँग बनल जाइत छैक। अरेड़ सेहो एकर अपवाद नहि रहल अछि। हमर जन्म अरेड़मे भेल अछि। भले अरेड़ कम रहल छी मुदा गाम सँग लगाव बहुत रहल अछि। अपन साहित्यक मादें अरेड़क नीक अधलाहक चर्च प्रत्यक्ष आ परोक्ष रुपें करैत रहैत छी। एखन धरि लेकिन प्रमाणिकता लेल गामक अनुकरणीय, प्रशंसित आ स्तुत्य मुदा सोरहो आना साँच इतिहासक चर्च करैत अएलहुँ अछि। अहि क्रममे आई एक बहुत अनुकरणीय इतिहास आ इतिहास-पुरुखक चर्च करैत छी जे अपन साधना-संस्कार-निष्ठा-सेवा-व्यवहार सँ स्थानीय सँ बहुत ऊपर उठैत वैश्विक अथवा ग्लोबल बनि एहि नश्वर कायाकेँ त्यागि अपन कृति सँ अनश्वर आ शाश्वत भऽ गेल छथि।

ई छथि श्री-श्री-1008 ब्रम्हलीन सीताराम दास जी। सीताराम दासजी पश्चिमी उत्तर प्रदेशक चँदोक नामक गाम्मे लगभग 35 बीघा जमीन पर अवस्थित आश्रममे एक आश्रम बना रहैत छलाह। चँदोक पश्चिमी उत्तर प्रदेशक बुलंदशहर जिलामे बुलंदशहर सँ अनुपशहर केर बाटमे बुलंदशहर सँ 15 किलोमीटर केर दूरी पर अवस्थित छैक। एहि आश्रममे लगभग 50 टा गाय-बछड़ा सेहो छैक। गोवंशक सेवा राति-दिन निरंतर श्रद्धा भाव सँ अतय एखनो होइत रहैत छैक।

बात फेर आगा बढ़बैत छी आ श्री सीताराम दास जीक अरेड़ आ अरेड़ सँ चँदोक गाम अएबाक यात्राक वृत्तान्त बतबैत छी। हिनक जन्म मधुबनी जिलाक अरेड़ गामक डीह टोलमे 1937 ईसवी केर आसपास एक अति निर्धन परिवारमे माता-

पिताक प्रथम सन्तानक रुपमे भेल छलनि। हिनक पिता स्वर्गीय नरसिंह मिश्र बहुत विनम्र, मृदुल, आ सम्मानित लोक छलाह। ई सब शांडिल गोत्री ब्राह्मण छलाह आ अरेड़मे नरसिंह मिश्रक प्रपितामह विवाह कए भागिनमान बनि बैस गेल छलाह। ओना ई सब मूल रूप सँ सरिसब गामक छलाह। हिनक मूल सदरपुरिये सरिसब छनि आ ई सब अयाची मिश्रक वंसज छथि। नरसिंह मिश्रक पिताक नाम स्वर्गीय जीबछ मिश्र छलनि। जखन नरसिंह मिश्रकेँ प्रथम पुत्र जन्म लेलथिन तँ हिनक नाम सुदर्शन राखल गेल। सुदर्शन नामे गुणे सुन्दर आ सुशील छलथिन। सुदर्शनक मायक नाम श्रीमती छेदी देवी छलनि। छेदी देवी सेहो धर्मपरायण कुलवंत महिला छलीह

हिनक माय भागलपुर जिलाक तिरासी गामक एक जमींदारक असगरि पुत्री छलथिन। हिनक मातामह कलामा छलथिन आ घोड़ा पर चढ़ि तिरासी सँ अरेड़क यात्रा करैत छलाह। चूँकि ई सब नीक कूल-मूलक नैमित्तिक ब्राह्मण छलाह, विनम्र छलाह, उज्झट संस्कारक नहि छलाह ताहिं हिनक मातामह अपन दुलराइतिन बेटिक बिआह एहि परिवारमे कएलनि।

सुदर्शनक पिताक विनम्रता प्रभावी भेलनि। हिनक व्यवहार सँ प्रभावित होइत हिनका जयनगर हाई स्कूलमे चपरासीक नौकरीमे तत्कालिन प्रधानाचार्य महोदय जे शायद नवकरही गामक छलथिन, राखि लेलथिन। जयनगर हाई स्कूलमे सेहो नरसिंह मिश्रक व्यवहार बहुत सहायक रहलनि। यद्यपि ई चपरासी छलाह तथापि कहियो हिनका सँ कियोक चाह इत्यादि नहि मंगवेलकनि। कहियो हिनका झाड़ू-पोछा नहि करय पड़लनि। विद्यार्थी तँ विद्यार्थी, शिक्षक सेहो नित्य हिनक चरण स्पर्श करैत छलनि। अतेक संस्कारी आ करुणावन्त छलाह नरसिंह मिश्र।

खैर, नरसिंह मिश्रकेँ सुदर्शनक अलावे तीन पुत्री आ दू पुत्र आरो भेलनि। सुदर्शनक ध्यान शुरू सँ अध्यात्म आ साधू-संतक साहचर्यमे लगैत छलनि। पिताक साकांक्ष भेलाक उपरान्तो ई किछुए दिनक बाद स्कूल गेनाइ छोड़ि देलाह। पिता हिनक मनोदशा देखैत चुप भऽ गेलथिन। अरेड़ डीह टोलक पछिम छोड़ पर एक पोखरि आ ओहि पर गामक डीही परिबारक जमीन पर एक कुटी छैक। अहि कुटिक कम सँ कम एक सए बरखक इतिहास रहलैक अछि। गामक लोकक कहब

छनि जे एहि कुटिक निर्माण एक अज्ञात साधू जिनकर नाम बाबा लक्ष्मण दास छलनि सएह करोलनि। लक्ष्मण बाबा दिव्य पुरुख छलाह। ओ ककरो कहियो अपन गाम-जाति-कुल-परिवारक संबंधमे कोनो तरहक जानकारी नहि देलथिन। ओ यद्यपि लोक सभसँ भोजपुरी भाषामे बजैत छलाह। ओहुना बिहार-झारखण्ड-पूर्वी उत्तर प्रदेशक साधू सन्यासी जन-सामान्य सँ भोजपुरी भाषामे वार्तालाप करैत छथि, भले कोनो भाषाई क्षेत्र सँ कियैक ने होथि। लक्ष्मण बाबा सिद्ध पुरुख छलाह। ओ कार्तिक आ पूस मासमे रातिकऽ जल-समाधि लैत छलाह। जल-समाधि की भेल? एहेन समाधि जाहिमे कार्तिक आ पूसक सब साँझ लोक हिनका एक बाँसक टाटमे राखि पोखरिक जाठि लग टाटकेँ जाठिसँ बान्हि राति भरि लेल छोड़ि दैत छलनि। लक्ष्मण बाबा जल समाधिक समय एक लँगोट मात्र पहिरने रहैत छलाह। फेर भोरे पाँच बजे हुनका पोखरि सँ हुनक चेला सब बाहर निकालैत छलनि। आब धुनि पर काठक मोटगर सील जरा हिनकामे प्राणक संचरण जगाएल जाइत छल। ई प्रक्रिया प्रतिदिन उपरोक्त दूनू मासमे जाबेत धरि लक्ष्मण बाबा जिलनि ताबेत धरि चलैत रहलनि। ओना सिद्ध लोकक किछु दोसरे रँगक स्वभाव भऽ जाइत छैक। लक्ष्मण बाबा सेहो कोनो अपवाद नहि छलाह। हुनकर स्वभाव ई छलनि जे ओ गामक लोक सभसँ कतेक बेर गारि पढ़ि गप्प करैत छलाह। हुनकर शुद्ध ह्रदय आ गामक बारेमे नीक सोचकेँ देखैत हुनकर गारि आ क्रोधकेँ गामक लोक हुनक प्रसाद मानि लेने छल।

लक्ष्मण बाबा सीतामढ़ी लगका रघुनाथपुरक सीयारामजी महराजकेँ अपन उतराधिकारी घोषित कएलनि। सीयारामजी महाराज ओना तँ जाति सँ भुमिहार ब्राह्मण छलाह मुदा एक नंबरकेँ तपस्वी, स्पष्टवादी आ निर्विकार संत। ई अपना समयमे कुटी पर एक पैघ गौशालाक निर्माण कएलाह आ गौवंशक बहुत वृद्धि केलनि। सीयारामजी दास बहुत ठाट सँ जीवन जिबैत छलाह। 2 टा घोड़ा पोसने रहथि आ घोड़े सँ बहुत ठाम अबैत-जाइत छलाह। कुटिक संचालन हेतु हिनका लग लोक सभ किछु बीघा जमीन दानमे देने छलनि। ऊपर सँ कतेक घर सँ भोग सेहो अबैत छलैक। कुटी सही अर्थ-मे टोलक आ अगल-बगलक क्षेत्रक लोक लेल

प्रजातान्त्रिक पब्लिक स्पेस बनि गेल छलैक् जतय राजा-रंक-फ़क़ीर कियोक आबि सकैत छल - ने कोनो धाख ने वन्धन - सर्वत्र आ सबसँ स्वतन्त्र आ भयमुक्त क्षेत्र।

सुदर्शन जी सीयारामजी दास सँ बहुत प्रभावित होमय लगलाह। हुनका सँग बहुत काल उठैत बैसैत छलाह। नहुँ-नहुँ निकटता सुदर्शन जीकेँ सन्यास दिस खिंचए लगलनि। सीयारामजी महाराज सिद्धक गूढ मंत्र आ समाधिक मूल मंत्र हिनका सिखाबए लगलथिन। ध्यान आ साधनाक उपाय बतेनाई शुरू केलथिन। ब्रम्हचर्य पर कोना अधिकार करी से बतेनाई सेहो शुरू केलथिन। सुदर्शन जी चुंबक जकाँ बाबा सीयारामजी दिस बढ़ैत रहलाह। अन्तमे सीयारामजी महाराज सुदर्शन जीकेँ दीक्षा दैत जीवनपर्यन्त लेल सन्यासी बना देलथिन। हिनक वीतरागी सन्यासी बनबाक निर्णय पर हिनक पिता नरसिंह मिश्र तँ किछु नहि कहि सकलथिन, माय जरुर दर्दे अकुलाएल छलथिन। तांहि सँ की, ई तँ रमता जोगी राम/ मुझे दुनियाँ से क्या काम'क माला जपनाई शुरु कऽ देने छलाह। सुदर्शन जीक दीक्षा नाम रामचंद्र दास छलनि। यद्यपि चँदोक आश्रममे हिनका लोक सीताराम दास'क नाम सँ संबोधित करैत छलनि।

किछु दिन अरेड़क कुटी पर धूनी रमेलाक बाद गामक सुदर्शन आब दीक्षा पाबि सीताराम दास बनि गेल छलाह।

ई कतेक बेर अपन माय सँ अनुमति मङ्गैत गिरहस्त जीवन सँ मुक्तिक याचना करैत रहलनि मुदा माय सपाट भाषामे कहि देलथिन: "देखू, अहाँ साधू भऽ गेलहुँ, ताहि सँ हमरा आब कोनो मनाही नहि अछि। मुदा एकबात गाँठ बान्हि लीय, हमर अंतिम समयमे अहाँकेँ आबहे पड़त। भले अहाँ हमर कर्म नहि करब, हमर अंतिम कर्मक साक्षी अहाँ जरूर रहब। देखैत रहब जे कोना अहाँक जन्मदाताक कर्म भऽ रहल अछि। जखन अहाँ से देखब तँ हम वायु मार्ग सँ अहाँकेँ पूर्ण वीतरागी होबाक़ अनुमति दऽ देब। ई बात अहाँ आ हमरा अतिरिक्त कियोक नहि बुझत।" अतेक कहैत हुनक मायक आँखि नोरे-झोरे भरि जाइत छलनि। ई अपनो भावुक भऽ जाइत छलाह। यद्यपि आब हिनका लग कोनो उपाय नहि बचि गेल छलनि।

किछु दिनक बाद ई सीताराम दास अर्थात सुदर्शन जी अपन गुरु सियाराम दास सँ अनुमति लैत साधना लेल सहयाद्रि क्षेत्र दिस गेलाह। ओतय एक दू बरख साधना केलाक बाद हिमालय आबि गेलाह। दुर्गम खोह, बर्फ, कन-कन करैत गंगोत्री-जमनोत्रीक जलमे दाँत कट-कट करैत जारमे साधना करैत रहला। 22 बरख धरि अन्न नहि ग्रहण कएलनि। अंतमे हिमालय सँ पश्चमी उत्तर प्रदेशक बुलंदशहर जिलाक चँदोक गाममे एक कातमे धुनि लगा बैसनाई शुरू कएलनि। हिनका अबिते मातर गामक भाग फुजि गेलैक। गामक बगलमे थर्मल पावर ग्रिड लागि गेलैक। गामक लोक, मुलतः ब्राह्मण मारि-पीट, लुटब-कूटबक धंधामे संलग्न रहैत छल। गाममे किछु दिन रहलाक बाद ई दोसर अनजान गन्तव्यक खोजमे विदा भेलाह। गामक लोक कानय लागल। आ हिनका सँ जनेऊक हेरा दय गामक लोक निहोरा केलकनि जे ई चँदोक गाम छोड़ि कतहुँ नहि जाथि! ई मंद-मंद हँसैत बजलाह : "अगर अहाँ सब हमरा ई वचन दी जे अहाँ सभ सब तरहक अपराध आ फरेब छोड़ि अपन मेहनत केर हिसाबे अपन सात्विक जीवन जीब तँ हम अहि गामक त्याग नहि करब।"

भगवान भोलेक नाम लैत गामक लोक सपथ खेलक जे आब ओ सभ मेहनतक जीवन जीत। आब ई ओहि गाममे रहि गेलाह। गामक लोकक कहब छैक जे ई 12 बर्ष धरि अन्न-पानि किछु नहि ग्रहण करैत छलाह। जल समाधि कातिक आ पूस मासमे लैत छलाह आ जेठक भीषण-उखम ज्वालामे कुटिक बाहर सुरुजक रोशनीमे बैस धुनि जरा आगि तपैत छलाह। गामक लोक हिनका 35 बीघा जमीन दय भव्य मंदिर आ रहबाक स्थान बना देलकनि। 5 लगहरि गाय आ एक सांढ़ सेहो किन देलकनि।

एकबेर एक घटना घटित भेलैक। गामक बगलमे थर्मल पावर ग्रिड रुसक सहयोग सँ लगलैक। जहिया उद्घाटन रहैक तांहि समय दैव जानथि की भेलैक जे मुख्य मशीन काज केनाइ बन्द कs देलकैक। आब की हो? कियोक ओहिमे आ बाजि देलकैक जे संत रामदास जी ठीक कs सकैत छथि। फेर की, भारतक मुख्य अभियंता आ रुसक अभियंता दुनू हिनका लग आबि निहौरा केलकनि। ई कहलथिन; "ठीक छै अहाँ सभ एक बिजली केर कनेक्शन अहि कुटियामे लगा

दियौक।" अभियंता सभ ओहि कुटिया दिस बिजलीक खम्भा लगबा देलथिन। चमत्कार एहेन भेलैक जे तुरते माशिन चलि पड़लैक। हिनकर मान बढ़ि गेलनि। हिनक नामक डंका चहुँ दिश बाजय लागल। दिल्ली, लखनऊ, मुम्बईकेँ हजारक हज़ार लोक हिनकर भक्त बनि गेल। बहुत धनाढ्य सब हिनक चरण-रज पेबाक हेतु ललायित रहैत छल। हिनका पर पैसा, स्वर्ण, द्रव्य आदिक खर्च करबाक उत्कंठा रखैत छल। मुदा ई तँ यति-श्रेष्ठ बनि गेल छलाह। कहियो ककरोसँ एक पैसा अपने हाथे नहि ग्रहण कएलाह।

एकदिन बाबा रामचन्द्र दास महाराज अपन जन्मभूमि अर्थात अरेड़ पहुँचलाह। हिनकर जटा-झोंट बढ़ल छलनि। चिताक भष्म लगेने छलाह। माय गदगद भऽ गेलथिन। हिनकर गुरु सेहो हिनका देखि आनंदित भेलथिन। आब साल दू सालमे गाम अवश्य आबि जाइत छलाह।

एकबेर एकाएक हिनक पिता नरसिंह मिश्रक निधन हार्ट अटैक सँ भऽ गेलनि। हिनका खबर भेटलनि। ई दौड़ल अएलाह आ पिताक श्राद्ध कर्म अपना निरीक्षणमे करौलनि मुदा अपने कोनो कर्ममे भाग नहि लेलाह। किछु दिनक बाद जखन हिनक माता विमार पडलथिन तँ अनायासे आबि गेलाह। हिनके सामने माए अंतिम सांस लेलथिन। ओहू कर्ममे ई शामिल तँ नहि भेलाह मुदा कर्म अपना निरीक्षणमे करोलनि।

आब हिनकर दीक्षा गुरु बाबा सियाराम दास सेहो बूढ भऽ गेलथिन। हुनकर आँखि काज केनाइ बन्द भऽ गेलनि। जखन हुनकर भतीजाकेँ ई जानकारी भेटलनि तँ ओ हुनका गाम लऽ गेलनि। ओतहिं किछु दिनमे हुनक महापरिनिर्वाण भऽ गेलनि।

अरेड़क कुटिक आब क्षय होमय लगलैक। सब गोवंश बिका गेलैक। गाम सँ भोगक थाड़ एनाई बन्द भऽ गेलैक। मंदिर ध्वस्त होमय लगलैक। सब किछु तीतर-बितर होमय लगलैक। ई अर्थात महाराज रामचन्द्र दास गाम अयलाह तँ लोक सभक मीटिंग बैसा भव्य मंदिरक निर्माण शुरू केलाह। हिनक सुझाएल काजमे गामक लोक खुलि कऽ भाग लैत छल। कोना पैसा कौड़ीक व्यवस्था भऽ

जाइक से ककरो पते नहि चलैक। गाम फेरो हिनका प्रतापे एक सूत्रमे गथा गेल। ई बीच-बीचमे गाम अबैत रहलाह।

हिनकर भक्त 2500 सँ ऊपर दिल्ली आ मुम्बईमे छथि जे हिनकामे भगवानक वास मनैत छथि। ई अपन शिष्य आ उयराधिकारी मिथिलेक एक युवक सन्यासीकेँ चुनने छलाह।

अगस्त 2018 केँ चारिम सप्ताहमे ई अहि नश्वर कायाकेँ त्यागि देलनि। हिनक क्रिया-कर्म हिनक कर्मस्थली अर्थात बुलंदशहर केर चँदोक गाममे हिनक आश्रममे 81 बरखक अवस्थामे भऽ गेलनि। ओहि सँ पूर्व ई कोनो तरहक दबाई लेने स्वेच्छा सँ छोड़ि देलाह। गामक लोक कानि-कानि बताह भऽ गेल। हिनक मृत शरीरकेँ चारि दिन धरि एयर कंडीशन बॉक्समे राखल गेल। अरेड़ संबाद गेलैक। अरेड़ सँ करीब 11 आदमी चँदोक अयलाह। महापात्र सेहो गाम सँ गेलाह। सब कर्म मिथिलाक रितिये भेलनि। इमहर अरेड़क लोक सेहो सात गामक भंडारा केलक। जहिया ई अपन शरीरक त्याग कएलनि तहिया अरेड़मे एहेन कियोक नहि छल जे नहि कानल हो!

अहि तरहेँ श्री रामचन्द्र दास अरेड़क एक जिबैत मानवीय धरोहर छलाह। ई अपन साधना, नीक कर्मक बलें स्थानीय सँ वैश्विक भऽ गेल छथि।

हिनका सँ हमर सम्बन्ध सेहो अछि। केहेन? ई हमर पिताक पितामहक स्वर्गीय अमृतनाथ मिश्रक सहोदरकेँ पौत्रक पुत्र छलाह। अहि तरहेँ ई हमर जेठ भ्राता सेहो छलाह। मुदा ओ साधु छलाह तँ समस्त संसारक छलाह। हुनका देखि संतक संबंधमे ई प्रचलित मान्यता साकार भऽ जाइत अछि:

“जात न पूछो साधू की।
पूछ लीजिये ज्ञान।”

अरेड़क अहि शाश्वत यतिवर सुदर्शन-रामचन्द्रदास-सीतारामदासकेँ हमर बेर-बेर प्रणाम, विनम्र श्रद्धांजलि।

11

रामानन्द साहू:
एक विलक्षण स्वतंत्रता सेनानी

आई अपन गाम अरेड़क एक विलक्षण व्यक्तित्व आ स्वतंत्रता सेनानी केर चर्च कs रहल छी। हिनकर नाम छलनि रामानन्द साहू। ई अरेड़ हाट केर छलाह। शुरूमे स्वतंत्रता सेनानी छलाह आ आजादीक बाद जीवन पर्यन्त धर्मानुरागी आ निर्लोभ लोक सेवक बनल रहलाह। जीवन यापन हेतु एक दोकान चलबैत छलाह । जखन बच्चा सभ छेटनगर भs गेलनि तँ शेष जीवन सामाजिक कार्यमे लगा लेलनि। रामानन्द जी दीर्घायु भेलाह आ करीब 87 वर्षक अवस्थामे अपन शरीरक त्याग केलनि। ई हमर पितामह केशव मिश्रक बाल सखा छलाह। जहिया कहियो हाट पर भेटथि बहुत सिनेह करैत छलाह आ हमर पितामह केर अनेक प्रसंग सुनबैत छलाह। जखन हिनकर स्मरण करैत छी तखन हमरा सुभद्राकुमारी कुमारी चौहान केर अमर कविता:

"बुन्देलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मरदानी वह तो झांसीवाली रानी थी।।"

याद आबैत अछि। एखनो सुतल आ ठण्ड पड़ल सोनितकेँ धधका दैत अछि। मंगल पाण्डेय केर हिम्मत एखनो जुआन तँ जुआन बूढ़ों शरीरकेँ खूनमे जोश आनि दैत छैक। स्मरण आबि जैत अछि जे आई हिनके लोकनिक बदौलत हमरालोकनि स्वतन्त्र आ नित दिन विकसित होइत भारत देशमे जे दुनियाक सबसँ पैघ प्रजातन्त्र अछि जीब रहल छी, आनंदित भs रहल छी। किछु वीर आ वीरांगना यद्यपि एहनो छथि जिनका बारेमे इतिहास जेना चुप्पी साधने हो! इतिहासकार पता नहि कोन कारण सँ बौक भs गेल होथि! ऐना कथिलेल? मुदा लोक तँ लोक होइत अछि। लोक नीक आ अधलाह सभ बातकेँ अपन मेमोरीमे सजा कs राखि

लैत अछि। स्थानीय लोक अपन नायक अथवा नायिका केर बलिदानकेँ लोककथा, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकनाटक आदिक माध्यम सँ मूल घटनामे किछु नाटकक भाव, किछु आश्चर्य केर भाव, किछु दैविक भाव, किछु करामाती भाव आदि सँ सजा ओकरा जिबंत केने रहैत अछि।

उदाहरणक रूपमे हमर गाम अर्थात मधुबनी ज़िलाक अरेड़ गामक अरेड़ हाटक एक युवक रामानन्द साहू जे 40 वर्ष केर अवस्थामे जे केलनि तकर कमाल देखू। की कमाल? रामानन्द साहू ओहि समय 40 वर्षक छलाह। अपन व्यवसायमे लागल। एकाएक गाँधी जी 1942 मे "अंग्रेजों भारत छोड़ो" केर नारा देलखिन। देखैत-देखैत पूरा देश ओहि आन्दोलनमे कूदि गेल। रामानन्द जी सेहो कूदि पड़लाह। आन्दोलन किछु दिन लेल बीभत्स रूप लऽ लेने छल। तोड़-फोड़, हिंसा, आगजनी आदिक घटना आम भऽ गेलैक। रामानन्द जी अनेको बिजली खम्भा तोड़लनि – "भारत माता की जय" आ "अंग्रेजों भारत छोड़ो" केर नारा सँ वातावरणकेँ दिगदिगंतमे महिमामंडित करैत रहलनि। कनिकबो पकड़ऽ जएबाक आ ओकर बादक अवस्था केर चिंता नहि छलनि। देशप्रेममे बताह भेल रहथि। एक भीड़ पर पुलिसक गोली चललैक। रामानन्द जी बचि गेलाह मुदा पुलिस पकड़ि लेलकनि। तैय्यो बिना घबरेने "भारत माता की जय" केर सिंहनाद करैत रहलाह। अंग्रेज सब हुनकर एक-एक मोछक केश नोचि लेलकनि। मुदा रामानन्द जीक देशप्रेमक भावनामे कहियो कमी नहि एलनि। हम सभ बच्चा रही तँ रामानन्द जी आ गामक लोक एहि बातकेँ कहथि। आई बिहारक स्वतंत्रता आन्दोलन केर सेनानीमे हुनकर नाम नहि छनि मुदा अरेड़ चौक पर आ हाट पर लोक हुनक सहयोगकेँ लोक कंठमे जियेने अछि। ओ ओतय केर सभ जाति, वर्ग, लिंग आ समुदाय केर नेता छथि। आदर्श देशभक्त छथि, रोल मॉडल छथि, जननायक छथि। अजातशत्रु छथि।

हुनकामे सुभाषचंद्र बोस केर उत्साह आ महात्मा गाँधीक धैर्य छलनि। 1984 केर आसपास ओ अपन नश्वर काया छोड़लनि। तावेत धरि सभक कंठहार बनल रहलाह। दुःख एहि बातक होइत अछि जे गामक अथवा मधुबनीक कियोक इतिहासकार एहि जिवंत महापुरुषक सम्बन्धमे, हिनकर त्याग आ स्वतंत्रता

संग्राममे भूमिकाक बारेमे आई धरि नहि लिखलनि। कतेको लोक अनेरे सुविधा लेबाक लेल अपन नाम स्वतंत्रता सेनानीक लिस्टमे लिखेने छथि मुदा एक महान स्वतंत्रता सेनानीक नाम जेना कोनो गामक चौक पर कैद भेल हो! ऐना कते दिन चलत?

प्रथम बेर हमर पिताक जेठ भाय – रघुनन्दन मिश्र हमरा हुनक स्वतंत्रता संग्रामक भूमिका केर संबंधमे कहलनि। बादमे पिताजी सेहो आ जखन नमहर भेलौं तँ कतेक आदमी। एक बेर ओ अपने सब वृतान्त सुनौलनि। हमर पिता कहलनि: "रामानन्द जी सामान्य परिवार सँ छलाह। एक दोकान सँ घर चलैत छलनि। मुदा छलाह स्वाभिमानी। कतेक लोक आ नेता सभ विचार देलथिन जे हुनकर नाम दऽ देल जेतनि स्वतंत्रता सेनानीमे ताहि सँ हुनका पेंशन, स्वास्थ्य सेवा, मुफ्त ट्रेन यात्रा आदिक सुविधा भेट जेतनि। मुदा स्वाभिमानी लोक अपन कृत्य आ देश लेल संग्रामकेँ कहियो सांसारिक सुविधा लेल नहि भजेलनि। हुनक पुत्र सभ सेहो हुनकर एहि भावनाकेँ सम्मान कएलथिन। जखन अरेड़मे खादी भंडार बनलैक ताहि समय रामानन्द साहूकेँ खादी भंडार केर नियामक मंडल केर सदस्य बनाएल गेलनि। जखन अरेड़ केर हाई स्कूल केर स्थापना भेलैक ताहू समयमे सर्वसम्मति सँ हिनका ओकर कार्यकारिणी केर सदस्य बनाओल गेल। अपन तमाम सामाजिक जिम्मेदारीक पालन ओ जीवन पर्यंत ईमानदारी आ निष्ठा सँ करैत रहलनि। हुनक चेहरा केर तेज, दिव्य भाव अइयो हमरा स्मरण आबि रहल अछि। जखन 1942 केर भारत छोड़ो आन्दोलनमे अंग्रेज हिनकर एक-एक मोछ उखाड़ि लेलकनि तखनो ई अपन आन साथी सभक नाम नहि बतेलाह। बादमे बहुत दिन धरि ओहि घाव सँ परेशान रहलाह आ जीवन भरि कहियो मोछ नहि रखलाह। ओना तँ रामानन्द बाबू छोट खुट्टी केर लोक छलाह मुदा हुनका भीतर अनंत उर्जा बहैत छलनि।

कहि नहि कियैक आई रातिमे ओ हमर सपनामे आयल छलाह। छोट सन चहकैत चमकैत काया, पिण्डश्याम वर्ण, ठोसगर-मिठगर बोल, सबहक प्रति सिनेह आ देशक भविष्य केर चिंता सँ युक्त रामानंद बाबू हमरा कहैत छलाह, "रौ बौआ, हम तोहर बाबा सङ्गे बहुत ठाम घुमल रही।"

एक बात ईमानदारी सँ कहैत छी। आजुक सपनोमे ओ चुपे रहलाह मुदा अपन आँखि सँ जेना एक नहि अनंत प्रसंग सुनबैत रहलाह। हुनकर आँखि बजैत रहल आ हमर कान साक्षी भेल सभ बात कृतज्ञ भेल सुनैत रहल। हमर सपना ओहि क्षणक साक्षी बनल रहल। कथा जेना सिनेमाक रील जकाँ घुमैत रहल।

रामानन्द साहूकेँ कोटिशः नमन।

12

अरेड़रत्न युगपुरुष विश्वम्भर झा

स्वर्गीय विश्वम्भर अरेड़ गामक गौरव पुरुष छलाह। गामक अलावे चारू कातक लोक हुनका सँ बहुत आश लगोने छल। छ फीट तीन इंच केर लंबाई छलनि। दिव्य पुरुष छलाह। हुनका सँ अरेड़ तँ अरेड़ अगल-बगल केर गाम सभकेँ बहुत आशा रहैक । मुदा से नहि भेलैक ।

हमर गाम अरेड़ मधुबनी जिलाक अंतर्गत अबैत अछि। ई गाम बाढ़िक चपेट सँ मुक्त गाम रहल अछि। एक गाममे दू पंचायत छैक। तीन भऽ सकैत छलैक मुदा क्षेत्रीय परिसीमनक कारण गामक महत्वपूर्ण अंग बेलौंजामे चल गेल। कहियो एक डीह सँ पूरा गाम पसरल । डीहक चारु कात गाछ बृक्ष आ अंडीक सघन बन रहैक। गामक बीज पुरुख लोकनि ओकरा साफ कएलनि आ अंडी सँ अँरेड़ गाम बनल। बादमे संस्कृतक विद्वान लोकनि एकरा अरेरु बना देलाह। जखन बैंक आ थाना बनल तँ बैंकक अधिकारी कोनो दक्षिणात्यक लोक छलाह। अरेड़क "अँ" केँ ध्यानमे रखैत ओ अंग्रेजीमे अरेड़ केँ ANRER लिख देलथिन्ह। जखन ओहि अंग्रेजी बला ANRER केँ देवनागरीमे लिखल गेल तँ अनरेर भऽ गेल। गामक लोककेँ साकांक्ष भय अहि गलती केँ शीघ्र निवारण कऽ लेबाक चाही।

अरेड़ गाम अदौ सँ कृषि कार्यमे दक्ष, परिश्रमी रहल अछि। अतय केर धरतीं उर्वर आ तीनफसला रहल छैक। आज़ादी सँ पहिने जयनगर सँ कमला नदी सँ नहरि सँ कृषि कार्य हेतु पानिक व्यवस्था छैक। मुदा शिक्षाक क्षेत्रमे बहुत आगा नहि छल अरेड़। तकर सूत्रधार बनलाह करीब 60 वर्ष पूर्व गामक एक युवा श्री विशंभर झा। विश्वम्भर झा बच्चा झाक जेठ भाई रत्ते झाक पौत्र आ घुरन झाक पुत्र छलथिन। कहैत चली जे घुरन झाक दोसर विवाह दरभंगा जिलाक भुसकौल गाम छलनि। घुरन बाबूक पत्नी डॉ शुभद्र झाक सारि छलथिन। विश्वम्भर झा राजनीतिमे साकांक्ष छलाह। गाम आ अगल-बगल केर लोक हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य,

रोजगार आदि लेल सतर्क रहैत छलाह। हुनके प्रयास सँ अरेड़मे पोस्ट ऑफिस स्थापित भेल। रोजगार लेल ओ खादी भण्डारक स्थापना केलनि। खादी भण्डारमे स्त्रिगन सभ सूत काटय लागलि। बुनकर सभ बुननाइ शुरू केलक। सरिसभक तेल पेड़ेनाइ प्रारम्भ भेलैक। लोक विश्वम्भर झाक बात पर, हुनक कर्म पर विश्वास करय लागल। विश्वम्भर झा नव-नव बात आ कायक्रम अरेड़ आ पास पड़ोसक गाम लेल करैत रहलाह। हुनकेँ समयमे बिजली सेहो आबि गेलैक।

विद्यार्थी सभकेँ पढबा दिस अभिरुचि होइक ताहि लेल विश्वम्भर जी पुस्तकालय अभियान शुरू केलनि। अरेड़, बेलोजा आदि गामक युवक सभ हुनका संगे पुस्तकालय आन्दोलनमे लागि गेल। खादी भण्डार आ पुस्तकालय दुनू संस्थान लेल अपन परिवार सँ जमीन दान केलनि आ संस्थाक पजीकरण भेलाक बाद ओकर गृह निर्माण भेलैक। अरेड़क भाग जेना एकाएक जागि गेलैक। राजनीति जगतमे विश्वम्भरजी उदीयमान नक्षत्र बनि उगलाह। हुनक यश आ कर्मठताक ध्वजा पटनाकेँ कहैत अछि दिल्ली धरि पहुँच गेल। ललित नारायण मिश्र सनहक नेता सेहो विश्वम्भर जी सँ बहुत प्रभावित भेलाह। इंदिरा गान्धी सँ सेहो भेट करा देलथिन। कांग्रेस पार्टीमे जानल नाम भऽ गेलाह विश्वम्भर जी। पूरा गाम हुनकर अप्पन छलनि। खादी भण्डार चलि चुकल रहैक, एक लघु मुदा विलक्ष्ण पुस्तकालयक निर्माण भऽ गेल रहैक। पुस्तकालयमे वाचनालय अर्थात रीडिंग रूम अलग सँ बनल रहैक। किछु छात्र सभ ओकर संचालन केर जिम्मा लेलनि। पुस्तकालयकेँ आगा आ कातमे एक हरियर घास सँ भरल मैदान बनलैक। ओहि मैदानमे युवक आ छात्र सभ वोली बॉल खेलाथि। एक नव सभ्य, शिक्षित समाज होबाक दिशामे पवनक वेग सँ आगा बढि चुकल छल अरेड़। गरीब घरक स्त्रिगन सभ चरखा चला नीक आमदनी केनाइ शुरू केलनि। डाक घर आब बीच हाट सँ नव निर्मित खादी भण्डारक प्रांगनमे पक्का घरमे आबि गेल छलैक। पुस्तकालय आ खादी भण्डारक परिसर रंग विरंगक फूल, फल आ गाछ सँ सुशोभित भऽ रहल छलैक। कहि चुकल छी जे अरेड़मे हाई स्कूल नहि भेला सँ विद्यार्थी सभकेँ बहुत दिक्कत होइक। लोहाक बाद रहिकामे सेहो स्कूल भऽ गेल रहैक मुदा अरेड़मे हाई स्कूल एखनो धरि नहि रहैक। इ बात 1963 ईस्वीक अछि।

किछु छात्र अपन समस्या एक दिन विश्वम्भर जी लग रखलनि। विश्वम्भरजी बात पर गम्भीर भेलाह। तुरत ओकर जोगारमे लागि गेलाह। जखन पता केलाह तँ ज्ञात भेलनि जे स्कूल लेल एक बिघा जमीन आ दस हजार नगद जमा भऽ जाइक तँ सरकार सँ हाई स्कूल केर मान्यता भेट जएतैक। मतलब भेलैक जे कम सँ कम एक बिघा सड़कक कातक जमीन दस हजार टका केर डिपाजिट आ पन्द्रह हजार टाका हाई स्कूल केर भवन लेल तुरत चाही। प्रश्न इ ठाढ़ भेलैक जे अतेक जमीन आ पाई के देतैक? विश्वम्भर झा बहुत सोचमे पड़ि गेलाह मुदा विचलित नहि भेलाह। हुनका विश्वास रहनि जे एकर कोनो ने कोनो जोगार अवश्य भऽ जेतैक।

एक दिन गामक लोक सभहक एक बैसार भेलैक। सभ गणमान्य लोकनि लग विश्वम्भर झा हाई स्कूल केर प्रस्ताव रखलनि। सभ अहि प्रयास केर स्वागत केलनि। आब समस्या रहैक जे जमीन के दान करत? अहि प्रश्न पर सभ चुप। गामक सभ सँ प्रतिष्ठित लोक आ डीही छलाह रामचन्द्र झा उर्फ़ रामबाबू। रामबाबूकेँ पक्की सड़कक पच्छिम दिशामे पर्याप्त जमीन छलनि। विश्वम्भर झा रामबाबू सँ स्कूलक जमीन दान करबाक निवेदन केलथिन मुदा रामबाबू साफे जमीन देमा सँ मना कऽ देलथिन। आब की हो? लोक सभ आपसमे घेंघाउज करऽ लागल। ओही क्षण संयोग सँ गामक एक कर्मठ आ सुभ्यस्थ किसान बच्चा झा अपन खेत सँ घर दिस जा रहल छलाह। लोकक भीड़ आ हल्ला देख जिज्ञासा केलथिन: “कोन बातक भीड़ छैक?”

विश्वम्भर झा आगा अबैत उत्तर देलथिन: “बाबा, अरेड़मे हाई स्कूल नहि अछि। एहि सँ गामक विकास जेना अवरुद्ध भेल अछि। एहिलेल आइ हम सभ जमा भेल छी। रामबाबू सँ जमीन लेल निवेदन हमरा लोकनि केलहुँ मुदा ओ सोझे नाठि गेलाह। कहि देलनि जे कोनो हालातमे जमीन नहि देताह।”

बच्चा झा: “कतेक जमीनक दरकार अछि बाऊ?”

विश्वम्भर झा: “एक बिघा जमीन आ दस हजार टका केर डिपाजिट अत्यावश्यक छैक बाबा। ओकरा बिना फ़ाइल नहि खोजल जा सकैत छैक।”

बच्चा झा पांच मिनट लेल गुम भऽ गेलाह। गुमसुम भेल मोने-मोने किछु सोचैत रहलनि। फेर हुनकर कपार पर एक आभा चमकि उठलनि। ओ बाजि

उठलाह: “ठीक छैक हम एक बिघा जमीन आ दस हज़ार टका दैत छी। तुरत काज आगा बढ़ाउ।” बच्चा झा केर इ वचन सुनतहि सभहक मोन प्रसन्न भऽ उठलैक। तुरत एक कमिटी बनलैक जकर सचिव विश्वम्भर झा बनलाह। बच्चा झा एवं अन्य गणमान्य लोकनि ओकर सदस्य सेहो भेलाह। बच्चा झा तीन दिनक भीतर जमीन केर काग़ज़ बना देलथिन आ दस हज़ार टका दऽ देलथिन। काज शुरू भऽ गेलैक। अरेड़ आ अगल-बगल केर योग्य आ गुणी लोककेँ शिक्षक नियुक्त कएल गेलैक। बादमे गामक आनो लोक सभ जमीन देलथिन। चूँकि सर्वाधिक जमीन आ पैसा बच्चा झा सँ भेटलैक ताहिं हाई स्कूलक नाम भेलैक बच्चा झा जनता उच्च विद्यालय अरेड़।

स्कूलक मान्यता तँ भेट गेलैक मुदा भवन निर्माण लेल मुद्राक अभाव बनले रहलैक। एकबेर बच्चा झा फेरो बीड़ा उठेलनि आ दस हजार टका भवन निर्माण लेल देलथिन। भवन बनलैक मुदा लेबोरेटरी, पुस्तकालय आदि लेल एखनो पैसाक दरकार छलैक। विश्वम्भर झा केँ विश्वास छलनि जे गामक लोक सहयोग करथिन आ सभ किछु भव्यताक संग सम्पूर्ण भऽ जेतैक। काज शनैः-शनैः आगा बढ़ि रहल छलैक। अरेड़मे हाई स्कूल, पुस्तकालय देखि, लोकक रुझान देखि, छात्र सभहक मुश्कान देखि एना लगैत छलैक जेना विद्याक देवी सरस्वती प्रसन्न होथि। सभ किछु नीक सँ चलि रहल छलैक। अरेड़ विकास केर उफान पर चलि रहल छल, दौड़ रहल छल।

मुदा होनी किछु आर लिखल रहैक । एकाएक एहेन ने प्रचण्ड हवाक बिहारि एलैक जे सभ किछु उखाड़ि देलकैक। सभ खोता उजड़ि गेलैक। चिड़िया उड़ि गेलैक! महावज्र खासी पड़लैक। विश्वम्भर झा एकाएक वीमार पड़ि गेलाह। बहुत सीरियस भऽ गेलाह। जाँच पड़तालमे पता लगलनि जे पेटमे अल्सर छनि। तुरत ऑपरेशन केर जरुरत पड़लैक। 10 नवंबर 1970 छठि पाबनि केर खरना दिन हुनक ऑपरेशन भेलनि। ऑपरेशन केर बाद एकहुँ क्षण लेल होश नहि एलनि। स्थिति विकराल भेल गेलनि। अंततः दरभंगा केर डॉक्टर सभ आश छोड़ि देलनि। आ इमहर अरेड़ गामक लोक छठि पाबनिक संझुका अर्घ दऽ रहल छल आ दरभंगा केर हॉस्पिटलमे इन्टेन्सिव केयर यूनिटमे अरेड़क गौरव आ भविष्यक आश विश्वम्भर

झा मात्र 37 वर्षक अवस्थामे अपन प्राण त्यागि देलनि। अरेड़ अनाथ भs गेल। मिथिलाक दोसर गाममे भोरुका छठिक अर्घ चलि रहल छल, लोक आनंद मंगल गाबि रहल छल; एकर विपरीत अरेड़मे मातम केर वातावरण छल। विश्वम्भर झाक चिता भोरे भोर धू-धू जरि रहल छल। लोकक तँ की कहब लगैत एना छल जेना खादी भण्डार, पुस्तकालय, डाक घर आ हाई स्कूल सभ भवन आ धरती कानि रहल अछि! एहनो कतौ अनर्थ भेलैक अछि! ओह विधाता ओह! सभ चौपट्ट! शायद विश्वम्भर झा अतबे दिन लेल अरेड़क धरती पर अवतरित भेल छलाह।

पढबामे सामान्य मुदा जनान्दोलनी आ जनसरोकारक लोक छलाह विश्वभर बाबू।

विश्वम्भर बाबू हमर पिता सँ मात्र 2 बरख पैघ छलाह मुदा मित्रवत छलाह। बादमे हमर पिता स्कूलक मास्टरी छोड़ि खादी भण्डारमे आबि गेलाह। स्पष्ट करी जे हमर पिता अरेड़क खादी ग्रामोद्योगमे नहि अपितु बिहार खादी ग्रामोद्योगमे छलाह। दुनू एक दोसर सँ खूब चर्चा करैत छलाह। आर्थिक विपन्नता सँ घनघोर संघर्षमे व्यस्त हमर पिताकेँ अपन अपूर्व मित्र विश्वम्भर सँ अनेक तरहक आर्थिक आ मानशिक सहयोग भेटैत छलनि।

10 नवंबर 1970 के दिन अरेड गामक इतिहासमे सियाह भs गेल। अरेड़ जेना अनाथ भs गेल! भरल दुपहरियामे अन्हार भs गेल!

पाठकक प्रतिक्रिया

हमर मसियौत भाई छलाह,मात्र एक टा कन्या वीभा क विवाह भेल छलैनि,द्विरागमनो नहिं भेल छलैक। एपेंडिक्स क दर्द स बेहाल, दरिभंगा अस्पताल में भर्ती भेल छलथिन। ऑपरेशन टेबुले पर एपेंडिक्स फाटि गेलैनि,लाख प्रयासक बावजूद बचाओल नहिं जा सकला।

ओहि दिन जे क्षति भेल ओ मात्र अरेड़ क नहिं, सम्पूर्ण मिथिला क क्षति भेल छल जहन मिथिला क विकास क स्वप्न संजोगने भैया आंखि मुनि लेने रहैथि।

नमन ओहि महान कर्म योद्धा के। – डॉ आशा झा

पूज्य स्व विश्वम्भर झा अपन सामाजिक जीवन पुस्तकालय आंदोलन सं आरंभ कैलनि। अरेरमे जनता पुस्तकालयक निर्माण कैल जे ताहि दिनमे सम्पूर्ण मधुबनी सब- डिवीजन मे सबसं श्रेष्ठ सार्वजनिक पुस्तकालय छल। एतबे नहि, ओ बेनीपट्टी मधुबनीक पचीसो पचास गाममे पुस्तकालय फोलबौलनि। तकर बाद हुनक अभियान खादी ग्रामोद्योगक दिशि छल।अरेरहुमे व्यापक खादी भंडार, जाहिमे गाम घरक सैकड़हु युवक के जीविका भेटलैक। समीपक आनो आनो गाममे खादी भंडार फुजल।

हमरा जनैत अरेरक बच्चा झा हाइ स्कूल ओ तकर तुरत बाद मे बनबौलनि। उक्त स्कूलहुमे अपन गामे घरक सक्षम पचीसहु युवक लोकनिकें जीविका प्राप्त भलनि।

कचोट अछि जे ओहि कोटिक समर्पित समाज सेवी पूरा प्रान्तमे आइ धरि केओ दोसर नहि भेल।

जें कि हमर घर नागदह, पढ़ब आ' नाटकमे हमरा विशेष रुचि, तें हम बाल्यकालहिसं ओहि पूज्य चरणक सान्निध्य सुखक पर्याप्त भोग केने छी। हुनक स्नेह एवं शुभाशीष खूब प्राप्त केने छी।

अहां, चि श्री कैलाश बाबू हुनक स्मरण आ दर्शन कराक' आइ हमर रोम रोम तृप्त क' देल। संभव हो तं हमर एहि टिप्पणीक स्थान सेहो अपन आगत वृहदालेखमे सुरक्षित क' लेब।

लाख लाख आशीष अहांके।

जय मैथिली। – बुद्धिनाथ झा

विलक्षण समाजसेवीकें शाब्दिक तिलांजलि। **– डॉ धनाकर ठाकुर**

13

यत्र जीव तत्र जाह: रघु बाबूक प्रसंग

हमर पित्ती रघुनन्दन मिश्र बड्ड विनोदी लोक छलाह। हमर पितामह स्वर्गीय केशव मिश्र केर दू विवाह छलनि। प्रथम विवाह देबहार भेल रहनि जाहिमे दू पुत्र आ एक पुत्री छलनि। रघु बाबू अपन तीनू भाई बहिनमे छोट छलाह। हिनका सँ जेठ भाय सात वर्षक अवस्थामे काल कवलित भऽ गेलथिन्ह। किछुए दिनक बाद रघु बाबू केर माय सेहो ख़त्म भऽ गेलथिन्ह। सभ सँ जेठ बहिन केर विवाह भेलनि मुदा विवाहक तेसरे वर्ष बिना कोनो सखा संतानके ओहो गोलोकवासी भऽ गेलीह। आब हमर पितामह अपन दोसर विवाह दरभंगा जिला केर भुसकौल गाममे केलाह। केशव मिश्र अपन विवाहक दोसरे वर्ष अपन पुत्र रघु बाबू केर विवाह सेहो भुसकौल गाम करा देलथिन्ह। दुर्भाग्य सँ जखन हमर पिता एग्यारह मासक भेलाह तँ हमर पितियाइन सेहो स्वर्गक डेग धऽ लेलनि। आब हमर पितामह केशव मिश्र पुनः विवाह नहि करताह तकर निर्णय लऽ लेलनि। ओहुना गृह कार्य लेल रघु बाबू केर पत्नी आबि गेल छलथिन्ह। अर्थ स्पष्ट भेल जे रघु बाबू अर्थात रघुनन्दन मिश्र हमर पिता श्री रामनंदन मिश्रक बेमातर भाई छलाह। दुनू भाईमे लगभग बीस वर्षक अंतर छलनि। हमर पिता छोट छलथि आ रघु बाबू पैघ। रघु बाबूक पहिल पुत्र हमर पिता सँ थोड़बे छोट छलथिन्ह ताहिं जखन हमर पितियाइन अर्थात हमर पिताक माय ख़त्म भऽ गेलथिन्ह तँ रघु बाबू केर पत्नी आ हमर पिताक भाऊज हुनका अपन दूध पिया कऽ रक्षा केलथिन्ह। हमर पिता आ हमर पितियाइनमे सदैव एक पुत्र आ माताक संबंध रहलनि। रघु बाबू सेहो हमर पिताकेँ अपन पुत्र जकाँ मानैत रहलथिन्ह। दुनू भाईमे अतेक प्रेम जे की कही। हमर पिताकेँ बोखार चढ़नि तँ रघु बाबूकेँ सेहो बोखार भऽ जाइन।

मुदा रघु बाबू केर जीवनमे बहुत दर्द छलनि। तीन पुत्र भेलनि आ तीनों ख़त्म भऽ गेलनि। आर तँ आर लगभग बाबन बरखक अवस्थामे हुनकर पत्नी सेहो

एकाएक ख़त्म भऽ गेलथिन्ह। रघु बाबू केर सार नहि छलनि ताहि ओ अपन सासुरमे जतय यथेस्ठ जमीन रहनि जा कऽ बैस गेलाह। रघु बाबू तीन सारि आ पांच बेटीक विवाह केलनि। तेसर बेटीक विवाह बहुत संपन्न आ सरकारी नौकरी करैत सभ्रांत लड़का सँ केलाह। बहुत जथा से बेचलनि मुदा संतुष्ट छलाह जे बेटी सही घरमे व्याहलि छनि। दुर्भाग्य मुदा अतहुँ ठाढ़ छलनि। विवाह केर 6 वर्षक भीतर ओहि कमासुत जमायके हड्डीक टीबी भऽ गेलनि। इलाजमे बहुत खर्च भेलनि। अपन सम्पति संग जमाय केर सेहो बहुत संपति बिका गेलनि आ अंततः जमाय नहिये बचलथिन्ह। एहनो अवस्थामे रघु बाबू नहि टूटलाह आ ने विचलित भेलाह। रघु बाबूकेँ हम सभ भाई बहिन दद्दा कहि बजबैत रही। ओ हमर काकीक निधनक बाद अधिकांश समय अरेड़ रहैत छलाह। अपन सभ सँ छोट बेटिक विवाह भुसकौलमे केने छलाह आ ओकरा अपना संग रखैत छलाह। भुसकौल केर सम्पदा केर देखभाल हुनकर छोटकी बेटी जमाय आ नाति सभ करैत छलनि।

सभ तरहक दुःख, वेदनाक बादो रघु बाबू अपन विनोदी प्रकृति आ प्रवृत्ति लेल विख्यात छलाह। हुनक संस्मरणकेँ लिखल जाय तँ एक रुचिगर प्रसंग भऽ सकैत अछि। पूर्ण सभालोचन छलाह रघु बाबू। पूरा भुसकौल गामक लोक रघु बाबूकेँ मिसर जी कहि संबोधित करैत छलनि। कनितो लोककेँ हंसाबय केर कलामे पारंगत छलाह। रघु बाबू छोट सँ छोट आ पैघ सँ पैघ सभ सँ मित्रता स्थापित कऽ लैत छलाह। ओ हमरोसभ संग तास खेलाइत छलाह आ आनंदित होइत छलाह। हमर पितामह चारि भाई छलाह। ताहिमे हमर पिता सभ अपन आ पितयौत मिलाक पन्द्रह भाई रहथि आ रघु बाबू अपन सभ भैयारीमे पैघ छलाह। ताहिं हुनकर चौदह छोट भाई सब हुनका भैया कहैत छलथिन्ह। रघु बाबू सेहो सभ भाई आ भैयारी केर बाल बच्चा सभकेँ बहुत सिनेह करैत छलाह। हुनका रहला सँ दरबज्जा कखनो लोक सँ खाली नहि रहैत छल।

एकदिन रघू बाबूक सँग हम अरेड़ सँ भुसकौल जाइत रही। बसमे अपन सेंस ऑफ ह्यूमर प्रदर्शित करैत रघु बाबू किछु बजलाह। लोक हँसि पड़ल। एकाएक एक आदमी पूछि देलकनि: “बूढा, अपने कोन गाम जा रहल छी?”

रघु बाबू कजुएल बनल बजलाह: “पहिने भरि इच्छा हँसि लेल जाओ।”

ई सुनितहिं बसक लोक हंसि पड़ल। वातावरण हरियर भऽ गेल रहैक। लोक हंसिते रहैक। जखन माहौल कने शान्त भेलैक तखन रघु बाबू बजलाह: "ओ बाबू, हम जाहि गाम जा रहल छी, ओकर नाम भुसकौल छैक। नाम सुनि अहाँ सब हँसब से हमरा बझल अछि। हालाँकि ई सब आब एहि गामक नाम बदलि अमरपुर क' लेलनि अछि। ताहि सँ की? जे ननु से गर्वहि ननु!"

एहिबात पर लोकक ठहाका फुटि पड़ल।

रघु बाबूकेँ अपन गाम अरेड सँ बहुत प्रेम छलनि। अबथि तँ मासक मास रहि जाइत छलाह।

रघु बाबू गाम आएल छलाह। एक दिन ओ दरबज्जाक बाहर जाड़ मासमे रौंदमे बैसल छलाह। एकाएक तीन साधू भस्म लगोने आ रुद्रक्षक माला पहिरने "हर-हर भोले" कहैत अएलाह।

हमर गामक एक बुढ हमर पित्ती अर्थात रघुनन्दन मिश्रकेँ कहलथिन: "रघु बाबू, कने अहि साधू बाबा संग किछु धर्म चर्चा करू। कने अपन अनुभव हिनका लोकनि संग बाटू। किछु हिनक सुनू। किछु हिनको सभकेँ सुनाऊ?"

रघु बाबू शुरू भेलाह। साधू सभकेँ कुर्शी देलथिन बैसबाक लेल।

रघु बाबू कहलथिन्ह: "महराज! शिव शिव!"

साधू: "शिव शिव यजमान! अहाँक, अहाँक परिवार केर जय हो!"

रघु बाबू: "महाराज, पहिने अहाँ सभ अपन प्रसंग सुनाएब की हम सुनाबी?"

साधू: "यजमान एकहि बात भेल। पहिने अहीं सुना दी। फेर हम सभ शुरू करब।"

रघु बाबू हमर बहिनकेँ निर्देश देलथिन्ह से शुद्ध जलमे गायक दूध सँ साधू सभ लेल चाह बनेबाक लेल। हमर बहिन निर्देश सुनिते देरी चाह बनेबा लेल आँगन दिस बिदा भेलीह।

आब रघु बाबू साधु सभक समक्ष बैस गेलाह आ एक कथा कहब शुरू केलनि: "मिथिलांचल तीन युवक साधू भऽ गेलाह। कूट्टिक एक संत हुनका सभकेँ हिमालय जाय साधना करक हेतु निर्देश देलथिन। संतक आज्ञाक पालन करैत तीनू झोरा आ कमंडल लेलनि आ हिमालय दिस प्रस्थान केलनि। हिमालयसँ गहन

साधना केलाक़ बाद ज़खन सिद्धि प्राप्त भऽ गेलनि तँ तीन साधू पुनः मिथिला अयलाह।”

आशिन मास रहैक आ एकटा ख़त्तामे कनिकबे पानिमे बहुत माछ चल-बल क़रैत रहैक। तीनू साधूकेँ नहि रहल गेलनि। झटदनि किछु सूखायल करची, ख़अढ़-पात इत्यादि जमा कऽ आग़ि लगा घूर तैयार केलाह। दू साधू ख़त्तामे क़मंडल लेने घूसलाह आ आरि बना पानि उपछय लगलाह। पानि उपछैथ रहलाह आ मंत्र पढैत रहलाह:

“माछ ने मारी ऊपछी पानि
माछ ने मारी ऊपछी पानि।।”

ज़खन पानि उपछा गेलनि तँ एक साधू ऊपर आबि गेलाह। एक साधू माछकेँ पक़ड़ि ओकर गर्दनिकेँ ज़ोरसँ दबा फेर ऊपर ठाढ़ दोसर साधू लग ज़ूमाकऽ फेकथि आ फ़क़रा पढ़थि:

“यत्र जीव तत्र ज़ाह
यत्र जीव तत्र ज़ाह।”

ऊपर बला साधू ओहि माछकेँ घूर लग बैसल साधू लग पटकि देथि। अहि क्रममे माछ मरि जाइत छल।

आब घूर लग बैसल साधू ओहि माछ सभकेँ घूरक आग़िमे निम्न मंत्र पढ़ैत देने गेलाह:

“मृतककेँ डाहने कुनोने दोख
मृतककेँ डाहने कुनोने दोख।”

थोड़ेक कालमे माछ पाकि गेलैक। आब साधू अपना झोरा सँ सेंधा नोनक बुक़नी निकालि निम्न मंत्र पढ़ैत पाकल माछ ख़ेनाई प्रारम्भ केलनि:

“चिताक भस्म साधू खाथि
चिताक भस्म साधू खाथि।”

कथा पूरो नहि भेल कि तीनू साधू “राम राम भ्रष्ट कर दिया” कहैत बिना किछु दान दक्षिणा लेने ओतय सँ उलटे पैर तमतमाईंत भागि गेलाह।

14

एहन छलीह माय

हमर माता श्रीमती शिव दुलारी देवी एक असाधारण प्रतिभाक मानवी छलीह। हुनक जन्म एक जमींदार परिवारमे भेल छलनि जे अपन सँपति, जमीन इत्यादि नहुँ-नहुँ क्षय केने जा रहल छल। ताहि परिवारमे चारिम बेटीक रूपमे माय आयल छलीह। ताहिं जखन माय केर जन्म भेलनि तखन इ सुचना नीक नहि मानल गेलैक। मुदा माय केर पीठ पर एक भाई जन्म लेलथिन, सेहो हमर माय केर अपन माय केर पहिल पुत्र। बता दी जे हमर नानाक दू विवाह छलनि। पहिल विवाहमे एक बेटा आ एक बेटी आ दोसर विवाह जाहिमे हमर माय छलीह पांच बेटी आ एक बेटा। हमर मायक बाद मामा केर जन्म भेलनि। मामा निरोग छलाह ई बहुत सँतोषक बात रहैक। हमर मामाक बाद हमरा नानी अर्थात हमर माय केर मायकेँ फेरो दू बेटी भेलनि। खैर! जमींदारी तीव्र गति सँ बिखंडित भऽ रहल छलनि हमर मातामहकेँ। लगभग बारह आना हिस्सा बिका गेल छलनि। ताहि पर छ टा बेटीक विवाह। लोकक कहब छैक जे पहिल मौसी केर विवाहमे हमर नाना बहुत खर्च केलनि। बरियाती आ सरियाती हेतु एक इनारमे प्रचुर मात्रामे चीनी खसा देलथिन। लोक पानि उपछैत गेल आ सरबत पिबैत गेल। कतेक सामान, कतेक भार, कतेक वस्त्र, द्रव्य, गहना, आदि देलथिन तकर ने ओर-छोर। दोसर मौसीक विवाहक समय स्थिति दयनीय होबऽ लगलनि हमर नानाके। तइयो जमीन जथा बेचि नीक आ सुभ्यस्थ वर सँ दोसर मौसीक विवाह भेलनि। तेसर मौसीक विवाहक समय एकदम अर्थशुन्य भऽ गेलाह नाना। आब सामान्य गरीब किन्तु कुलीन आ नीक देह दशा बला वर सभक खोज करऽ लगलाह। तेसर मौसी जे हमर माय सँ सात वर्ष पैघ छलीह हेतु वर तकबाक उदेश सँ हमर नाना हमर गाम अएलाह। एक वर भेट गेलथिन जे पढ़ल तँ नहि छलाह परंतु सुन्दर, सुशिल आ विनम्र रहथि। संयोग सँ ओ वर हमर पिताक अपन पितयौत छलथिन।

हमर तेसर मौसीक विवाह लगभग तय भऽ गेलनि। तखने हमर पिता जे ताहि समय तेरह अथवा चौदह वर्षक छलाह लोहा स्कूल सँ घर आबि गेलाह। हमर दाई अर्थात हमर पिताक माय भुसकौल गामक छलीह। हमर नानी तँ छलीह रखबारी गामक मुदा हुनकर लालन-पालन विवाह दान सभ किछु हुनक मातृक भुसकौल सँ भेल छलनि। ताहिं हमर नाना आ हमर पितामह एक दोसरके जनैत छलाह आ एक दोसरकेँ साढ़ू शब्द सँ सँबोधन करैत छलाह। हमर पिता छलाह प्रचंड कारी मुदा पढबामे अपना वर्गमे सभ सँ नीक विद्यार्थी। हुनक मेधा सँ प्रसन्न होइत लोहा हाई स्कूल केर प्रधानाध्यापक स्वर्गीय रामकृष्ण झा अपन वेतन सँ एक रुपया महिना हमर पिताकेँ दैत छलथिन। खैर भुसकौल केर सँबंधक कारणे हमर पितामह हमर पिताकेँ हमरा नाना दिस इंगित करैत निर्देश देलथिन: “बौआ! ई अहाँक मौसा हेताह, हिनका प्रणाम करू।”

हमर पिता तुरत अपन पिताक आज्ञाक पालन करैत हमर नाना जीके चरण स्पर्श केलाह। हमर नाना जी ज्योतिष केर नीक ज्ञाता छलाह। हस्तरेखा विशारद सेहो रहथि। हमर पिताकेँ अपना बगलमे बैसा किछु पुछैत हाथ देखलथिन। भेलनि: “ई विद्यार्थी बहुत आगा बढतैक!” किछु काल गुम रहलाह फेरो हमरा पितामहके कहलथिन: “साढ़ू, अगर अहाँ वचन दी तँ हम एक चीजक याचना करैत छी।”

हमर पितामह आश्चर्यमे बजलाह: “अहाँ आ हमरामे की समानता? हम निर्धन लोक छी। अहाँ हमरा आगा सम्राट छी। हमरा लग की अछि जे हम देब आ अहाँ हमरा सँ याचना करब?”

हमार नाना उत्तर देलथिन: “अहाँ लग बहुत उत्तम रत्न अछि। पहिने हमरा वचन देब तखन हम अहाँके कहब जे हमरा की चाही अहाँ सँ!”

हमर पितामह एखनो किछु नहि बुइझ पाबि रहल छलाह। मुदा दिलेर लोक छलाह। कहलथिन: “अगर हमरा लग अपनेकेँ देबा लायक कोनो चीज अछि तँ हम वचन दैत छी जे ओ अहाँक थिक। अहाँ लऽ लिय।”

आब हमर नाना बहुत उत्साहित होइत बजलाह: “साढ़ू, हमरा एक बेटी आरो अछि। बहुत सुन्दर, सुशिल आ चंचल। हम एहि बालक के ओकरा सँग विवाह कर चाहैत छी।”

हमर पितामह बहुत प्रसन्न भेलाह मुदा अपन विवशता सेहो बता देलथिन: “वचन दऽ देने छी। हमर बालक पर आब अहाँक अधिकार अछि मुदा किछु सत्य बुझि लेब जरुरी। हम आर्थिक रुपे बहुत कमजोर छी। जे सँपत्ति, द्रव्य आदि छल जे पाकिस्तान (आजुक बांग्लादेश) मे रहि गेल। हमर बालक ऊपर सँ मातृहीन छथि। तेसर बहुत छोट छथि। हमर आर्थिक स्थिति अतेक दयनीय अछि जे हम किछु देबाक अवस्थामे नहि छी।”

नाना उत्तर देलथिन: “तकर चिंता अहाँ जुनि करू। हम सभ व्यवस्था कऽ लेब। अहाँक बालक केर भविष्य स्वर्णिम छनि। ई बहुत आगा बढ़ताह। उमेरि हमर बेटीकेँ सेहो नौ वर्ष छनि। विवाह केर पाचम सालमे दुराग्मन करब।”

आ एहि तरहें हमर पिताक विवाह तय भेलनि। हमर नाना दू वर एक सँगे लेने गेलाह।

हमर पिताके देखिते देरी हमर नानी बहुत दुखी भेलीह। नानीके हमर घरक आर्थिक स्थितिक जानकारी छलनि। नानी हमर नानाजीके कहलथिन्ह: “एक तँ ई लड़का मातृहीन छैक दोसर दरिद्र! कोना अहाँक बेटी ओहि परिवारमे गुजर करत?”

नाना उत्तर देलथिन्ह: “ई लड़का बहुत विलक्षण छैक। बहुत आगा बढतैक। तेज छैक। एकर हाथक रेखा आ ललाट बहुत किछु कहैत छैक। अगर हमर ज्योतिष केर ज्ञान ठीक अछि तँ शिवदुलारी अहाँक सभ सँतान सँ आगा रहत।”

नानी छलीह पतिकेँ परमेश्वर बुझऽ वाली मैथिल ललना। आब ओ विवाहक तैयारीमे लागि गेलीह। विवाह सँपन्न भऽ गेलैक।

माय बहुत छोट छलीह। उपर सँ घरमे ने सासु ने ननदि। हमर पितियाइन अधिक समय अपन नैहर रहैत छलीह। ताहिं दुरागमन ने सोझे, ने तेसरे, बल्कि पाचमे वरखमे भेलनि।

जखन माय हमर गाम अएलीह तकर किछुए दिनक बाद हमर काकी अर्थात माय केर जेठ देयादनी अपन नैहर चलि गेलीह। नैहरमे भाय नहि छलनि ताहि

नवासा पर गेल छलीह। ओतहि बैसि गेलीह। पिता पहिने स्कूल, बादमे खादी भंडारमे नौकरी कऽ लेलनि। माय गाम पर असगर रहैत छलीह। हमर पितामह बुढ आ रुग्न छलाह। गरीबी चरम सीमा पर छलनि। माय हमर चरखा काटब सिख गेल छलीह। घरक काज आ भोजन बना लेबाक बाद दिन भरि अम्बर चरखा कटैत छलीह। जखन पिता गाम अबैत छलाह तँ ओहो चरखा कटैत छलाह। दुरागमन केर तेसर वर्षमे हमर बड़की बहिन केर जन्म भऽ गेल छलनि। हमर पितामह रुग्न होइत रहलाह। सुइद बला महाजन सभ बहुत तंग करय लगलनि। बलपूर्वक सम्पति, खेत पथार सभ लिखा लेलकनि। हमर पितामह नहि चाहैत छलाह जे हमर पित्ती अर्थात हुनक प्रथम पुत्र रघु बाबू अपन सासुरमे रहथि। मुदा हमर पितामह केर बात रघु बाबू नहि सुनलथिन। तामस सँ भेर हमर पितामह कहलथिन: "जाऊ! अहाँ सँ हमरा आगि नहि लिखल अछि।"

ताहि समय लोक हमर पितामहक बातकेँ गंभीरता सँ नहि लेलक। किछु दिन बाद हमर पितामह बीमार भेलाह। स्थिति गंभीर भेल गेलनि। लोक हमरा पित्तीकेँ जानकारी देलकनि। पित्ती आबि गेलाह। दोसर दिन सँ हमर पितामह ठीक होबऽ लगलाह। पाँच दिनमे पूर्ण स्वस्थ भऽ गेलाह। रघु बाबू आठ दिन रहलाह आ तकर बाद हमर पितामह सँ आज्ञा लैत अपन सासुर भुसकौल लेल बिदा भेलाह। मधुबनी सँ रेल पकड़बाक छलनि। हुनका गेलाक थोड़बे कालक बाद हमर पितामह हमर पिता आ मायके अपना लग बजा कहय लगलथिन: "सुनू! आब हम किछु घंटामे मरि जाएब। अहाँ सब चिंता नहि करब। सभ गरीबी दूर भऽ जायेत। हम भगवान सँ अहाँ सभक कल्याण लेल प्रार्थना करब। लेकिन तीन बात पर ध्यान देब:

- पहिल, ई डीह नागडीह अछि, ताहि कहियो कोनो साँपके नहि मारबैक। साँप कोनो तरहक हानि नहि करत।
- दोसर, रघु अंतमे अहीं सभ लग अएताह। अहाँ सभ हुनका कोनो तरहक अवहेलना नहि करब। हुनकर खूब स्वागत सत्कार होबाक चाही। से करब तँ हम स्वर्ग सँ प्रमुदित होइत आशीर्वाद दैत रहब।
- तेसर, कोनो अवस्थामे अहाँ सभ रघु बाबू केर नवासा बला सम्पति नहि लेब। अगर से लेब तँ विकास कुंठित भऽ जायत।"

उपरोक्त तीन निर्देशक बाद हमर पितामह कने काल लेल चुप भs गेलाह। थोड़े काल बाद हमर माय भोजन देलथिन। आधा सोहारी आ दूध खेलाकेँ बाद छोड़ि देलथिन। सभ किछु सामान्य छलैक। एकाएक हुनक मृत्यु भs गेलनि। रघु बाबू ताबेत भुसकौल गेलो नहि हेताह। आब की हो? हुनकर भविष्यवाणी सही भs गेलनि आ हमर पिता हमर पितामहके मुखाग्नि देलथिन।

जखन हमर पितामह स्वर्गवासी भेलाह ताहि समय हमर पिता बीस वर्षक रहथि। आर्थिक स्थिति भयावह। गामक लोक चंदा देलकनि तखन श्राद्ध सँपन्न भेलनि। पिताजी आब अपन करियर केर प्रति उत्साहित भेलाह। दरोगामे चयन भs गेलनि। अभिभावक केर नाम पर ससुर छलथिन। लगभग 50 टाका केर दरकार से रहनि। हमर पिता अप्वाइंटमेंट लेटर लेने उत्साहक चरमोत्कर्ष पर चढ़ैत अपन ससुर लग गेलाह। हमर मातामह चिट्ठी देखि हर्षित भेलथिन। किछु काल शांत रहलनि। फेरो बजलाह: “अहाँक भविष्य उज्ज्वल अछि। जेहन काज करब तेहने सँस्कार अहाँक बाल बच्चा पर होयत। पुलिस केर नौकरी ठीक नहि। ई सभ वादी आ प्रतिवादी दुनू सँ घुस लैत अछि। ताहि अहाँ पुलिस केर नौकरी नहि ज्वाइन करी ई हमर आग्रह अछि। ओना अहाँक सभ निर्णय केर हम सम्मान करब आ सतत अहंक सँग रहब।”

हमर मातामहक बात सँ हमर पिता बहुत प्रभावित तँ नहि भेलाह। से उचितो छलनि कारण ताहि समय हुनक आर्थिक स्थिति अनुकूल नहि छलनि तथापि अतेक सँस्कार तँ अवश्य छलनि जे जेठ श्रेष्ठक बात अंततः कल्याणकारी सिद्ध हेतनि, अपनाकेँ खादी ग्रामोद्योग सँसथानक नौकरीमे केंद्रित केलाह।

समय बितैत रहलैक। हमर माता पिता समवेत रुपें अथक परिश्रम करैत भूमिहीन सँ किछु खेती हेतु खेत, किछु कलम गाछी, बाँस आदि लेल अर्जित केलनि। घर से बनेलाह। हमर दुनू बहिनक सामान्य शिक्षा, अपना सँ पैघ परिवार आ सुयोग्य बर सँ विवाह, हमर दुनु भाई केर उच्च शिक्षा आदिक व्यवस्था केलनि। हमर पिताक विकास यात्रा अनुपम छलनि - करिया सँ कारी, कारी सँ कारी बाबू, कारी बाबू सँ रामनन्दन जी, रामनन्दन जी सँ मैनेजर साहेब, मैनेजर साहेब सँ मंत्री जी। आ ताहि सफलतामे हमर माय केर भूमिका अपूर्व छलनि।

बातकेँ अपना परिवार सँ आगा लऽ चली। माय हमर बहुत गुणी छलीह। शरीर केर अंगमे केहनो घाव हो ओकरा देशी इलाज सँ ठीक कऽ दैत छलीह। देशी चिकित्सा आ उपचार केर बेजोड़ ज्ञान छलनि। मधुश्रावणी कथा बहुत नाटकीय ढंग सँ अभिनय सँग वाचन करैत छलीह। लोक कल्याण लेल सदैव तत्पर रहैत छलीह। कतेक प्रसवितासँ हमर माय कष्ट दूर केलनि। कतेक महिलाकेँ डॉक्टर कहने रहैक जे ऑपरेशन सँ बच्चा हेतैक तकरा हमर माय अपन कला सँ सामान्य बच्चा उत्पन्न करा दैत छलीह।

एक प्रकरण स्मरण आबि रहल अछि। एक दिन बेनीपट्टी दिस सँ एक महिला प्रसव पीड़ा सँ परेशान भेल मधुबनी जा रहलि छलीह। रिक्शामे ओहि महिला सँग हुनक पति सँग छलथिन। पति सेनामे काज करैत छलाह। हमरा घर लग अबैत अबैत प्रसव वेदना बहुत बढ़ि गेलनि। हुनकर पतिकेँ भेलनि जे आब बच्चा भऽ जेतनि अथवा प्राण चलि जेतनि। महिला प्रसव वेदनाक अधिकता सँ छरपटा रहल छलीह। हुनकर पति किंकर्तव्यविमूढ भेल हमर दियाद केर दरबज्जा दिस आबय लगलाह।

रिक्शाकेँ रोकैत हमर बाबी अर्थात हमर पिताक पितियाइनकेँ अपन व्यथा आ विवशता बतबैत कहलथिन जे कोनो उपाय करू।

हमर बाबी उत्तर देलथिन: "सुनू, हमर एक पुतोहू छथि। हुनका सँ सभ किछु सँभव अछि। हुनकर घर पाछामे छनि। अहाँ हुनका लग जाऊ आ बिना हमर नाम लेने अपन बात कहि हुनका सँ एकर समाधान केर उपाय सोचु। ई अवश्य ध्यान राखब जे हमर नामक जाकारी हुनका नहि हो जे हमरे कहला पर अहाँ हुनका लग गेल छी। अहाँक काज ओ कऽ देतीह।"

अतेक बात सुनिते ओ व्यक्ति हमर माय लग गेलाह। अपन समस्या हमर मायकेऽ कहलथिन। हमर माय जखन हुनक पत्नी केर स्थिति देखलनि तँ द्रवित भऽ गेलीह। तुरत रिक्शा सँ उतारि ओहि महिलाकेँ अपन घर लऽ गेलीह। एक दू आरो महिला सभकेँ बजा लेलनि। आब माय हमर नर्स केर काज करय लगलीह। ओहि महिला आ पुरुष सँ हुनका लोकनि केर जाति, धर्म, कुल, गोत्र, गाम किछु ने पुछलथिन। अपना काजमे लागल रहलनि। पौन घंटा धरि प्रसव वेदना केर बाद ओ

महिला एक सुन्दर बुच्ची केर जन्म देलीह। सभ काज हमर माय केर निर्देशनमे भऽ रहल छलनि। इ सामान्य डिलीवरी रहैक। बच्ची केर माता पिता दुनू प्रसन्न।

आब हमर माय ओहि महिलाकेँ छ दिन धरि अपना घरमे रखली। सभ व्यवस्था केलनि। सातम दिन जेना माय अपन बेटीके नैहर सँ सासुर बिदा करैत अछि तहिना नव नुआ, बलौज, सिंदूर, टिकुली सँग आ हुनक पतिकेँ ललका धोती पहिरा बिदा केलनि। ओ दुनू प्राणी प्रेमक नोर सँ सरोबोर रहथि।

किछु दिनक बाद ओहि महिलाक पति हमर दरबज्जा पर आयल छलाह। माय लेल एक जोड़ी नुआ, मिठाई किछु टाका अनने छलाह। माय मिठाई ल' लेलथिन आ कहलथिन: "हम एखन नुआ नहि लेब। जहिया एहि बुच्ची केर विवाह करब तहिया हमरा अपना ओतय लऽ चलब। हम ताहि समय पहिरब अहाँक देल नुआ आ एकर कन्यादान हम करब अपना हाथे।"

ओ आगंतुक चुप भऽ गेलाह। मुदा ताहि दिनक बाद जहिया ओ सभ गाम आबथि तँ पहिने हमर घर अबैत छलाह। स्नान, ध्यान भोजन केलाक बाद आ माय सँ भरि इच्छा बात केलाक बाद अपन गाम जाइत छलाह।

जखन ओहि लड़की केर विवाह तय भेलैक ताहि समय ओ फेरो हमरा ओतय मायकेँ नौत हकार देमय आयल छलाह। सँयोग सँ हमर पिता सेहो गाम पर छलाह। हमर माय आ पिता ओहि विवाहमे गेलाह। माय हुनकर देल नव नुआ पहिर ओहि लड़की केर कन्यादान केलनि। चतुर्थीक बाद पिताजी सँग माय गाम अएलीह।

एहन छलीह हमर माय। हुनक सभ प्रसँग पर अनेक पोथी बनि सकैत अछि। एखन अतबे।

15

लेटर बम

हमर गाम अरेड़मे एक भेलाह लेटर मुखिया। जेना नाम स्पष्ट करैत अछि लेटर जाति सँ मलाह छलाह। लेटर अरेड़ गाममे लेटर बम केर नाम सँ जानल जाइत छलाह। हम हुनक पच्चास बरखक अवस्थाक आइ स्मरण करैत हुनका सम्बन्धमे किछु लिख रहल छी। लेटर कोनो किम्बदन्ति नहि यथार्थ छलाह। लेटर केर व्यक्तित्व आ व्यवहार हुनका भीड़ सँ अलग ठाढ़ करैत छलनि। लेटर हृष्ठ पुष्ठ लोक छलाह। मध्यम उँचाई, उन्नत छाती, रोड़गर जाँघ, हरौती बाँसक फट्ठा सन भुजा, छोट आंखि, पहलमानी केर कारणे हुनक पैघ कान गछही जिलेबी जकाँ कुकरा गेल छलनि। गहुमी चाम लगातार पानि गिजला, घूर तपला, अखाडा केर माटि रगड़ला सँ कने स्याह भऽ गेल छलनि। अर्थ ई भेल जे लेटर सही अर्थ मे धरती पुत्र छलाह। लेटर अपन जीविका माछ फसाकऽ करैत छलाह। यद्यपि ओ माछ परंपरागत ढंग सँ जाल अथवा महाजाल खसा नहि मारैत छलाह। लेटर गामे-गामे जाकऽ सेहो पोखरि अथवा जलकरमे माछ नहि मारैत छलाह। तखन कोना मारैत छलाह माछ लेटर?

लेटर नवका पोखरि केर अंतिम छोड़ अर्थात उत्तर दिशा दिश जतय चौरीक पानि खेत सँ पोखरिमे प्रवेश करैत छल ततय दुनू कात आड़ि बना पानि उपछि ओहिमे सरैला लगा कऽ मारैत छलाह। माछ सबकेँ आकर्षित करबा लेल भूजल तीसीकेँ गुर्री, गहुमक चिक्कस इत्यादि छिट दैत छलथिन्ह जकर सुगंध सँ माछ सभ छरपि-छरपि कऽ उपछल हिस्सामे आबि जैत छलैक जकरा एक निश्चित अंतरालक बाद लेटर पकड़ि लैत छलाह। माछ ओ सामान्यतया रातिमे अधिक मारैत छलाह। नवका पोखरिक ओ हिस्सा बड़ भुताह रहैक। जतेक लोक मरैत छल तकर कर्म ओतहि होइत छलैक। जुआन जहान लोकक आत्मा भुत-प्रेत-पिशाच भेल भटकैत रहैत छलैक। लोक सभकेँ तंग करैक। किछु लोकक कहब रहैक जे

अन्हरिया रातिमे विचित्र आवाज अबैक ओहि क्षेत्र सँ! ऊपर सँ पोखरिक भीड़ पर ओतय दुटा दैताकार जामुन आ पाखरि केर गाछ रहेक।

ई सभ चीज नवका पोखरिक ओहि कातक भीड़कें भयावह बना देने रहैक। पोखरिक दू भागक भीड़ पर झमटगर खअर लागल रहैक। गहन खअरक बीच नाना तरहक जीवक वास रहैक। अनेक तरहक साँप तँ रहबे करैक। साँपोंमे पनिया दरार साँप लोक मान्यताक अनुसारे सभ सँ भयावह। लोकक कथन तँ ई रहैक जे पनिया दरार साँप केर डसल कियोक नहि बचि सकैत अछि! की होइत छैक ई पनिया दरार साँप? हमर माय कहैत छलीह, "जे गहुमन साँप बहुत जुआ जाइत छैक से सुखल धरती छोड़ि पानिमे प्रवेश कऽ जाइत छैक। पानि आ पानिक सटल धरती पर घुमैत रहैत छैक पनिया दरार। पनिया दरार साँप यद्यपि मनुखकें नहि डसऽ चाहैत छैक मुदा कोनो कारण अथवा साँपकें ई भय भऽ जाइक जे कोनो मनुख ओकर जान लऽ सकैत छैक तँ ओ हबकि कऽ डसि लैत छैक। एक बेर डसि लेलकैक तँ ओहि व्यक्ति केर मृत्यु निश्चित।"

ऊपर सँ किछु लोकक मानब रहैक जे किछु भूत-प्रेत सेहो पनिया दरारक रूप धारण कऽ लोककें असगरमे काटि लैत छलैक। ऊपर सँ तीन बच्चा नवका पोखरिक घाट सँ नहाय काल डुबि कऽ मरि गेल रहैक। लोकक कहब रहैक जे ओहि बच्चा सभकें भूत-प्रेत गरदनि पानिक भीतर मड़ोरि देलकैक। आ सभक आत्मा जामुन आ पाखरिक गाछक अगल-बगल भटकैत रहैत छैक। ताहिं रातिक बाते छोड़ू दुपहरियामे सेहो स्त्रीगन सभ छोट-छोट नेनाकें ओहि स्थान पर असगर नहि जाय दैत छलथिन्ह।

मुदा लेटरकें जिनका लोक लेटर मुखिया नहि बल्कि लेटर बम सँ संबोधित करैत छलनि। अहि भ्रम, भूत, प्रेत, साँप आदि सँ कोनो डर-भय नहि छलनि। लेटर तँ लेटर छलाह - मस्त मौला। कहियो इनार अथवा कल केर जल नहि अपितु पोखरिक पानि दुनू आँजुर सँ "जय कमलेसरी" केर नारा लगबैत पीबैत छलाह। तमाकुल आ गाजा केर चिलम केर खूब सौख छलनि लेटर बमकें। लेटर बम चिलम पिबय सँ पहिने घेट साफ़ करैत बजैत छलाह:

“जे सभ करय अदखोई बदखोई
टकरा वंशमे रहय न कोई।”

जखन चिलम केर धौक लऽ लैत छलाह तँ बजैत छलाह, “हर हर महादेब। बाबा सभक रक्षा करू। हे भोला दानी।”

अनेक बेर साँप डसने हेतनि मुदा कहियो डॉक्टर, वैद्य अथवा कोनो गुणी लग नहि गेलाह। अपन चिलम केर बाचल छाउर जकरा ओ विभूत कहैत छलाह आ किछु स्थानीय घासक रस निचोड़ि काटल स्थान पर लगा लैत छलाह। माछ, रोटी, भात इत्यादि यैह हुनक जीवन छलनि।

गाम घरक भाषामे कही तँ लेटर बम कने टेटियाह लोक छलाह। घर चलेबा लेल धन कटनी, रोपनी, हर जोताई आदिक काज सेहो करैत छलाह। अपन कार्यमे प्रवीण आ पित्तमरु लोक छलाह। लेटर बम हमर पिताक संगतुरिया रहथि। कहबाक तात्पर्य भेल जे मोटा मोटी 1934–35 ईस्वी केर आस-पास जन्म भेल हेतनि। हुनक वस्त्र न्युनतम छलनि - तीन जोड़ी लंगौटा, एक सामान्य झलफल्ली ललका तौनी आ उघार देह। जार मासमे एक कंबल ओढैत छलाह। जतय माछ मारैत छलाह ततय चौबीस घंटा घूर जरबैत छलाह। जाहि सँ हुनका सतत ऊष्मा भेटैत छलनि। हुनकर 32 दांत सदैव स्वस्थ्य आ चुन जकाँ उजर धप-धप करैत छलनि।

लेटर बम भोला बाबा केर परम भक्त छलाह। खूब प्राती, महेसबानी, नचारी आ अन्य भजन इत्यादि गबैत छलाह। कतेक गीतकेँ अपना हिसाबे शब्द इत्यादि जोड़ि तोड़ि गबैत छलाह। अतेक केलाक बादो कहियो भोला बाबा सँ अपना लेल नहि मंगैत छलाह। हुनक सोचब छलनि, "बाबा तँ स्वयं अग्रजानी छथि सभक बात, स्थिति आ मनोदशा बुझैत छथिन। हमरो बुझिते हेताह। फेर हम कियैक मांगी किछु? ओ स्वयं देताह।" परम संतोषी लोक छलाह लेटर बम। जतेक छलनि ततबेमे प्रसन्न रहैत छलाह। हमर गामक कुटी लेल प्रति दिन भोरे फुल तोरनाई आ साँझक भोग हेतु चौक आ हाट सँ दोकाने-दोकाने चंदा एकत्र करब से लेटर केर जिम्मेदारी छलनि। इहो काज ओ निष्काम भाव सँ करैत छलाह। लोककेँ लेटर केर

निष्ठा पर श्रधा छलैक। जेना स्मरण आबि रहल अछि लेटर बम केर एक बेटा केर नाम दिलीप छलनि। जखन दोसर बेटा भेलनि तँ हमर माय सँ कहलथिन्ह: "कैलाशक माय, हमरा बेटा भेल अछि, इच्छा भऽ रहल अछि हम एकर नाम कैलाश राखि दी?" उदारमना हमर माय कहलथिन्ह – "कियैक नहि! अवश्य राखू अपन बेटाक नाम कैलाश।" आ ताहि दिन लेटर बम केर बेटा कैलाश भऽ गेलनि। अहि घटना केर किछु वर्षक बाद एक दिन हमर पिता सँ कहलथिन्ह: "यौ कारी बाबू! आहूँ कारी। हमहुँ कारी। अहुँक बेटा कैलाश। हमरो बेटा कैलाश! हम सभ दुनू साँझ माछ भात खाइत छी। छै कोनो बभनामे सामर्थ्य जे सभ दिन दुनू साँझ माछ भात खाइत हो! यौ कारी बाबू, हम अहाँ सँ कोन बातमे कम!"

लेटर बम केर अहि निश्छल वार्ता सँ हमर पिता आनंदित होइत रहलाह। लेटर बम केर कहबाक शैलीमे कहियो घमंड नहि अपितु अल्हड़पनक बोध होइत छलनि जकरा लोक आनंद सँ स्वीकार करैत छल।

समाज केर रोल मॉडल हेबाक लेल जरुरी नहि जे बहुत पैघ बनी अथवा राष्ट्रिय आ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम स्थापित करी। अपन निश्छल व्यवहार, सत्य वचन, धर्मक आचरण, जन कल्याण केर भावना आदि छोट-छोट गुण सँ अहाँ रोल मॉडल बनि सकैत छी। लेटर मुखिया जी हमर गाम अरेड़मे लेटर बम नाम सँ ख्यात छलाह किछु एहने रोल मॉडल अपन गाम आ गामक लोक लेल छलाह। हुनक सम्बन्धमे एक बात कहब जरुरी अछि जे गामक एक पुरुषकेँ युवा अवस्थामे अबिते कुष्ट रोग भऽ गेलनि। हुनका लग गामक लोक नहि उठैत बैसैत छल। मुदा लेटर बम सदैव हुनका अपना लग बैसबैत छलाह। हुनक सेवा करैत छलाह। आर तँ आर अपन भोजनमे सँ हुनको देत छलाह। आर त आर जखन ओ कुष्ट रोगी मरलाह तखन गामक किछुए लोक हुनक दाह संस्कारमे भाग लेने छलथि जाहिमे लेटर बम सेहो छलाह। अनेक प्रसंग अछि लेटर बम केर जीवन केर। लेटर बम करीब सत्तर वर्ष केर अवस्थामे अपन नश्वर शरीरक त्याग केलनि। अगर स्वर्गक कल्पना सत्य छैक तँ हुनका अवश्य स्वर्ग भेटल हेतनि। लेटर बमक प्रति हम अपन विनम्र श्रधांजलि अर्पित करैत छी।

16

मायक अदम्य साहस

यदा कदामे एक डेग आओरो आगा बढैत छी। बात माय केर करैत छलहुँ। एक मित्र लिखने छथि जे सभ माय महान आ करूणामयी होइत छथि। हम एहि मित्र महाशय केर बात सँ सहमत छी। अनुभव अपन मायक लिख रहल छी, अतए मायक उल्लेख तँ स्वाभाविक छैक। मायक प्रसंग केर अनेक आयाम छैक। पता नै कतेक दिन लागि जायत सभ आयाम केर विस्तार सँ लिखबामे। दू टा बड्ड प्रेरक प्रसंग छैक जे मायक अदम्य साहस आ निर्णय क्षमताके दर्शाबैत अछि। दुनू प्रसंगकेँ संबंध बिढनी केर छत्ता आ मनुख द्वारा तंग कएल जाए पर बिढनीक उत्पात सँ अछि। एहि स्थितिमे माय केर निर्णय आ अदम्य साहस केर जतेक प्रशंसा करी से थोड़ अछि।

प्रथम प्रसंग तखनकेँ अछि जखन हमर पिताजी वर्तमान झारखंडक लोहरदगा जिला केर सेन्हा नामक जगहमे खादी भंडारमे व्यवस्थापक छलाह। सेन्हा प्रखंड स्तरक छोट सन कस्बा छल। ओकर चारू दिस नदी, जंगल छल आ आदिवासी समुदायक छोट पैघ गाम। ओहि गाम सभक जनजातिक कल्याणक लेल पिताजी हुनकर महिला सभकेँ खादी वस्त्र आ सूत बनेबाक व्यवसायमे लगबैत छलाह। सेन्हामे माय सेहो आएलि छलीह। माय आदिवासी महिला सभ सँग घुलिमिलि गेल छलीह। हुनकर सुख-दुःखकेँ बुझैत छलीह, अनुभव करैत छलीह। हम छोट छलहुँ। तइयो कहियो-कहियो साइकिल पर चढ़ि कऽ खादी भंडारक कार्यकर्त्ता सँग ओहि आदिवासी गाम सभमे जाइत छलहुँ। गामक लोक निश्छलता सँ हमर स्वागत करैत छल। खेतक अन्न, फल, हरियर तरकारी, अंडा आदि दैत छल। स्वभावमे प्रकृति केर समीप छल ओ समुदाय। ओतऽ केर लोककेँ अपन प्रति प्रेम जखन आजुक समयमे देखैत छी तँ लागैत अछि जे कतेक प्रेम छलैक हुनकर मनमे हमरा सभ प्रति।

पिताजीक खादी भंडारमे एकटा सहयोगी छलाह श्री अनिरुद्ध लालदास। लालदास सेन्हामे अपन पत्नी, एकटा पुत्री आ दू टा पुत्र सँग रहैत छलाह। लालदास केर बेटी आ छोट पुत्र बड्ड चंचल छलनि। जानवर सभकेँ तंग करब, चिड़ै चुनमुनक खोंता तोड़ब, मुसाफिरके परेशान करब किछु एहेन कृत्य छलैक जाहिमे हुनका सभकेँ अत्यधिक आनंद भेटैत छलनि। लालदास महाशय केर विवाहक बहुत दिन बाद बच्चा भेल छलनि, एहि कारण दुनू पति पत्नी बहसा देने छलथिन आ कोनो गलती अथवा अभद्रता लेल किछु नहि कहैत छलथिन। परिणाम ई भेलनि जे बच्चा बदतमीजी केर सभ सीमाक अतिक्रमण कऽ चुकल छलनि। हमर माय श्रीमती लालदासकेँ कतेक बेर समझेबाक प्रयास केलनि, मुदा बेकार।

एक बेर लालदास महाशय संथागत कार्य सँ रांची एक सप्ताहक लेल गेल छलाह। घर पर पत्नी आ बच्चा रहि गेल छलनि। एक दिन हुनकर घरक सोझामे एक अति विशालकाय झमटगर गाछ रहैक। ओहि गाछ सभ लग पहाड़ी भूमि पर माटिमे बिल बना जंगली बिढनीक झुण्ड अपन छत्ता भीतरमे बनौने छल। बहुत पैघ छत्ता। ई पहाड़ी बिढनी एक प्रकारक मधुमाछी होइत अछि जकरा सँ प्रचुर मात्रामे औषधि लेल प्रयुक्त उत्तम क्वालिटी केर मधु भेटैत छैक मुदा मधु निकालब सभक वशमे नहि छैक। किछु घुमक्कर समुदाय आ आदिवासी समाज केर लोक जानक जोखिम लैत स्थानीय तकनिकी केर सहायता सँ मधु निकालि लैत अछि। मुदा एहन मधुमखी बहुत खतरनाक होइत छैक। अहाँ एकरा किछु तरह सँ परेशान नहि करब तँ ई अहाँक मित्र अछि। जँ अहाँ एकरा छेडब तँ फेर ई जिनाइ दूभर कऽ सकैत अछि। एक संग झुंडमे प्रहार करैत छैक। एकर डंक दर्दनाक आ विष होइत छैक।

लालदास महाशय केर छोट पुत्र आ पुत्री ओतऽ जाकऽ बीढनीकेँ छेड़नाए शुरू कऽ देलक। पुत्र तँ बदतमीजीक सभ सीमाक लांघैत बीढनीक बिलक भीतर बला छता पर मूत्र त्याग शुरू कऽ देलक। फेर की छल, एहि व्यवहार सँ क्रुद्ध होइत एक संग हजारोक संख्यामे बीढनी आक्रमण क देलक। दनादन काटय लगलैक। ई दुनू भाई बहिन आब बीढनीक डंकक दर्द आ अप्रत्याशित आतंक सँ छटपटाइत अपन घरक दिश भागऽ लागल। बीढनी एखनो पाछा करब नहि छोड़लकैक। घर पर

श्रीमती लालदास बैसल छलीह। बीढनीक झुण्ड तीनूकेँ डंक मारनाए शुरू कए देलक। ओ सभ डंकक दर्द सँ कराहए लागल। असहाय होइत भुइयाँ पर लोटऽ लागल। लोक सड़क पर चलनाए छोड़ि देलक। बीढनीक झुण्ड अपन प्रतिशोध क्रूरतापूर्वक लऽ रहल छल। बदतमीज संतानक कुकृत्यक फल माय सेहो झेल रहलि छलीह। हमर निवास सँ लालदास महाशयक निवास लगभग आधा किलोमीटर पर छलनि। कियोक हमरा माय लग जा हुनका सभ बातक सूचना देलकनि। मुदा ककरोमे ई हिम्मत नहि छलैक जे अपन जानक खतरा लऽकऽ जीवन आ मृत्यु सँ जुझैत माय, पुत्र आ पुत्रीकेँ प्राणक रक्षा कऽ सकै। संयोग सँ हमर पिताजी सेहो लोहरदगा गेल छलाह। माय किछु लोक सँ निवेदन केलनि, मुदा कियो बचावक लेल नहि अएल। समय कम छल। मायकेँ निर्णय लेनाए छलनि। एकाएक माय उग्र रूप धारण केलनि। घरक भीतर प्रवेश करैत माय पांच कम्बल लऽ अनलीह। एक कम्बल सँ अपना आपकेँ झँपैत आगा बढली। हमरा लग अबिते एक कम्बल सँ हमरा झांपि देलनि। आब दू कम्बल अपन हाथमे लैत आ एक हमर हाथमे देत हमरा माय निर्देश देलनि जे हम हुनका संग-संग चली। हम बहुत छोट छलहुँ लगभग बारह वर्षक। हमरा लग दोसर कोनो उपाय नहि छल। जानैत छलहुँ जे मायक निर्णय अंतिम होइत छनि। एकरा कोनो तरहेँ नहि टालल जा सकैत छल। हम अपन प्राणकेँ मायक चरणमे समर्पित करैत कम्बल लए मायक संग चलि पड़लहुँ। माय दौड़ल चलि रहलि छलीह जेना रणभूमिमे युद्धक शंखनाद भेला पर लड़ए लेल कोनो वीरांगना जाइत छथि। आ हम एक छोट सिपाहीक समान मायक पाछा चलि रहल छलहुँ। माय निर्देश सेहो दैत चलि रहल छलीह“ :देखु कैलाश, आंखिक अलावा कोनो अंग बाहर नहि निकालू। हम जेना-जेना कहने जायब अहाँ तहिना-तहिना अनुशरण करैत रहू"। हम दुनू माय बेटा जीवन आ मृत्यु सँ संघर्ष करैत लाल दास महोदय केर असहाय पत्नी आ बेटी आ बेटाक रक्षार्थ आबि गेल रही। तीनूकेँ कम्बल सँ झांपि देल। माय कहैत रहलनि: “एकरा सभकेँ अतए सँ बाहर करब परमावश्यक छैक कैलाश! हमर बात बुझि रहल छी ने बाऊ!” मायक चण्डिका स्वरुप देखि जेना हमरो मनक डर आ भय बिला गेल। हमरोमे अदम्य उत्साह आ उर्जाक संचार होमय लागल। हम अपन आयु सँ एकाएक बहुत

पैघ भऽ गेल रही। ओहिना-ओहिना मायक अनुशरण करैत रही जेना-जेना माय कहैत छलीह।

लालदास महाशयक घर आ आसपास ओहने चुप्पी रहैक जेना ककरो मृत्यु भेला केर बाद भऽ जाइत छैक। लालदासक छोट पुत्र मृतप्राय भऽ चुकल छलि। हुनकर पत्नी दर्द सँ कराहि रहल छलीह। पुत्री वेदना केर तीव्रता सँ इमहर-ओमहर भागि रहलि छलीह जे भ सकैत अछि जे जं कोनो बिधिये कियो बचाए लेतैक ई आशामे। मुदा बीढनीक झुण्ड सेहो तँ बौखलाएल छल। लगातार तीनूकेँ डंक पर डंक मारैत छल। हम कम्बल सँ धीरे सँ आँख निकालि ई वीभत्स दृश्य देखलहुँ तँ हमर होश उड़ि गेल। मुदा माय तँ अदम्य साहस सँ भरल छलीह। माय लागल रहली तीनू केर प्राण रक्षामे। सभ सँ पहिने लालदास महाशय केर छोट पुत्रकेँ कम्बल सँ ढकि देलथिन। आब लालदास महाशयकेँ घर आ आसपास सन्नाटा छायल छल। लालदासक छोट पुत्र मृतप्राय छलि। माय लागल रहली। सभ सँ पहिने लालदास महाशय केर छोट पुत्रकेँ कम्बल सँ ढकि देलथिन। आब बीढनीक झुण्ड माय पर सेहो प्रहार करए लागल। फेर माय लालदासक पुत्री आ अंतमे पत्नीकेँ कम्बल सँ झांपि देलथिन्ह। एतेक कालमे लगभग २५ डंक माय झेल गेलीह। १० डंक हमरा सेहो सहन करए पड़ल। अब हम सभ तीनूकेँ लए अपन आवासक तरफ भगलहुँ। बौखलाएल बीढनी एखनो हमरा सभकेँ नहि बख्शलक। घर आबि माय तुरंत केवाड़ लगा देलनि। किछु पुरान वस्त्रकेँ दू लाठीमे लपेट ओहिमे मटिया तेल बोरि ओकरा मशाल बना जरबैत बाहर निकललीह। किछु देरक बाद ई गंध सँ परास्त होइत बीढनी भागि गेल। अब मायक दिव्य भाल पर पर विजयी मुस्कान चमकए लागलनि। माय आब विजेता छलीह। हुनका ई भान होब लगलनि जेना ओ सभ सँ पैघ युद्ध जीत चुकल छलीह। मायकेँ तँ अपन चिंता नहिये छलनि, हमर बारेमे सेहो बहुत चिंतित नहि छलीह। हुनका केवल एहि बातक चिंता छलनि जे कहुना एहि तीनू केर जान बचि जाइक।

आब हमर माय खादी भंडारक एक कार्यकर्ताकेँ प्रखंड विकास पदाधिकारी लग जीप लेल भेजलीह। 2 मिनटमे गाड़ी आबि गेलैक। तीनूकेँ लए सदर अस्पताल लोहरदगा चलि गेलीह। तुरंत इलाज शुरू भऽ गेलैक। सभ कियोक मायक हिम्मत

सँ दंग छल। डॉक्टर सेहो कहैत रहैक जे जँ एतय आबयमे 10 मिनट केर देरी भऽ जाइत तँ तीनूकेँ बचनाइ असंभव छल। तीन दिन धरि अस्पतालमे रहक बाद लालदास महाशयकेँ पुत्र, पुत्री आ पत्नी सेन्हा वापस अएलनि। एहि घटनाक पांच दिन बाद अनिरुद्ध लालदास रांची सँ वापस आबि गेलाह। जखन हुनका ई बातक जानकारी भेलनि तँ सीधा हमर घर आबि गेलाह। हाथ जोड़ि कए मायक सामने ठाढ़ भऽ गेलाह। कहए लगलाह: "कैलाशक माय, जँ अहाँ नहि होइतहुँ तँ हमर तीनू लोक मरि गेल रहैत। अहाँमे ईश्वरक वास अछि। हम बच्चा सभकेँ प्यारमे बर्बाद कऽ देल। भगवान एकर फल देलनि अछि हमरा। अहाँ हमरा आ हमर बच्चा सभकेँ माफ़ कऽ दी।"

माय कहए लगलीह: "छोड़ू एहि बातकेँ। भगवानक शुक्र छैक जे तीनू बचि गेल। आगा सँ ई बातकेँ ध्यान राखू। ई कहैत माय नाश्ता आ चाय देलथिन। एहि घटनाक एक मास धरि एहि बातक चर्चा आ मायक हिम्मत केर कथा लोकक जुबान पर छल। मायक एहि अदम्य साहस आ बुद्धिमत्ताकेँ नमन।

17

गाम समाज: गामक अस्मिता आ स्वरूपक निर्धारण – सभक योगदानक प्रजातन्त्र

बात लोक आ संस्कृतिकेँ बुझबाक करैत रही। मिथिलाकेँ बुझबाक अछि तँ बिना लोकक किछु संभव नहि अछि। सभ व्यवस्था लोकमे व्याप्त अछि। ओकर संरचना आ तकर संपादन अर्थात क्रियान्वयन बहुत वैज्ञानिक ढंग सँ होइत आबि रहल अछि लोकक मादें।

लोकक अर्थ अगर कनि ध्यान सँ गहियाएब तँ लागत जे सभ सङ्गे चलबामे समर्थ हो। छुआछूत मिथिलामे छल आ गलत छल मुदा ओकर व्यवहार पक्ष ओतेक गलत नहि छल। ओहुना समाज आ ओकर व्यवहार तँ गतिशील-परिवर्तनशील होइत अछि। विज्ञानक कतेक नियम सोझे उलटि गेल ताहिं की विज्ञान पढ़नाइ छोड़ि देब? नहि, विज्ञानकेँ नव नियम सँग आगा बढ़ेबाक युक्ति करब। छुआछूत खत्म करक चाही छल। पुरखे अगर कs लेने रहितथि तँ अति उत्तम, नहि केलनि तँ हमर जेनरेशन अथवा ओहि सँ कनि पहिने अथवा बादक जेनरेश कएलक। जाहि सतीप्रथा केर कारण बंगाल आ भारतक अनेक क्षेत्र अपसियांत रहल। एहेन अमानवीय व्यवस्था जाहिमे एक स्त्रीकेँ हुनक मृत पतिक सँग हुनकरे चिता पर जिबते जड़ा देल जाइत छल। आ ई व्यवस्था 19म शताब्दी धरि चलैत रहल। राजाराम मोहन राय (22 मई 1773–27 सितंबर 1883) सनहक समाज सुधारककेँ आगा आबय पड़लनि। अँग्रेजी हुकूमतक सहयोग सँ कानून बना एकरा समाप्त कएल गेल।। राजाराम मोहन राय 1830 ईस्वीमे इंग्लैंड जाय लार्ड विलियम्स बैंटिंककेँ सतीप्रथा 1829 मे बन्द करबा हेतु धन्यवाद ज्ञापित करक हेतु एक प्रतिनिधि मंडल सँग गेलाह। मुदा व्यवहारमे नुका-चोरा कs ई बहुत दिन धरि चलैत रहल। रुकू! मिथिलामे ई व्याधि पसरय सँ पुर्वहि मरि गेल। से केना? उपलब्ध साक्ष्य प्रमाणित करैत अछि जे महाकवि विद्यापति ठाकुर पन्द्रहम

शताब्दीमे अपन गम्भीर निर्णयक परिचय दैत एहि प्रथाकेँ एक रुपेँ मिथिला सँ उखाड़ि देलाह। भेलैक ई जे महाराज पदम सिंह (1429–1430) अल्पायुमे बिना कोनो सखा संतानकेँ मरि गेलाह। आब हुनकर पत्नी महारानी विश्वास देवी ई निर्णय लेलनि जे ओ अपन मृत पतिक चिता पर हुनके सँग जरैत अपन एहि शरीरक अंत करतीह। अर्थ स्पष्ट छल जे महारानी विश्वास देवी सती होमऽ जा रहलि छलीह।

महारानी विश्वास देवी सती हेतिह ई बात कियोक महाकवि विद्यापतिकेँ कहि देलकनि। महाकवि गंभीर होइत तुरत एहि निर्णयक विरोध करबाक युक्ति करय लगलाह। जनता आ राजदरबारक लोक चुपचाप रानीकेँ विवश भेल नोराएल आँखिये देख रहल छल। ताबतेमे विद्यापति प्रवेश करैत छथि। रानी विश्वास देवी विद्यापतिकेँ कहैत छथिन: “नीक भेल जे अहाँ आबि गेलहुँ। ई जे हम पोसपुत्रकेँ राजकुमार घोषित केने छी से एखन बहुत छोट छथि। आब अहिँक अभिभावकत्वमे ई प्रशिक्षित हेताह। हमर चिंता खत्म भेल।”

विद्यापति बाजि उठलाह: “शोक कम करु महारानी। अहाँकेँ व्यक्तिगत शोक प्रकट करबाक अधिकार नहि अछि। ई उचित नहि।”

विश्वास देवी उत्तर दैत छथिन: “हम शोकमे नहि छी। हम तँ महाराज सँग चितामे जड़बाक हेतु उद्यत छी।”

विद्यापति बजलाह: “अहाँ अपन राज्य आ ई अबोध बालक राजकुमारकेँ छोड़ि एना नहि जा सकैत छी। हे देवी! ई बात शास्त्र सम्मत नहि अछि।”

विश्वास देवी: “चलि तँ महाराजो गेलाह।”

विद्यापति: “अपना आपकेँ स्थिर कएल जाओ, ई तँ विधक विधान छैक। अहिमे हम अहाँ किछु नहि कऽ सकैत छी। एहि धरती पर जकरा जतेक समय भेटलैक अछि ओ ओतबे दिन रहि सकैत अछि। अहाँकेँ भगवान राजक रक्षा हेतु रखने छथि।”

विश्वास देवी: “हम राजाक सँग जन्म जन्मांतर लेल बान्हल छी। हमर सँग जुनि छोड़ाबी।”

विद्यापति: “जिबैत रहि हुनक प्रजाक पालन करबक अर्थ भेल महाराज सँग रहब। लाश सँग ख़ाक भेने अहाँ कोना बुझैत छी जे अहाँ हुनका सँग रहब? आत्मघात जुनि करू।”

विश्वास देवी: “एकर मतलब की भेल – रानी भेनाई की पत्नी सँ पैघ बात भेलैक?”

विद्यापति: “अर्धांगिनीकेँ पतिक लाश सँग जरि जयबाक विधान कोनो शास्त्रमे नहि लिखल छैक। मनुख अलग-अलग कोखि सँ, अलग-अलग कारण सँ, अलग-अलग उद्देश्यक हेतु जन्म लैत अछि। मरण विधाता केर हाथमे छोड़ि दी। कर्तव्यक स्मरण करी हे देवी।”

विश्वास देवी: “कविवर, हम जीवित नहि रहि सकैत छी।”

विद्यापति: “अहि बालक राजकुमारक मुँह दिश कनि देखियौक हे माता। हिनका कियैक अबला बनबै चाहैत छी अहाँ! उठु, सौभाग्य चिन्ह महाराजकेँ समर्पित कए कुलक विधान पूर्ण करू।”

अतेक कहैत महाकवि बालक राजकुमारकेँ रानीक कोरामे राखि दैत छथिन। आ एहि तरहेँ मिथिला सँ लगभग ई परंपरा अपन शैशव काल केर समयमे भागि जाइत अछि। आ महारानी विश्वास देवी 1430 सँ 1442 ईस्वी धरि अपन राजधानी बिसौली मे स्थापित करैत राज-काजक संचालन कएलनि।

एहेन रहल अछि मिथिलाक लोक व्यवहार जे शास्त्र सँ विपरीत नहि मुदा शास्त्र सँ अलग अपन स्वायत्तता आ संप्रभुता बनने छल। एकर टुटब समाजक ढाँचाकेँ तहस-नहस करब भेल। मिथिलाक गाममे पब्लिक स्पेस आ पब्लिक स्फीयर केँ व्यवस्था अदौ सँ रहल अछि। जर्मनी केर फ़्रंकफ़र्ट स्कूलक थर्ड जेनरेशनक (एकर प्रारंभ कएल गेल मैक्स होर्खिमायर आ थिओडोर एडोर्नो महोदय द्वारा जकरा बाद मे हैबरमास महोदय बहुत परिपक्व कएलनि) विद्वान भेलाह जुरगेँ हेबरमास (Jurgen Haberman, 18 जून 1929 सँ आई धरि)। हुनक सोचब छनि जे प्रजातंत्र केर समय के पब्लिक स्पेस भेल पिज़्ज़ा हाल, कॉफ़ी होम आदि जाहिमे जयबाक हेतु, बैसबाक हेतु ककरो वर्ग विशेषक सदस्य भेनाइ

आवश्यक नहि। कियोक जा सकैत अछि। अपन पसंदक विषय आ समाज पर अपने सनहक लोक सँग बात कऽ सकैत अछि।

यद्यपि भारतीय समाजक संरचना देखैत लगैत अछि जे ई परंपरा भारतमे वैदिक काल सँ शुरू अछि। प्रजापति कँ दू पुत्री छनि: सभा आ समिति। सभा मे सभ जाति वर्ग आ लिंगक लोक आबि अपन बात कहि सकैत अछि।

ई परंपरा शास्त्र सँ लोकमे चलैत रहल अछि। मिथिलामे ई परंपरा गामक ब्रह्मस्थान, चौपाड़ि, बड़क गाछक छाहरि लग, भगताक थान आदि पर देखल जाइत रहल अछि। चौपाड़ि अथवा उपरवर्णित स्थान सभ पर कोनो व्यक्ति विशेषक स्वामित्व नहि रहैत छैक। अगर किनको जमीन पर रहबो कएल तँ ओ ओकर स्वामित्वक अहं नहि रखैत छथि। ओहि स्थान पर आबि सभकियोक - राजा-प्रजा, छोट-पैघ, स्त्रीगन-पुरुख एक रंग भऽ जाइत अछि। सभक बात सुनल जाइत छैक। सभ कियोक अपन बात कहबाक प्रजातंत्रमे रहैत अछि।

जेठरइयत, धामि सभ वर्गक होइत छल। ओकर ऑटोनॉमी पर कियोक कोनो व्यवधान नहि उत्पन्न करैत छल। काजक हिसाबे लोक जातिमे बटल छल। व्यवस्था बहुत व्यवस्थित संरचनाक माध्यम सँ आगा बढ़ि रहल छल।

मिथिलाक गाम सभ अपन विशेष संस्कार हेतु जानल जाइत छल। सभ जातिक आ वर्णक लोक अपना आपकँ ओहि संस्कार सँ जोड़ि लैत छल। सरिसभ-पाही गाम उदाहरण स्वरूप अदौ सँ ज्ञानक परंपरा आ संस्कृतिक नव मापदंड स्थापित करबा लेल जानल जाइत रहल अछि। एकठाम अतय जहाँ ब्राह्मण सभ शिक्षा जगतमे एक सँ एक कीर्तिमान स्थापित करैत रहलनि अछि, ओतहि अहि गामक लहेरी आ चूड़ीहारिन लाहक़ लहठीमे तीसीयाफुलक कलात्मक डिज़ाइन लेल विख्यात अछि। अतय केर एक जाति सुपाड़ी भंगबा हेतु अलगे तरहक सरौता बनबैत छथि। आर तँ आर किछु अनुष्ठान सँ जुड़ल परिधान जे अहि गामक मुसलमान दरजी बनबैत छथि से अपना आपमे विलक्षण। अयाची मिश्र, हुनकर 11 कट्ठाक बारी आ हुनक ककरो सँ याचना नहि करबाक प्रकृति जतबे ख्यात अछि ओहि सँ कनिकबो कम ख्यात ओहि चमाईन केर ई बात जे बिना सीधाकँ अयाचीक पत्नीक सोइरीमे हुनक पुत्र शंकरक जन्मकालक भूमिका आ फेर जखन

शंकरक पहिल अर्जित राशि भेटैत छैक तँ ओहि राशि सँ डबरा बना देब नहि लगैत अछि। जहिना अयाची मिश्र, शंकर मिश्रक यश अछि तहिना ओहि चमाइन केर।

मधुबनी ज़िलाक अरेड़ आ जरैल ई दू गाम अपन पहलमानीक इतिहास, खेलकुद आ भक्ति परम्परा हेतु ख्यात अछि। अहि दुनू गामक एथनो हिस्ट्री पर काज करब तँ लागत जे सभ जाति आ वर्णक कतेक उत्कृष्ट योगदान रहल छैक गामक एहि व्यक्तित्व निर्धारण करबामे। ई हमरा एक मानव विज्ञान केर विधार्थी होमक कारणे मिथिलाक गामक अपन प्रजातंत्र लगैत अछि। सभक अपन काज आ सभ कियोक अपन काजक क्रिया कलापमे मर्यादामे रहैत नूतन प्रयोग हेतु स्वतंत्र अछि। ककरो पर ककरो शोषण, दोहन अथवा अतिक्रमण नहि छैक -ने तन पर, ने मन पर आ ने काजक विधा पर। गामक नाम उत्कृष्ट करबमे सभक भूमिका छैक। ओहि भूमिकाकेँ गाममे रहि गामक लोक सँग सहभागी अवलोकन सँ सुक्ष्मता सँग देखबा सँ गुनबा सँ, ओकर संरचनाक ताना बाना बुझला सँ, सभ वर्गक भूमिका मैकेनिकल स्वरूप निहारला सँ बुझल जा सकैत अछि। अगर कियोक कोनो जाति अथवा परिवार धरि अपन शोध या अनुभवकेँ केन्द्रित करैत छथि तँ ई हुनकर शिक्षा, प्रशिक्षण, आ ओरिएंटेशन केर कमी छनि। गामक समग्रताकेँ बुझने बिना ओकर विशिष्टताक अध्ययन धानक ढेरी सँ अग्गब खखड़ा चुनब भेल। जे आई बहुत लोक कऽ रहल छथि। बातकेँ मौनीकेँ सिकी जकाँ एक-एक सिकी खड़केँ सुलझा-सुलझा कऽ एक-एक तह निकालि बुझेबाक अछि। अहिमे समय लागत मुदा ई मिथिलाक गाम आ ओकर संरचनात्मक आ व्यवहारिक स्वरूप पर अदौ सँ अबैत मान्यताकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि। एकरा मिथिलाक एथनो हिस्ट्री सँ जोड़ल जा सकैत अछि।

धन्यवाद ज्ञापन

हमर जाहि विषयमे विशेष शिक्षा अछि तकरा मानव शास्त्र कहल जाइत छैक। मानव शास्त्रमे क्षेत्र विषयक अथवा गामक विस्तृत अध्ययन ओहि समाजमे रहि कऽ करबाक परंपरा अथवा विधान रहल छैक। जे शोधकर्मी अध्ययन करैत छथि हुनका दू श्रेणीमे बाटल जाइत छनि:

- अदर्स अर्थात दोसर अथवा आन अथवा अनठिया जे ओहि समाज सँ नहि छथि।
- नेटिव अर्थात देशी अथवा स्थानीय अथवा लोकल, अथवा मूल।

हमर जे अरेड़ पर काज भऽ रहल अछि से दोसर श्रेणीमे अबैत अछि – नेटिव। नेटिव केर अपन अनेक गुण छैक जेना कि भाषा, परिवेश, लोक सभ किछु बुझल छैक ताहिं काज करब सहज आ प्रमाणिक होइत छैक। भाषा सीखब आ लोक सभ सँ परिचय पात करऽमे कोनो दिक्कत नहि होइत छैक। यद्यपि एकर सीमा सेहो छैक। नेटिव शोधकर्मी व्यक्ति, टोल, परिवार, समुदाय विशेषक प्रति पक्षपात कऽ सकैत अछि। “बहुत बात जनिते छी” ताहि मानसिकता सँ गंभीर तथ्य केर त्याग कऽ सकैत अछि, समय संग जे परिवर्तन भेलैक अछि ताहि पर गंभीर नहि रहि सकैत अछि, “काज भऽ जायेत, अपने गाम आ अपने लोक सभ तँ छथि” एहन भाव लेट लतीफ़ बना सकैत छैक। आरो बहुत रास समस्या सभ होइत छैक। मुदा नेटिव केर अपन चार्म छैक। हम ओकर सकारात्मक पक्ष केर सबल बनबैत काज प्रारम्भ केने छी जाहि पर गामक अनेक लोक अनेक तरहेँ हमरा सहयोग केने छथि। प्रमुख लोक छथि:

- श्री रामनंदन मिश्र
- श्रीमती शिवदुलारी देवी

- श्री जीवकांत मिश्र
- श्री ललित कुमार झा
- श्री राजेश कुमार झा
- श्री संजय कुमार झा
- डॉ. राजेश झा
- श्री लक्ष्मण झा
- श्री महेश्वर झा
- श्री जगदानंद झा "मनु"
- श्री शशिबोध मिश्र
- श्री नारायण मिश्र
- श्री मनीष आनंद (झा)

एहनो संभव अछि जे हम कतेक लोकक नाम बिसरि गेल होई। तमाम ज्ञात आ अज्ञात सूचनादाताक प्रति हम अपन कृतज्ञता व्यक्त करैत छी।

– डॉ कैलाश कुमार मिश्र